जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट : ग्यारहवां ग्रन्थ

जमनालालजी की डायरी

(१९१२ से १९१५)

प्रथम खण्ड

•

भूमिका

काकासाहब कालेलकर

१९६६

मुख्य विक्रेता

सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली

जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट : ग्यारहवां ग्रन्थ

जमनालालजी की डायरी

(१९१२ से १९१५)

प्रथम खण्ड

•

भूमिका

काकासाहब कालेलकर

रामकृष्ण बजाज

•

१९६६

मुख्य विक्रेता

सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली

संपादकीय

पूज्य पिताजी (श्री जमनालाल बजाज) संबंधी-साहित्य के प्रकाशन का कार्य जमनालाल-सेवा-ट्रस्ट की ओर से तेरह वर्ष पूर्व सन् १९५३ में प्रारंभ किया गया था। इस योजना के अंतर्गत अबतक कुल दस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें पत्र-व्यवहार-माला के ५ भाग, पिताजी के पूज्य बापू व विनोबाजी से हुए पत्र-व्यवहार, पिताजी के भाषणों व लेखों का संग्रह आदि प्रमुख हैं।

इस पुस्तक के साथ हम एक और माला 'जमनालालजी की डायरी' का श्रीगणेश कर रहे हैं। इसके प्रथम भाग में सन् १९१२ से सन् १९१५ तक की डायरी संकलित है। बीच में सन् १९१३ की डायरी नहीं मिली। सन १९१५ में २१ अप्रैल तक की ही डायरी लिखी हुई है।

इस माला के अंतर्गत आगे के खण्ड भी यथासंभव शीघ्र प्रकाशित होते रहेंगे।

पूज्य काकासाहब कालेलकर ने व्यस्त तथा अस्वस्थ होते हुए भी, पहले खंड की विस्तृत भूमिका लिखने की कृपा की इसके लिए हम उनके अत्यन्त आभारी हैं।

पुस्तक के आरम्भ में श्री रिषभदास रांका द्वारा लिखित 'प्रास्ताविक' से पाठकों को इन डायरियों की पृष्ठभूमि समझने में आसानी होगी। श्री रांकाजी का पिताजी से बहुत वर्षों तक संपर्क रहा था। उन्होंने पिताजी से काफी प्रेरणा पाई और उनके प्रति वह सदैव श्रद्धावान रहे।

हमें खुशी है कि इस पुस्तक का प्रकाशन पिताजी की पुण्यतिथि (११ फरवरी) पर हो रहा है। इसका श्रेय प्रमुख रूप से श्री रिषभदास रांका को है, जिन्होंने हमारे अनुरोध पर इसके संपादन में बहुत लगन और परिश्रम से योग दिया।

—संपादक

प्रास्ताविक

इस युग में महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यों में महत्त्वपूर्ण योगदान देनेवाले श्री जमनालाल बजाज के जीवन, कार्यों तथा विचारों पर सम्यक् रूप से प्रकाश डालने के लिए यह आवश्यक था कि हमारी नई पीढ़ी को आजादी की प्राप्ति के प्रयत्नों और कार्यों की उचित जानकारी मिले। जमनालालजी की प्रवृत्तियां गांधी-युग के अथवा आजादी प्राप्ति के इतिहास की महत्त्वपूर्ण कड़ियां हैं। अतः उनके विषय में जो साहित्य प्रकाशित हो रहा है, उसका ऐतिहासिक महत्त्व तो है ही, उसमें आत्म-विकास करनेवालों को प्रेरणा भी मिलती है। इसलिए जब 'जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट' की ओर से उनकी डायरियों के प्रकाशन की चर्चा चली तो मैंने उसमें स्वभावत. दिलचस्पी ली। जमनालालजी के जीवन का अध्ययन मेरे लिए अत्यन्त प्रिय और दिलचस्प विषय रहा है।

गांधी-युग के इतिहास पर प्रकाश डालने की दृष्टि से जैसे 'महादेवभाई की डायरी' एक उत्तम साधन है, वैसे ही जमनालालजी की डायरी भी उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसा मेरा विश्वास है। महात्माजी महादेवभाई व जमनालालजी को अपने दोनों हाथों की उपमा दिया करते थे, और उन दोनों के चले जाने से उन्हें लगता था, जैसे उनके दोनों हाथ चले गये। ऐसा बापू अक्सर कहा भी करते थे। बापू के इन दोनों मानस-पुत्रों की डायरियां प्रकाश में आ रही हैं, यह एक शुभ-संयोग ही समझना चाहिए।

यह बात सही है कि 'महादेवभाई की डायरी' विस्तार से लिखी गई है, और उससे महात्माजी के जीवन तथा विचारों पर विस्तृत प्रकाश पड़ता है। लेकिन जमनालालजी की डायरी संकेत रूप में लिखी होने पर भी महात्माजी के कार्यों तथा साथी कार्यकर्ताओं का परिचय पाने में बड़ी सहायक होती है।

जमनालालजी की जो डायरियां अभी उपलब्ध हैं, उनमें गांधीजी के सपर्क में आने के पहले की तो १९१२, १९१४ व १९१५ की ही मिल पाई है। उसमें भी १९१२ की तो पूरी मिलती है, १९१४ व १५ की कुछ अधूरी हैं।

जमनालालजी में एक बात मुख्य रूप से बचपन से ही दीख पड़ती थी और वह थी सत्सगति की तीव्र इच्छा। गांधीजी के सपर्क में आने के पहले भी उनका सज्जनों की सगति का तथा उनके जीवन का अच्छा उपयोग हो, इसलिए सत्कार्यों में योग देने का प्रयत्न चलता ही रहा और वैसा उल्लेख भी डायरी में मिलता है। सन् १९१२ से १९१५ तक के समय-समय के प्रथम खंड में गांधीजी के सपर्क में आने के पूर्व की गतिविधियां, जीवन, कार्यों तथा विचारों की झांकी मिलती है। इसे पढ़ने से उस समय के सामाजिक रीति-रिवाजों तथा समाज-सेवा-सबधी कार्यों, व्यापार-सबधी नीति, सत्सग की तीव्रता आदि की जमनालालजी विषयक जानकारी मिलती है। गांधीजी के सपर्क में आने के पहले उनके व्यक्तित्व के दर्शन भी उसमें होते हैं।

जमनालालजी के तत्कालीन जीवन और उनके व्यक्तित्व की झलक श्री घनश्यामदासजी बिड़ला के इस उल्लेख में मिलती है

"शायद १९१२ की बात है। बबई में मारवाड़ी पचायत-वाड़ी में विशिष्ट मारवाड़ियों का एक छोटा-सा समाज मत्रणा के लिए इकट्ठा हुआ था। बबई में एक मारवाड़ी विद्यालय की स्थापना का आयोजन हो रहा था। समाज के धनी और वृद्ध, सभी लोग उपस्थित थे। किन्तु किसीने स्कूली शिक्षा नहीं पाई थी। इसलिए उन्हें यह पता नहीं था कि क्या करना है। पर धन एकत्र करना है, यह तो सभी जानते थे। सभा में तरह-तरह के लोग थे। अप्रस्तुत बातें भी चलती थीं। विषयान्तर भी होता था। पर एक मनुष्य था, जो जब अपना मुह खोलता तो लोग उसे ध्यान से सुनते थे। मैंने भी उसे ध्यान से देखा। वह पुरुष नितान्त युवक था। पचीसी के इसी ओर ही। गौर वर्ण, स्थूल शरीर, गोल मुह, शरीर पर रेशमी कोट और सिर पर काश्मीरी काम की टोपी। खादी की तो उस समय किसीको कोई कल्पना भी नहीं थी। स्वदेशी की परिभाषा में उस समय जापानी कपड़ा

तक ग्राह्य नहीं माना जाता था । इसीसे युवक की वेश-भूषा के सारे कपड़े स्वदेशी नहीं थे । ठाट-बाट अमीराना था । चेहरे पर नजाकत थी, पर आंखों से सरलता और एक तरह की मैत्रीभावना टपकती थी । शिक्षित तो साधारण-सा ही मालूम होता था, पर बोल रहा था निर्भयता और पूरे आत्म-विश्वास के साथ, और वह लोगों को प्रभावित भी कर रहा था ।

"मैं तो उस नवयुवक से भी छोटा था, बीसी के इसी पार । पर मुझसे उमर में थोड़ा ही बड़ा यह युवक जिस आत्म-विश्वास, अनुभव और प्रभाव के साथ बोल रहा था, वह देखकर मुझे कुछ डाह-सी हुई । मैंने किसीसे पूछा कि यह युवक कौन है ? पता लगा कि इस नौजवान का नाम जमनालाल बजाज है । इस छोटी-सी उम्र में देहात में रहनेवाला एक साधारण शिक्षा-प्राप्त व्यक्ति सामाजिक कार्यों में इतनी लगन और सचाई से रस ले सकता है, यह जानकर कुछ आश्चर्य और कुछ कुतूहल हुआ । मुझे जानना चाहिए था कि गुदड़ी में भी लाल होते हैं । बस, वहीं से मेरा जमनालालजी से परिचय हुआ, और उनसे उस दिन से जो मैत्री हुई, वह फिर जमती ही गई ।"

जमनालालजी ने आगे चलकर गांधीजी के पुत्र के रूप में उनके सभी कामों की जिम्मेदारियां उठाकर सच्चे वारिस बनने का प्रयत्न किया । उनका गांधीजी के कामों में जो योग रहा, उसपर प्रकाश डालनेवाला साहित्य प्रकाशित अवश्य हुआ है, पर उन सबसे उनके पूर्व जीवन पर संपूर्ण प्रकाश नहीं पड़ता । इन डायरियों से उनके पूर्व जीवन, कार्यों और अंतरंग विचारों को समझने में अवश्य सहायता मिलेगी । पाठक जान सकेंगे कि गांधीजी के संपर्क में आने के पहले से ही जमनालालजी का व्यक्तित्व विकसित हो रहा था, जिसका आगे चलकर गांधीजी के संपर्क से विशेष विकास हुआ और उनकी शक्ति और बुद्धि का समाज एवं देश को अधिकाधिक लाभ मिला ।

उनके कार्यों का ठीक मूल्यांकन करने के लिए भारत और खासकर बंबई, महाराष्ट्र तथा उसके निकट के प्रदेशों में चलनेवाले शिक्षा-प्रसार के प्रयत्नों का और सामाजिक स्थिति का निरीक्षण उपयोगी होगा । बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में या उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम चरण में महाराष्ट्र,

बगाल, पजाब, उत्तर प्रदेश, मद्रास आदि प्रान्तो मे राजा राममोहनराय और उनके शिष्य, स्वामी दयानन्द तथा उनके अनुयायी, महाराष्ट्र मे लोकमान्य तिलक, आगरकर, गोखले आदि लोगो ने प्रारभ मे शिक्षा-प्रचार को ही प्रजा को जाग्रत करने का साधन मानकर शिक्षा-प्रसार पर जोर दिया था और अनेक शिक्षा-सस्थाओ की स्थापना की थी। जमनालालजी ने प्रारभ मे मारवाडी समाज मे शिक्षा-प्रसार तथा समाज-सुधारो के काम का श्रीगणेश करके राष्ट्र-सेवा के कार्य मे उसकी पूर्णाहुति की थी। वर्धा मे उन्होने १९१० मे मारवाडी छात्रालय की, १९१२ मे मारवाडी विद्यालय की तथा मारवाडी कन्या विद्यालय की स्थापना की। बबई मे १९१२ मे मारवाडी विद्यालय के लिए चन्दा किया और उसकी स्थापना भी की। उन्होने मारवाडी विद्यालय के चन्दे मे अपनी फर्म से ११,००० रु० का दान दिया। इसी दान के कारण सेठ रामगोपालजी, जो कारोबार मे उनके भागीदार थे, नाराज हो गये और फर्म से सबध विच्छेद कर लिया। इस समय जमनालालजी की उम्र सिर्फ २३ साल की थी। लेकिन उन्होने धीरज के साथ परिस्थिति का सामना किया और सारी जिम्मेदारी निभाई। उनकी निर्भयता और तेजस्विता के पग-पग पर दर्शन होते थे।

उन्हे श्री श्रीकृष्णदासजी जाजू व बिरदीचन्दजी पोद्दार जैसे मित्र मिले, जिनसे उनके उन सस्कारो को वृक्ष रूप मे फैलने मे सहायता मिली। जाजूजी वकालत पास कर वकालत के लिए वर्धा आये थे। उनमे सरकार्यों के प्रति प्रेम, सेवावृत्ति, राष्ट्रीय लगन व धार्मिकता थी। सत्य के प्रति निष्ठा और प्रामाणिकता उनमे सहज थी। बिरदीचन्दजी मे भी सद्वृत्तिया और धार्मिकता थी और वह वेदान्त मे विशेष रुचि लेते थे। इन तीनो मित्रो का मिलना-जुलना और समाज-सुधार तथा शिक्षा-वृद्धि के प्रयत्न मे योग देना आदि बाते इन डायरियो के पन्ने-पन्ने पर परिलक्षित होती हैं।

जमनालालजी सरकारी अफसरो से भी मिलते रहते थे और उन्होने कई अफसरो के साथ घनिष्ट सबध भी बनाये थे। उन्हे बहुत छोटी (१६ वर्ष की) उम्र मे आनरेरी मजिस्ट्रेट बनाया गया था और आगे चलकर वह रायबहादुर भी बने थे। प्रारभ मे वह राजनिष्ठ थे, लेकिन ज्यो-ज्यो देशभक्तो से सबध बढता गया, अफसरो के साथ कटु अनुभव आने लगा।

उन्हे हुआ मालूम कि उन संबंधों को किसी भी स्वाभिमानी व राष्ट्रीय हित की आकांक्षा रखनेवाले के लिए निभाना कठिन है। ये संबंध धीरे-धीरे घटते गये और उन्होंने आगे चलकर सरकारी उपाधि भी लौटा दी।

इन दिनों जमनालालजी का प्रमुख कार्य-क्षेत्र सामाजिक था और वह भी अधिकांश मे मारवाडी-समाज तक ही सीमित था। फिर भी उनमें व्यापकता थी और अन्य समाजों, जैसे मराठा-समाज, जैन-समाज तथा माहेश्वरी समाज के सेवाकार्यों में वह दिलचस्पी ही नही लेते थे, सहायता भी करते थे। मराठा बोर्डिंग, जैन बोर्डिंग, जैन श्राविकाश्रम, माहेश्वरी महासभा आदि संस्थाओं मे उन्होंने सहायता भी की और उनके कार्यों मे योग भी दिया।

स्त्री-शिक्षा तथा स्त्री-सुधार के कार्यों मे उनकी विशेष रुचि दिखाई पडती है। परदे के दुष्परिणामों से वह परिचित थे, इसलिए १९१२ मे मारवाडी कन्या विद्यालय की वर्धा मे स्थापना की। उनकी श्रद्धा थी कि मारवाडी समाज का सुधार हो और मारवाडी लोग धन का अपने समाज तथा जनता के हित मे उपयोग करके अपनी प्रतिष्ठा बढावे।

यद्यपि इन दिनों उनपर सनातनी विचारों का प्रभाव अधिक दिखाई देता था, क्योंकि उन दिनों मे जिन पडितों से उनका विशेष संपर्क हुआ था, उनमे सनातनी विचारों के ही व्यक्ति अधिक थे, पर वे पडित भी यह तो चाहते ही थे कि समाज मे शिक्षा का प्रसार हो। इसलिए बंबई के मारवाडी विद्यालय की स्थापना मे प० दीनदयालुजी शर्मा व नेकीरामजी शर्मा का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। प० दीनदयालुजी सुप्रसिद्ध व्याख्याता थे और उनका मारवाडी समाज पर अच्छा प्रभाव था। इन्ही दिनों प० अमृतलालजी चक्रवर्ती से भी संपर्क आया, जो बंगाल के प्रसिद्ध राजनैतिक कार्यकर्ता थे।

उनका मुख्य कार्य व्यापार होते हुए भी जब वह बंबई आते तो सामाजिक कार्यों की चर्चा, योजना और काम साथ-साथ चलते ही रहते। जमनालालजी अपने मित्रों को भी सेवा-कार्यों की प्रेरणा देते और उनसे दान लेते थे। बंबई मे बिड़ला-बन्धु विशेषकर रामेश्वरजी व घनश्यामदासजी, -परिवार, पित्ती, दाणी, डागा, नेवटिया, पोद्दार, नेमाणी आदि के ोग से मारवाडी विद्यालय की स्थापना हुई थी। मारवाडी वाचनालय

उन्होंने व्यापार मे मित्रों का अमित सहयोग पाया। उन्होंने केवल अपने व्यापार का ही विकास नही किया, मित्रों के व्यापार को भी लाभ पहुंचाने का प्रयास किया।

भले ही जमनालालजी की पढ़ाई स्कूल में अधिक न हुई हो, पर उनके शिक्षा-प्राप्ति के प्रयत्न चलते हुए दिखाई देते हैं। वह "भणियां नही, पर गुणिया" थे, जिसका दर्शन उनकी डायरी मे पग-पग पर होता है। भले ही ये डायरियां सविस्तर न हों, उनमे संकेत मात्र हो, पर वे निस्सन्देह प्रेरणा-दायक हैं। मुझ-जैसे उनके जीवन के अभ्यासी के लिए तो उनके जीवन पर प्रकाश डालनेवाली महत्त्वपूर्ण कड़ी मालूम देती है। डायरी पढ़ने पर मैंने उनमे जो दिलचस्पी दिखाई, उसके कारण भाई रामकृष्णजी ने उसके सम्पादन के कार्य मे मेरी मदद चाही। अपनी रुचि का काम होने की वजह से मैंने उसे बड़ी खुशी के साथ स्वीकार कर लिया। इस निमित्त से जमना-लालजी के पूर्व जीवन का जो अध्ययन हुआ, वह मेरे लिए अत्यन्त महत्त्व-पूर्ण है।

—रिषभदास रांका

भूमिका

सूक्ष्म रूप से देखा जाय तो पता चलेगा कि साहित्य का प्रादुर्भाव संभाषण से हुआ है। बोलनेवाले जब अनुभवी और संस्कारी होते हैं, तब उनके संभाषण के बीच-बीच कहावतें तैयार हो जाती हैं। कहावतों का स्वरूप 'टकसाली सिक्कों' जैसा होता है। गहरे अनुभव, आकर्षक विचार और प्रभावशाली भाषा के कारण लोग कहावतों को कंठ कर लेते हैं और एक मुंह से दूसरे मुंह उनका प्रचार चलता रहता है। दरअसल कहावतों को कण्ठ करने का कोई प्रयास भी नहीं करता, कहावतें अपने आप ही कण्ठ हो जाती हैं।

जिन वचनों का स्वरूप आकर्षक होने के कारण वे कण्ठ हो जाते हैं, उनमें धीरे-धीरे भाषा का लालित्य आ जाता है और अपने ही आप उनकी छन्दोमयी वाणी बन जाती है। मैं मानता हूं कि कविता का उद्गम इसी तरह कहावतों में से ही हुआ होगा। फिर छन्दोमयी वाणी में गेयता होने से उसीका आकर्षण बढ़ता है और लोग सब तरह की कथाएं और प्रभावशाली प्रवचन भी कविता में लिखने लगते हैं। प्राचीन साहित्य में ये दोनों प्रकार, गद्य और पद्य, पाये जाते हैं।

कहावतों के बाद आती हैं कथाएं, मसलन ईसप की कथाएं, पंचतंत्र, हितोपदेश आदि। बादशाह-बीरबल की कथाएं तथा तेनाली रामन की कथाएं भी इसी कोटि की हैं।

कथाओं का विस्तार बढ़ने से बड़े-बड़े प्रकरण बनते हैं। ऐसे प्रकरण एकत्र करके ही पुराण-महापुराण बनाये गए। रामायण, महाभारत आदि इतिहास ग्रन्थ भी इसी तरह से बने।

बाद में आई लेखन-कला। मनुष्य की वाणी पहले तो बोलने के लिए ही होती है। 'भाषा' का अर्थ ही है 'बोलने का साधन'। लेकिन मनुष्य

उन्होंने व्यापार में मित्रों का अमित सहयोग पाया। उन्होंने केवल अपने व्यापार का ही विकास नहीं किया, मित्रों के व्यापार को भी लाभ पहुंचाने का प्रयत्न किया।

भले ही जमनालालजी की पढ़ाई स्कूल में अधिक न हुई हो, पर उनके शिक्षा-प्राप्ति के प्रयत्न चलते हुए दिखाई देते हैं। वह "भणिया नहीं, पर गुणिया" थे, जिसका दर्शन उनकी डायरी में पग-पग पर होता है। भले ही ये डायरियां सविस्तर न हों, उनमें संकेत मात्र हों, पर वे निस्सन्देह प्रेरणा-दायक हैं। मुमुक्षुजनों के उनके जीवन के अभ्यासी के लिए तो उनके जीवन पर प्रकाश डालनेवाली महत्त्वपूर्ण कड़ी मालूम देती हैं। डायरी पढ़ने पर मैंने उनमें जो दिलचस्पी दिखाई, उसके कारण भाई रामकृष्णजी ने उनके सम्पादन के कार्य में मेरी मदद चाही। अपनी रुचि का काम होने की वजह से मैंने उसे बड़ी खुशी के साथ स्वीकार कर लिया। इस निमित्त से जमना-लालजी के पूर्व जीवन का जो अध्ययन हुआ, वह मेरे लिए अत्यंत महत्व-पूर्ण है।

—रिषभदास रांका

या घटना कौन-सी हुई, उसका जिक्र तो करते हैं, लेकिन क्या बातचीत हुई, उसमें अपना अभिप्राय क्या था और आगे स्वयं क्या करने का सोचा है, इत्यादि कुछ भी नहीं लिखते। सिर्फ कोई घटना आदि ही लिखते हैं। मैंने कई वर्षों से इसी तरह की डायरियां लिखी हैं। मेरे लिए उनका उपयोग अधिक-से-अधिक है। दूसरों के लिए कुछ भी नहीं है। किस दिन मैं किससे मिला, किस विषय पर लेख लिखा, महत्त्व का पत्र किसे लिखा आदि जरा-सा जिक्र ही उसमें आ जाता है। कौन-सी चीज कब घटी, इसकी जानकारी मेरी डायरी में से जब चाहे मिल जाती है। अगर मैं आत्मकथा लिखने बैठूं तो मुझे मेरी डायरी से काफी मदद मिल सकती है। लेकिन यह शब्द इतना आत्मनेपदी होता है कि दूसरों के लिए यह कुछ काम का नहीं होता। उसमें रस भी पैदा नहीं हो सकता।

महात्मा गांधी भी इसी तरह की डायरियां लिखते थे। उसमें तो बहुत ही कम शब्दों में अत्यन्त जरूरी बातों का ही जिक्र होता है। अमुक दिन गांधीजी कौन-से शहर में थे, किससे मिले और उस दिन क्या किया, इसका जरा-सा जिक्र ही उसमें मिलता है। गांधीजी की जीवनी लिखने वालों के लिए ऐसी डायरी हमेशा काम की चीज है सही, लेकिन गांधीजी की ओर से उसमें कुछ भी नहीं मिला।

कितनी चीजें याद करे ? और अपनी स्मरण-शक्ति पर बोझा भी कितना डाले ? और जहा आवाज पहुँच नहीं सकती, वहा अपनी सूचनाएं भी जैसी-की-तैसी कैसे भेजे ! मनुष्य ने भाषा को लिपिबद्ध करने की कला ढूढ निकाली। मानवीय संस्कृति की प्रगति मे लिपि का आविष्कार एक महत्व की चीज है. लिपि की कला हाथ मे आते ही मनुष्य गद्य लिखने लगा और हिसाब के आकड़े भी लिखकर रखने लगा । कभी-कभी याददाश्त के लिए थोड़े वचन भी लिखकर रखने लगा । इससे लिखित साहित्य के दो रूप हुए—एक गद्य-पद्य और दूसरा स्मरण के लिए लिखी हुई 'डायरिया ।'

हमारे देश में लोग 'डायरिया' अपने लिए कहा तक लिखते थे, हमे मालूम नही है । दिन-भर का अनुभव लिख रखना, दूसरे दिन क्या-क्या करना है, इसकी भी नोंध रखना मनुष्य के लिए स्वाभाविक है। इतिहास सशोधक ऐसी पुरानी सूचिया पढ़कर ही पुराना इतिहास तैयार करते आये हैं । हमारे यहा घटनाओं का बयान लिख रखने की आदत कम थी । भाट, चारण आदि लोग जो बातें स्मरण में रखते थे, उसीपर राजा लोग भी निर्भर रहते थे ।

विदेशों मे दैनन्दिनी लिखने का रिवाज शायद ज्यादा होगा । हमारे यहा जो पठान और मुगल राज्यकर्ता हुए वे अपनी रोजनिशी लिखते थे। इसके लिए आजकल हम अंग्रेजी शब्द 'डायरी' चलाते हैं । अंग्रेजी शब्द 'डे' पर से 'डायरी' शब्द आ गया है । दैनन्दिनी शब्द है तो अच्छा, लेकिन कुछ बड़ा और भारी है । हमारे यहा दिन को 'वासर' कहते हैं, रविवासरे, सोमवासरे इत्यादि शब्द बोलते हैं । इस 'वासर' शब्द पर से दैनन्दिनी के लिए 'वासरी' शब्द बनाया गया । 'वासरी' अथवा 'वासरिका' शब्द अब चलने लगा है ।

डायरी या वासरी लिखनेवाले लोगों के दो प्रकार होते हैं। एक मे 'सारे दिन मे किन-किन लोगों से मिले, किन-किन लोगों से क्या-क्या बातें हुई, लोगों को कौन से वचन दिये, जो लोग मिले, उनके बारे मे अपना अभिप्राय क्या हुआ ।' इत्यादि विस्तार से लिखा जाता है। इनमे लोग बौद्धिक, हार्दिक और चर्चात्मक बातें भी लिखते हैं । ऐसी वासरियां लोगों के पढ़ने के लिए नही होती । वे होती हैं 'आत्मनेपदी'—अपने ही लिए ।

इनका उपयोग आत्म-चरित्र लिखने मे अथवा समकालीन इतिहास लिखने मे अत्यन्त महत्त्व का होता है।

बाद मे जब ऐसी डायरियों के दुरुपयोग होने की सभावना नही रहती है, तब वे प्रकाशित भी की जाती है। लिखनेवाले की साहित्यिक शक्ति भी उनमे अच्छी तरह से प्रतिबिम्बित होती है। डायरी लिखनेवाले यह भी जानते हैं कि किसी-न-किसी समय यह सब लेखन दूसरो के हाथ में जाने की सभावना है, इसलिए लिखते समय वे काफी सभलकर ही लिखते हैं। मनुष्य-स्वभाव पहचानने के लिए और समकालीन घटनाओ का रहस्य समझने के लिए ऐसी डायरियाँ अत्यन्त महत्त्व की होती है, और लिखनेवाला यदि प्रभावशाली पुरुष है और उसमे साहित्यिक शक्ति भी है तो उसके लेखो की अपेक्षा उसकी डायरियों का महत्त्व अधिक गिना जाता है।

जो दूसरे प्रकार के डायरी लिखनेवाले लोग होते है, वे महत्त्व की चर्चा या घटना कौन-सी हुई, उसका जिक्र तो करते हैं, लेकिन क्या बातचीत हुई, उसमे अपना अभिप्राय क्या था और आगे स्वय क्या करने का सोचा है, इत्यादि कुछ भी नही लिखते। सिर्फ कोई घटना आदि ही लिखते हैं। मैंने कई वर्षों से इसी तरह की डायरिया लिखी है। मेरे लिए उनका उपयोग अधिक-से-अधिक है। दूसरों के लिए कुछ भी नही है। किस दिन मैं किससे मिला, किस विषय पर लेख लिखा, महत्त्व का पत्र किसे लिखा आदि ज़रा-सा जिक्र ही उसमें आ जाता है। कौन-सी चीज कब घटी, इसकी जानकारी मेरी डायरी में से जब चाहे मिल जाती है। अगर मैं आत्मकथा लिखने बैठू तो मुझे मेरी डायरी से काफी मदद मिल सकती है। लेकिन यह शब्द इतना आत्मनेपदी होता है कि दूसरों के लिए वह कुछ काम का नही होता। उसमे रस भी पैदा नही हो सकता।

महात्मा गाधी भी इसी तरह की डायरिया लिखते थे। उसमे तो बहुत ही कम शब्दों मे अत्यन्त ज़रूरी बातो का ही जिक्र होता है। अमुक दिन गाधीजी कौन-से शहर मे थे, किससे मिले और उस दिन क्या किया, इसका ज़रा-सा जिक्र ही उसमे मिलता है। गाधीजी की जीवनी लिखने वालों के लिए ऐसी डायरी हमेशा काम की चीज़ है सही, लेकिन गाधीजी की ओर से उसमें कुछ भी नहीं मिला।

श्री जमनालालजी की यह जो दो-तीन साल की डायरियां हैं, इनमें भी केवल याददाश्त के लिए आवश्यक सूचनाएं ही लिखी हैं। न उनका हृदय पाया जाता है और न उनके अभिप्राय।

अगर किसी अच्छे प्रभावशाली नाटक का पहला ही अंक पढ़ा हो तो उसपर से उसे समस्त नाटक की कल्पना तो क्या, पहले अंक की खूबियां भी ध्यान मे नहीं आ सकेंगी। समस्त नाटक पढ़ने के बाद ही प्रथम अंक मे वर्णित छोटी-मोटी घटनाओं और संभावनों का रहस्य ध्यान मे आता है। इसी तरह जमनालालजी के जीवन का प्रथम भाग ही जाननेवाले व्यक्ति को पता नही चलेगा कि प्रारम्भ के दिनों में कौन-सी सूक्ष्म शक्तियां आगे जाकर विकसित रूप धारण करनेवाली हैं। पूरा जीवन जाननेवाले आज के लोग ही उनके प्राथमिक जीवन के संस्कारों की सूक्ष्मातिसूक्ष्म खूबियां समझ सकेंगे और उनकी कद्र कर सकेंगे।

श्री जमनालालजी के अत्यन्त नजदीक के स्नेही श्रीकृष्णदासजी जाजू आज अगर जीवित होते तो इन तीन साल की डायरियों पर अधिक प्रकाश डाल सकते थे और वह इनमें से हमें बहुत-कुछ दे सकते थे। हम तो इसमें इतना ही देख सकते है कि गांधीजी के सम्पर्क मे आने के पहले जमनालालजी का जीवन कैसा था। उन्होने कहां-कहां मुसाफिरी की, किन-किनसे मिले, व्यापार-उद्योग मे उनका ध्यान कैसा था और अपने दिन का उपयोग वह कैसा करते थे।

डायरियो के इस प्रथम भाग में सन् १९१२ तथा १९१४ की डायरियां पूरी हैं। १९१३ साल की डायरी मिली ही नहीं और १९१५ मे केवल पहले चार महीने ही उन्होने कुछ लिखा है। हम देखते हैं कि इसमें उनकी मुसाफिरी वर्धा, नागपुर और बम्बई के इर्द-गिर्द हुई है। केवल एक ही दफा वह कलकत्ता गये हैं और उन्होने वहां अनेक लोगों से मुलाकात की।

धर्म-प्रचार करनेवाले लोगों से उनका सम्पर्क था। रामायण, गीता, उपनिषद् आदि के प्रवचन वह ध्यान से सुनते थे और धार्मिक ग्रंथ भी वह [illegible] थे। सरकारी कर्मचारियों से मिलना, धार्मिक और सामाजिक उत्सवों [illegible], अच्छी-अच्छी संस्थाओं को मदद देना, नेताओं के साथ [illegible]-कुछ सम्पर्क रखना और मारवाड़ी-समाज के लिए शिक्षा-संस्थाओं

की स्थापना करना—व्यापार के अलावा यही उनका प्रधान व्यवसाय था।

सन् १९१२ में उनकी उम्र २३ साल की थी। बाल्यकाल पीछे छोड़कर जवानी में उन्होंने प्रवेश किया था। शादी हो चुकी थी। चि० कमला और कमलनयन का जन्म भी हुआ था। बम्बई में दुकान खोलने की बातें सोची जा रही थी और गांधीजी के बारे में वह केवल अखबार में ही पढ़ते थे। पंडित मदनमोहनजी मालवीय-जैसे राष्ट्र-पुरुष राजनैतिक नेता थे, वैसे ही हिन्दू-समाज के भी सामाजिक नेता थे। मालवीयजी की धार्मिकता भी सामान्य कोटि की नहीं थी। मालवीयजी का असर जमनालालजी के ऊपर होना बिलकुल स्वाभाविक था। तिलक, गोखले, लाजपतराय और दादाभाई जैसों के बारे में भी उनका आकर्षण था। सार्वजनिक संस्थाओं का महत्त्व पहचानकर मदद देना और दिलवाना, इसमें उनको विशेष दिलचस्पी दीख पड़ती थी।

धार्मिक प्रवचन सुनना, नाटक देखने जाना, संगीत के जलसे का आनंद लेना, टेनिस खेलना, ब्रिज खेलना, वन-भोजन आदि विशुद्ध आनन्द को प्रोत्साहन देना, नेताओं के व्याख्यान सुनना, इस तरह जीवन की सब प्रवृत्तियां उनमें पाई जाती है। सबमें सच्चारित्र्य, जीवनशुद्धि, सेवाभाव और दिल की उदारता पाई जाती है। २२ से २५ वर्ष की उम्र में कितने लोगों से उन्होंने सम्पर्क साधा था, इसकी सूची देखकर सचमुच आश्चर्य होता है।

जमनालालजी के स्वभाव में जैसी विशेष आतिथ्यशीलता थी, वैसा ही साथी, संबंधी और राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं के व्यक्तिगत जीवन में भी प्रवेश करके उनके सुख-दुःख के साथ एकरूप होने का माद्दा था। एक तरह से हम कह सकते है कि स्वभाव से ही वह विश्व-कुटुम्बी थे। इसीलिए आगे जाकर जब उन्होंने गांधीजी से प्रेरणा प्राप्त की और उनके पांचवें पुत्र बने, तब समूचे विशाल गांधी-परिवार को अपनाना उनके लिए आसान और स्वाभाविक बन गया। बचपन से सबको अपनाने का स्वभाव न होता तो आगे [illegible] नहीं कर [illegible] थे। तरह-तरह के राष्ट्र-सेवक, उनके परिवार के लोग, राष्ट्रीय संस्थाएं और उनकी कठिनाइयां, सबके साथ जमनालालजी एक हृदय हो सकते थे—यह थी उनकी विभूति की विशेषता।

[illegible] था। इसीलिए [illegible] गांधीजी को [illegible] का इतना बड़ा [illegible] कहीं [illegible] चाहे जितना बड़ा और [illegible] हो, [illegible] का विस्तार और [illegible] [illegible] में भी और [illegible] गांधीजी की [illegible] [illegible] अनासक्ति की और गांधीजी की ऐसी [illegible] जिन्होंने [illegible] है [illegible] और उनके [illegible] में [illegible] होता है।

केवल अपने धन और अपनी धन-सम्पत्ति और कौटुम्बिक [illegible] की ही नहीं, बल्कि अपने परिवार के सब लोगों को राष्ट्र-सेवा में अर्पित करने की उनकी तैयारी थी। केवल तैयारी ही नहीं, उत्साह था। [illegible] जीवन की कृतार्थता मानते थे। लेकिन घर में रहते हुए भी उनकी 'सेवार्थी आत्मसाधना' ही [illegible] थी। [illegible] विचार करना आवश्यक है।

जब कभी कोई 'सेवार्थी' आत्मसाधना शुरू करता है, तब कुटुम्ब-कबीला, आजीविका का व्यवसाय और सार्वजनिक सेवा सबको अलग समझकर सबको त्याग देने की कोशिश करने लगता है। हमारे देश में ऐसे ही आत्मार्थी अधिक पाये जाते हैं। ऐसे ही लोगों ने सन्यास-आश्रम को सबसे प्रधान माना।

हमारी संस्कृति में शुरू में सन्यास का महत्त्व नहीं था। बाद में वह बढ़ा। बुद्ध भगवान और महावीर ने इस वैराग्य साधना को अधिक-से-अधिक बढ़ावा दिया। लेकिन जिन लोगों ने घर छोड़ा, समाज छोड़ा, राज-काज छोड़ा उनके पीछे संघ, विहार, मठ की झंझट उन्होंने लगा दी। अन्त में सन्यास को ही 'कलिवर्ज्य' बना दिया और कहा कि "सन्यास आश्रम किसी समय भले ही अच्छा रहा हो, लेकिन आज के जमाने के लिए वह टिकाऊ नहीं है।"

सन्यास आश्रम का पुनरुज्जीवन शंकराचार्य ने बड़े उत्साह के साथ किया। पर हमारे जमाने में सन्यास आश्रम को बढ़ावा दिया स्वामी विवेकानन्द और स्वामी दयानन्द ने। रामकृष्ण मिशन के कारण और आर्य समाज प्रचार के कारण सन्यास आश्रम का महत्त्व आज की दुनिया में कुछ हद क माना जाता है, लेकिन गांधीजी ने सन्यास आश्रम के प्रति पूरा आदर

नाम दिया—रचनात्मक कार्यक्रम। ऐसे रचनात्मक काम के लिए निष्ठा और धैर्य की आवश्यकता होती है, जो सामान्य जनता मे नही होती। लोग तो फल चाहते है, किन्तु उसके लिए जमीन में बीज बोना, खाद डालना, पानी का सिंचन करना आदि तपस्या करने के लिए वे तैयार नही होते। फल मीठा होता है। उसके लिए लड़ने का काम तीखा-तमतमा होता है। ऐसा स्वाद लोगो को पसन्द तो आता ही है, लेकिन पूर्व तैयारी का रचनात्मक काम परिश्रम का होते हुए अलोना-सा लगता है। हमारे पुरखो ने लोक स्वभाव की इस खूबी या खामी को पहचान कर कहा है :

पुण्यस्य फलं इच्छन्ति, पुण्यं न इच्छन्ति मानवाः।

लोग पुण्य का फल प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं जरूर, लेकिन जरूरी पुण्य या तपश्चर्या करना नही चाहते।

स्वराज्य प्राप्ति के लिए लोक-जाग्रति और राष्ट्रीय एकता सिद्ध करने के लिए जो रचनात्मक काम करना जरूरी होता है, उसका महत्त्व गाधीजी जानते थे। जमनालालजी को भी यह समझते देरी नही लगी। इसीलिए जमनालालजी ने गांधीजी की तमाम रचनात्मक प्रवृत्तियो को सफल बनाने के लिए अपनी सारी द्रव्य-शक्ति और कौशल्य-शक्ति पूरे उत्साह के साथ लगा दी।

आज मैं वर्ण-व्यवस्था का अभिमानी या प्रोत्साहक नही रहा, लेकिन उस व्यवस्था की सुन्दरता मैं जानता हू। लोगों के सामने सुन्दर-सुन्दर आध्यात्मिक आदर्श रखना ब्राह्मणो का काम है, विचारो को प्रेरक और रोचक रूप देना भी उन्हींका काम है। क्षत्रिय पूरी बहादुरी से लड़नेके लिए तैयार होते हैं। जान-माल को न्योछावर करने की तैयारी उनमें बहुत जल्दी होती है। लेकिन समाज का संगठन करना, खेती, पशु-पालन, उद्योग, हुनर और तिजारत आदिके द्वारा समाज को सम्हालना, समर्थ बनाना और भिन्न-भिन्न वर्गों के बीच सामजस्य स्थापित करके सहयोग को सार्वभौम बनाना, यह काम तो बनिये का ही है। गाधीजी मे बनिये के ये सब
[illegible] अलावा यह सोरोत्तर तेजस्विता और चातुर्य से भरे हुए
[illegible]। गांधीजी को लोग पहले केवल 'भाई' कहते थे। बाद में
[illegible] ने लगे। अत मे भारतीय जनता ने उनको 'महात्मा' की

पदवी दी। लेकिन उनकी इन सब शक्तियों से ऊपर और सबको कृतार्थ करनेवाली उनकी शक्ति थी एक सेनानी की। क्षत्रिय तभी लड़ सकता है, जब बनिया उसे पूर्व तैयारी कर देता है। यूरोप के लोकोत्तर सेनापति नेपोलियन ने कहा था—"सेना चलती है पेट पर।" गांधीजी ने कहा था कि सत्याग्रह की सफलता का आधार रहता है रचनात्मक कार्यक्रम पर। उन्होंने यहां तक कहा था कि "मेरा रचनात्मक कार्यक्रम अगर सारा राष्ट्र पूरी तरह से सफल कर दे तो सत्याग्रह के बिना ही मैं आपको स्वराज्य ला दूंगा।"

गांधीजी के इसी रचनात्मक कार्य का पूरा महत्त्व जाननेवाले इने-गिने लोगों में भी जमनालालजी का स्थान बहुत ऊंचा था। यह गुण तो मनुष्य की आस्तिकता में से ही प्रकट होता है। क्षत्रिय भले ही लड़कर राज्य प्राप्त कर लें, राज्य चलाने का काम भले ही क्षत्रियों का माना जाय, पर दरअसल वह है बनिये का ही काम। चार आश्रमों में जिस तरह अनुभव से सिद्ध हुआ है कि गृहस्थाश्रम ही सर्वश्रेष्ठ है, उसी तरह हमें समझना चाहिए कि चार वर्णों में भी श्रेष्ठता कबूल करनी चाहिए वैश्य वर्ण की। वैश्य धर्म की सार्वभौमता के नीचे ही ब्राह्मण-धर्म और क्षात्र-धर्म अपने-अपने काम में कृतार्थ हो सकते हैं। बनिया गांधीजी का सामर्थ्य किसमें है, यह अचूक देख सके बनिया-शिरोमणि जमनालालजी ही।

यह सब जाननेवाले लोग जमनालालजी की कारकिर्दी के प्राथमिक वर्षों में भी रचनात्मक प्रवृत्ति की ओर उनका झुकाव देख सकेंगे।

सन् १९१५ की उनकी शुरू के तीन माह की कारकिर्दी के बाद ही जमनालालजी का गांधीजी से संपर्क हुआ। जब गांधीजी दक्षिण अफ्रीका से भारत आये, तब नामदार गोखले ने उनकी पूर्व तैयारी की। कविवर रवीन्द्रनाथ ने अपने दो उत्तम अंग्रेज स्नेहियों—मि० एंड्रयूज और पियर्सन को दक्षिण अफ्रीका भेजा था। दीनबन्धु एंड्रयूज ने भारत आकर अपने दोस्त प्रिन्सिपल रुद्र और महात्मा मुन्शीराम से गांधीजी की बातें कहीं। इस तरह गांधीजी का सम्पर्क बढ़ता ही गया।

जब गांधीजी रवीन्द्रनाथ से मिलने शांतिनिकेतन आये, तब मैं उसी संस्था में था और उनके आश्रम-वासियों के साथ घुलमिल गया था। गांधीजी

के आते ही मैंने अपने मित्र आचार्य कृपालानी को तुरन्त वहां आने को लिखा। मेरी ही तरह उन्होंने भी गांधीजी से लम्बी चर्चा की और इस नये सामर्थ्य को पहचान लिया। मैंने गांधीजी की बात स्वामी आनन्द से कही। लोकमान्य के दाहिने हाथ कर्नाटक-केसरी गंगाधर राव देशपाडे से कही। वे सब देखते-देखते गांधीजी के प्रभाव तले आ गये। सन् १६०७ से अपने लिए एक प्रेरक शक्ति की खोज करनेवाले जमनालालजी गांधीजी के आकर्षण से अलिप्त कैसे रह सकते थे? गांधीजी को गुरु के रूप में पाकर भी उन्हें गुरु-शिष्य सबध से सतोष नहीं हुआ। पिता-पुत्र के संबंध को ही उन्होंने मांग लिया और गांधीजी ने भी प्रसन्नता से और उतनी ही निष्ठा से उस सबध को मान्य किया।

अगर देवों में नये अवतार को पहचानने की शक्ति होती है तो अवतार में भी अपने साथियों को पहचानने की शक्ति होनी ही चाहिए। हम इसे तारा-मैत्रक कह सकते है। गांधीजी के पास असख्य लोग आये। चंद लोगों को गांधीजी ने स्वय बुलाया। चद अपने आप आकर गांधीजी से चिपक गये। लेकिन दो आदमियों के बारे में मैं जानता हू कि देखते ही गांधीजी ने उन्हें पहचान लिया कि इनके साथ अभेद भक्ति का सबध बधने वाला है। एक थे महादेव देसाई और दूसरे थे जमनालालजी और खूबी यह कि इन दोनों ने जैसे ही गांधीजी को पहचाना, वैसे ही एक-दूसरे को भी तुरत पहचान लिया। महादेवभाई ने जमनालालजी को जो खत लिखे थे, उनमें से चद खत मैंने पढ़े हैं। उस पर से कह सकता हू कि इन दोनों का परस्पर आकर्षण भी कम अद्भुत नहीं था। गांधीजी को आश्रमियों में से श्रीविनोबा भावे का वर्धा जाना भी, मैं इसी तरह का ईश्वरी सकेत या युगरचना या व्यवस्था मानता हू।

अन्योन्य सबध की यह प्रेम-शृखला कैसी बढ़ती गई, यह देखने का आनद जैसे गांधीजी के चरित्रकार को मिलता है, वैसे ही जमनालालजी के चरित्रकार को भी मिलेगा। परस्पर मिलन, परस्पर सहयोग, यह कोई आकस्मिक घटना नहीं होती। सृष्टि में परस्पर सबध का विशाल जाल फैला हुआ रहता है। उसीके अनुसार सबकुछ होता है। कोई भी घटना अकस्मात होती नहीं। हरेक घटना या सबध का 'कस्मात्' हम जानें या न

जाने होता है ही। जब मनुष्य-जाति की ज्ञान-शक्ति बढेगी, तब मनुष्य ऐसे सबध को पहचानकर ही इतिहास लिखने बैठेगा। आजकल के इतिहास बच्चो के प्रयास है। ज्ञानमय प्रदीप प्राप्त होने के बाद ही मानव-जाति की सच्ची जीवन-गाथा लिखी जायगी। गाधी-कार्य का प्रयोग, रहस्य और उसकी कृतार्थता तभी दुनिया के सामने पूर्ण रूप से प्रकट होगी।

गाधीजी के सपर्क मे आने के बाद जमनालालजी का सारा जीवन ही बदल गया था। उसका प्रतिबिम्ब उनकी बाद की डायरियो मे जरूर मिलेगा। ऐसी डायरियो के लगभग दस खण्ड प्रकाशित होने वाले है। इन सब खण्डो को पढने के बाद ही जमनालालजी की इस अन्तर्मुखी आत्मनेपदी प्रवृत्तियो के लिए योग्य भूमिका लिखी जा सकती है। इस प्रथम खण्ड मे तो उनकी पूर्व-तैयारी की थोडी कल्पना ही आ सकती है।

गाधीजी ने हिंदू-धर्म मे और हिंदू-समाज मे जो महान परिवर्तन किये, उसमे सन्यस्त जीवन को नया रूप दिया, जिसका महत्त्व कम नही है। उसका प्रत्यक्ष उदाहरण जमनालालजी के जीवन मे चरितार्थ होता पाया जाता है। यह समझकर ही जमनालालजी की ये डायरिया पढनी चाहिए।

सन्निधि, राजघाट
नई दिल्ली.

—काका कालेलकर

जमनालालजी की
डायरी

१९१२

बंबई १-१-१२

मामूली कार्य हुआ। शापुरजी (नलाटी) अंधेरी ३० दिसंबर १९११ को रेल में मिला। उसका जन्म ८ नवंबर १८९९, कार्तिक सुदी १० सोमवार को १ बजकर ४९ मिनिट पर हुआ था।

वर्धा २-१-१२

रात को लक्ष्मीनारायण मंदिर में पं० रुद्रदत्तजी का वर्ण व्यवस्था पर व्याख्यान हुआ। थोड़े लोग आये थे।

पुलगांव, वर्धा ३-१-१२

पुलगांव जाकर शाम को ट्रेन से वापस आया। वहां जापान कॉटन कंपनी से पुलगांव की १०० गांठों का दर ९०॥ रुपए ३८० प्रति गड्डी में वर्धा डम पर सौदा किया। दलाली चार आना लेना तय हुआ।

रात को मूर्ति मंडन पर पं० रुद्रदत्तजी का व्याख्यान हुआ। बाद में सुदाम-देव नाटक के तीन अंक देखे।

वर्धा ४-१-१२

शाम को ५ बजे टाउन हाल में मराठा-कांग्रेस शुरू हुई। ५१ रुपये दान का वचन दिया।

रात को गांधर्व विद्यालय के अधिष्ठाता विष्णु दिगंबर पलुस्कर डेपुटेशन लेकर आये। १० से १२॥ बजे तक बातचीत व गायन हुआ। पच्चीस रुपए प्रदान किये।

५-१-१२

लगभग २ बजे स्टेशन पर रुई की गांठों को प्लेटफार्म पर देखने गया। गांठों के बारे में मास्टर वैरागीमल तथा गुड्स क्लर्क से बात की।

वद्रीनारायणजी ३ बजे गाडी मे आये। प० अमृतलालजी को साथ लेकर कप्तानसाहब के यहा गये। उन्होने अर्जी देने के लिए कहा। पुरुषोत्तमदास कोठारी से दिल्ली-दरबार का हाल पूछा। शाम को जीन मे व रात को दूकान मे कार्य किया।

६-१-१२

काटन मार्केट मे जाकर कम भाव निकालने की कोशिश की, जिसमे सफलता मिली। जापान काटन व वालकटवालो के रुई तथा कपास का नमूना व गजी (ढेर) बताई। मामूली पत्र-व्यवहार किया।
३ बजे प्लेटफार्म पर रुई की गाठें रखने की जगह कराने तथा वेगन के लिए गया।

७-१ १२

कोआपरेटिव बैंक की मीटिंग ८ से ११ तक हुई, जिसमे उपस्थित रहा।

वर्धा-नागपुर ८-१-१२

डिप्टी कलेक्टर साहब के यहा जाकर दरबार के टिकिट लाया। ३ बजे शाम को बादशाह के दर्शनार्थ नागपुर गये। खानबहादुर नवाब मुहम्मद सलेमुल्लाखान बुलडाना व रावबहादुर भाऊराव चादावाले भी साथ थे।

नागपुर-वर्धा ९-१-१२

सवेरे गाडी से अबाझरी गये। १ बजे किले की टेकडी पर गये। २॥ बजे बादशाह व महारानी के दर्शन बहुत अच्छी तरह से किये। जिस समय बादशाह मोटर मे बैठे तब हम दो फुट पर ही थे। अच्छी तरह से ५-७ मिनट तक देखते रहे। बाद मे उनकी स्पेशल सिताबर्डी पुल से जाते हुए देखी।
विद्यार्थीगृह मे पूज्य जमनाधरजी को लडको का गायन सुनवाया। रात को ९ बजे की गाडी से वर्धा वापस लौटे।

१०-१-१२

स्टेशन पर वेगन के लिए गया। गाठें प्लेटफार्म पर बहुत अधिक गिरी पड़ी थी। सर्की (बिनौले) के बोरे तो बडी बुरी दशा मे पडे थे।

११-१-१२

मारवाडी विद्यार्थीगृह-स्थायी फंड मे श्री पीरदान आशाराम से २१०० रुपये मेघराज के मार्फत लिये।

४-५ घटे भुसान कपनी के साहब के साथ बहुत-से कंपाउडो मे फिरने पर लगभग ५०० गाठो का सौदा हुआ।

१२-१-१२

भुसान कपनीवालो के यहा ३-४ घटे लगे। लगभग ५०० गाठो का सौदा किया।

१३-१-१२

काटन मार्केट मे गये। गनेगाव की गाडी ८१ रुपये मे तय की। माल अच्छा हुआ तो यह भाव दिया जायगा।

म्युनिसिपल कमेटी की मीटिंग मे सराय (धर्मशाला) के विषय मे जैसा होना चाहिए था, वैसा ही हुआ।

१४-१-१२

सक्राति के गोरक्षण मेले के जुलूस मे गये। बद्रीनारायणजी ३ बजे की गाडी से आये।

शाम को भुसान कपनी के साहब के साथ जीन मे फिरकर सौदा किया। शाम को बोर्डिंग मे भोजन किया। रात को बोरगाव के लडको का सास्कृतिक कार्यक्रम हुआ।

१५-१-१२

शाम को ५ बजे बगीचे मे बनारसवालो ने बेंत के मलखब का काम दिखाया। कुश्ती के दावपेंच भी देखे। बगीचे मे तमाशा देखने और भी बहुत-से लोग आये थे। वकील-मडली भी मौजूद थी।

रात को बद्रीनारायणजी व बशीधर पुलगाव गये।

१७-१-१२

जिनिंग फैक्टरी के कपाउड मे घूमकर, मेल ट्रेन के आने के समय स्टेशन पर गया। टाटा आयरन कपनी की (खान)खदानके बडे मैनेजर मि० वेल्स

ीनारायणजी ३ बजे गाड़ी में आये। प० अमृतलालजी को साथ लेकर तानसाहब के यहां गये। उन्होंने अर्जी देने के लिए कहा।
गोवर्धनदास कोठारी से दिल्ली-दरबार का हाल पूछा। शाम को जीन में गन की दूकान में कार्य किया।

६-१-१२

टन मार्केट में जाकर कम भाव निकालने की कोशिश की, जिसमें सफ- ता मिली। जापान काटन व वालकटवालों के रुई तथा कपास का नमूना पर्जी (टेर) बनाई। मामूली पत्र-व्यवहार किया।
बजे प्लेटफार्म पर रुई की गाठें रखने की जगह कराने तथा वैगन के लिए ा।

७-१-१२

आपरेटिव बैंक की मीटिंग ८ से ११ तक हुई, जिसमें उपस्थित रहा।

वर्धा-नागपुर ८-१-१२

प्टी कलेक्टर साहब के यहां जाकर दरबार के टिकिट लाया। ३ बजे म को बादशाह के दर्शनार्थ नागपुर गये। खानबहादुर नवाब मुहम्मद मुल्लाखान बुलडाना व रायबहादुर भाऊराव चादावाले भी साथ थे।

नागपुर-वर्धा ९-१-१२

रे गाड़ी से अवाभरी गये। १ बजे किले की टेकड़ी पर गये। २॥ बजे दशाह व महारानी के दर्शन बहुत अच्छी तरह से किये। जिस समय दशाह मोटर में बैठे तब हम दो फुट पर ही थे। अच्छी तरह से ५-७ नट तक देखते रहे। बाद में उनको स्पेशल सिताबर्डी पुल से जाते हुए ा।
द्यार्थीगृह में पूज्य जमनाधरजी को लड़कों का गायन सुनवाया। रात को बजे की गाड़ी से वर्धा वापस लौटे।

१०-१-१२

शन पर वैगन के लिए गया। गाठें प्लेटफार्म पर बहुत अधिक बिखरी ी थीं। मर्की (क्रिनौते) के बोरे तो बड़ी बुरी दशा में पड़े थे।

११-१-१२

मारवाड़ी विद्यार्थीगृह-स्थायी फंड में श्री पीरदान आसाराम से २१०० रुपये मेघराज के मार्फत लिये।

४-५ घंटे भुसान कंपनी के साहब के साथ बहुत-से कंपाउंडों में फिरने पर लगभग ५०० गाठों का सौदा हुआ।

१२-१-१२

भुसान कंपनीवालों के यहां ३-४ घंटे लगे। लगभग ५०० गाठों का सौदा किया।

१३-१-१२

काटन मार्केट में गये। रालेगांव की गाडी ८१ रुपये में तय की। माल अच्छा हुआ तो यह भाव दिया जायगा।

म्युनिसिपल कमेटी की मीटिंग में सराय (धर्मशाला) के विषय में जैसा होना चाहिए था, वैसा ही हुआ।

१४-१-१२

संक्रांति के गोरक्षण मेले के जुलूस में गये। बद्रीनारायणजी ३ बजे की गाडी से आये।

शाम को भुसान कंपनी के साहब के साथ जीन में फिरकर सौदा किया।
शाम को बोर्डिंग में भोजन किया। रात को बोरगांव के लडकों का सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ।

१५-१-१२

शाम को ५ बजे बगीचे में बनारसवालों ने बेंत के मलखंब का काम दिखाया। कुश्ती के दावपेंच भी देखे। बगीचे में तमाशा देखने और भी बहुत-से लोग आये थे। वकील-मंडली भी मौजूद थी।

रात को बद्रीनारायणजी व बंसीधर पुलगांव गये।

१७-१-१२

जिनिंग फैक्टरी के कंपाउंड में घूमकर, मेल ट्रेन के आने के समय स्टेशन पर गया। टाटा आयरन कंपनी की (खान)खदानके बडे मैनेजर मि० वेब्स

सवेरे जीन मे गया। भोजन के बाद पत्र-व्यवहार। तीन बजे फिर जीन मे गया। वहा से ४॥ बजे म्युनिसिपैलिटी की मीटिंग मे। फिर हाईस्कूल की मीटिंग मे गया। वहा से पोद्दारों का जो बगला लिया, उसे देखने गया। साथ मे स्कोट साहब भी थे। रात को मानमलजी बंसीधरजी पुलगाववालों से बातचीत।

२३-१-१२

सवेरे जीन मे गया। भोजन के बाद भगानदासो के बगले गया। वहा से लौटने पर पत्र-व्यवहार। ३ बजे जीन मे गया और वहा से प्रेस मे। देवली की ६० गाठें ६७॥ मे गोकुलदासजी वालों को बेची। वहा से जीन मे साफ किया हुआ कपास व्यापारी को दिखाया। शाम को ७॥ बजे के लगभग दुकान पर आया। मानमलजी व बंसीधरजी रात को पुलगाव से आये, उनके साथ बातचीत की। बाद मे पत्र-व्यवहार।

२४-१-१२

सवेरे जीन मे गया। जीन से वापस लौटते समय जाजूजी के यहा कुछ देर ठहरा। खरेसाहब के यहा क्लब के मेंबर जमा हुए थे। बुलावा आनेपर वहा गया। उसके बाद प्रेस व भगान के बगले गया। आकर पत्र-व्यवहार किया।

नागपुर २५-१-१२

सबेरे की गाड़ी से दौलतरामजी के पोते के विवाह में लिए नागपुर गया। वहां पहुंचते ही विवाह-मंडप में गया। कुछ देर ठहरकर भोजन के बाद पोद्दारों के बगीचे गया। वहां थोड़ा आराम कर शाम को निकासी में शामिल हुआ। निकासी में पू० श्री[illegible]जी के साथ मनोहरदासजी आदि नागपुर के कई सज्जन मिले। निकासी अच्छी रही।

२६-१-१२

सबेरे ५ बजे पू०बिरदीचन्दजी के साथ अवाझरी गया। वापस लौटते समय स्टेशन पर डेराक साहब पोस्ट कमिशनर मिल गये। वहां और भी सज्जन मिले। बाद में गाडगसाहब व विमोंसाहब के यहां अमरचन्दजी को साथ लेकर गया। वहां से लौटकर कमनवालों की ओर से पेड़ों की त्रिमन-धार में गया। शाम को रामनारायणजी राठी से मिलने गया। उनकी तबीयत बहुत ही खराब थी। चित्त दुःखी हुआ। रात को भोजन करके वर्धा आने का विचार था, लेकिन पू०जमनाधरजी पोद्दार के कहने से रुक गया।

नागपुर-वर्धा २७-१-१२

सबेरे ५। बजे अवाभरी बिरदीचन्दजी के साथ गये। वापस लौटने पर स्नान व भोजन के बाद सर्गों के यहां मडारे के लिए पू० नानाजी के साथ गया। वापस आकर फिर पू० नानाजी के साथ अवाभरी गया। वर्धा बोडिंग की बात निकालने पर उन्होंने कहा कि विचार करके निश्चित बात बाद में लिखेंगे। उनको वर्धा की गाड़ी पर बिठाया। रात को सर्गों के यहां 'सजन-गोठ' का भोजन करके रात की गाड़ी से ११। बजे वर्धा पहुंचे।

२८-१-१२

म्युनिसिपल कमेटी के दफ्तर गया। मि०एकनाथ थोडगे को मत दिया। वापस जाने पर रामानुजदासजी की खबर पढ़ी। चित्त को दुःख हुआ। मे छोटेलालजी आदि मिलने आये। भोजन के बाद पत्र-व्यवहार करके आराम।

शाम को जीन मे गया। रात को भोजन बोर्डिंग में किया। बाद में टाटा कंपनी के शेयरों का जमा-खर्च रात को डेढ़ बजे तक बिरदीचंदजी कराते रहे।

२९-१-१२

सवेरे ही जीन मे गया। वापस आकर पत्रादि पढ़े। बाद मे रोकड वगै देखी। स्नान के बाद भोजन करके पत्र लिखे।

३०-१-१२

रात को दलालो के मार्फत नाटक के टिकिट बिकवाने की कोशिश की दलालो मे प्लेग की कुछ गड़बड़ी सुनी। कुछ देर तक दूकान का कार्य देख रहे। फिर शयन।

३१-१-१२

सवेरे ही जीन मे जाकर वहा से काटन मार्केट गया। उसके बाद स्नान भोजन करके मारवाड़ी विद्यालय की सहायता के लिए शारदाकर नाट कंपनी के टिकिट बिकवाने की कोशिश की। फिर पत्र-व्यवहार।
हरदास दुबे के लिए रामनाथजी के यहा गया। वहा से रामनाथजी के स वे यहा गया। शाम को जाजूजी के साथ पैदल पोद्दारो के बगीचे गया। आज नाटक के लिए पुलगाव व देवली के लोग आये थे। रात को टिक का हिसाब किया। नाटक देखने गये। नाटक अच्छा रहा। प्रबंध भी अच था, लेकिन साधारण लोग कम आये थे। नागपुर के लक्ष्मणराव र (भोसले) भी आये थे। पहिले रामनारायणजी से माधवराव को धन्यव दिलाया। उन्होंने भी बहुत खुशी जाहिर की।

१-२-१२

रात को नाटक देखने के कारण सुबह कुछ देरी से उठा। जीन मे गय आराम के बाद पत्र-व्यवहार। बद्रीनारायणजी डाक गाड़ी से पुलगाव ग जीन व प्रेस से घूमते हुए बगीचे गया। वापस लौटने पर नित्य कार्य निवृत्त होकर बिरदीचंदजी के पास गये और वहा से छोगदारी-आफिस ल लिए कानपुर तार दिलवाया।

के बगले गया । वहा स्कूल की दरख्वास्त दी और बोर्डिंग के विषय मे बातचीत हुई । वहा से कौल के बगले गया । पोस्ट मास्टर मिले । पत्रादि लिखकर नागनगड (हनुमान टेकडी) पर गये । वहा वाद-विवाद चल रहा था । बालाप्रसाद ने गुरुजी के विरुद्ध मठ के बाहर स्पीच पढी । लगभग दो घटे वहा रहे । मत्रे आदि मिले । वहा से बगीचे आये । बगीचे से पैदल गोरक्षण गये । वहा भोजन किया । जाजूजी व अमृतलालजी चक्रवर्ती की राह देखी । वे नही आये । अपेसाहब से बातचीत होती रही । वहा से बगीचे आया ।

१२-२-१२

स्नान, पूजन और भोजन के बाद भुसान के बगले गया । तागा प० अमृतलालजी चक्रवर्ती के लिए भेज दिया । वह भी वहा आगये । स्कोडा भी वहा आये । उनसे स्कोडासाहब की काफी देर तक बातचीत होती रही । वहा से जीन और जीन से गोरक्षण होते हुए बगीचे आये । जाजूजी भी वहा पहुच गये थे । वार्तालाप होता रहा । पडितजी सध्यादि से निवृत्त हुए । बाद मे भोजन किया । २-३ विद्यार्थी और पुलगाव देवली के मुनीम भी शामिल हुए । भोजन के समय श्लोक आदि हुए । भोजन के बाद कुछ देर तक हास्य-विनोद होता रहा । जाजूजी और पडितजी गोरक्षण गये । कुछ देरतक पढता रहा । बाद मे सोया ।

१३-२-१२

दैनिक कार्य से निवृत्त होकर ११ बजे के करीब भुसानवालो के बगले गये । वहा से पडितजी के लिए तागा भिजवा दिया और बिरदीचदजी के यहा गया । पडितजी के आने पर उनका बिरदीचदजी से परिचय करवाया । वहा से दूकान । पडितजी लेख लिखते रहे और मैं दूकान-सबधी कामकाज देखने लगा । बहुत दिनो की उदरत माफ कराकर जमा-खर्च करवाये । ४॥-५ बजे जाजूजी व पडितजी से कालेज-सबधी व जीवन किस उपयोग मे खर्च करना चाहिए आदि बातें हुई । कालेज का कार्य महत्व का है । इसलिए उसका प्रारभ शीघ्र करने का निश्चय हुआ । विद्यार्थियो को सत्य, प्रामाणिकता आदि के आधार पर वार्षिक छात्रवृत्ति देने के सबध मे निश्चय

हुआ। वार्तालाप होता रहा। बाद मे बगीचे मे आकर भोजन किया और कुछ देर पढ़ता रहा, फिर शयन।

१४-२-१२

सवेरे कुछ जल्दी उठा। निवृत्त होकर थोड़ी देर घूमता रहा। बाद मे स्नान, पूजन और भोजन कर प्रेस होते हुए दूकान गया। वाढोणा गाव का सौदा किया। ३॥ तक दूकान का काम किया। बाद मे गाठों के सौदे के लिए रामदिया प्रेस व नरसिंगदास मेहता बगाउड मे गया। उनके बुलावे से सौदा भी हुआ। शाम को भुसान के बगले होते हुए बगीचे आया। कुछ देर बाद पडित अमृतलालजी आये। साथ मे भोजन किया। थोड़ी देर बाद पडितजी गोरक्षण कैंप मे गये। मै पुलगाव व देवली के मुनीमो से व्यवहार-सबधी वार्तालाप करता रहा। १०॥ बजे के करीब शयन।

१५-२-१२

भोजन के बाद भुसान के बगले होते हुए प्रेस मे और वहा से दूकान गया। गाठों का सौदा हुआ। १ बजे के करीब फिर भुसान के बगले जाकर चेक लिया। पत्र-व्यवहार। ५ बजे के करीब गोरक्षण मे गया। वहा से जाजूजी व पडितजी के साथ बगीचे आये। पडितजी की लिखी हुई भूमिका सुनी। आज कुछ मानसिक चिंता रही, जिससे मन उदास रहा। भोजन किया। थोड़ी देर तक पडितजी से वार्तालाप रहा। बाद मे गोरक्षण गये। वापस आकर कुछ पढ़ने के बाद सोया।

१६-२-१२

आज शिवरात्रि का उपवास था। स्नान आदि के बाद जल्दी ही भुसानवालों के बगले गया। २-३ घटे सौदा होने मे लगे। दूकान १२॥ बजे के करीब आया। १ से २ बजे तक शिवजी का पूजन। बाद मे हुडी, चिट्ठिया व पत्र-व्यवहार किया। फलाहार के लिए बगीचे आया और फलाहार कर वापस दूकान पर गया। जाजूजी के साथ पोद्दारो की लान मे थोड़ी देर बैठे। वहा से जाजूजी के साथ पोस्ट मास्टर के बगीचे आये। बहुत देर तक वार्तालाप हुआ और राणा के भजन होते रहे। ठडाई ली। बाद मे तुलसीकृत रामा-

यश पढ़ी । १० बजे के करीब सोया ।

१७-२-१२

सबेरे उठते ही भुसान की चिट्ठी पुलगाव गाठो के तौल के विषय में आई। पढ़कर रज हुआ। स्नान-भोजन करके भुसान के बगले और वहा से दूकान गया। दूकान का काम करके लगभग ८। बजे तक फिर भुसान के बगले गया। वहा से फलाहार के लिए बगीचे आया। बाद मे गोरक्षण मे अमृतलालजी चक्रवर्ती से मिला। उन्हे स्टेशन जाने के लिए तागा दिया और मैं पैदल गाठोवाले प्लेटफार्म से होकर स्टेशन गया। ट्रेन पर पडित अमृतलालजी और सुदर्शनदासजी भी मिले। ये लोग सेकड क्लास में बैठकर रवाना हुए। पडित अमृतलालजी अमरावती गये। उन्हे २१ रुपये विदाई दी। पुलगाव की ८५ गाठो के तौल मे फरक आता था। जिसकी जाच की। बराबर पता नही लगा। बाद मे भुसान के खाते मे कुछ गाठो की खरीदी की। शाम को बशीधर व पेस्तमजी साथ आये। साहब से बहुत देरतक बात हुई। भोजन पुलगाव मे किया। गाठें बेचने का विचार था परन्तु लिमिट के कम आने के कारण सौदा नही बना।

१८-२-१२

मारवाडी विद्यार्थीगृह के लडको का तैरना देखा। दूकान गया। वहा पुलगाव के बारे मे चिट्ठी लिखकर भुसानवालों को गद लाल का पत्र भेजा। पत्र लिखे। लगभग ४ बजे बगीचे आया। फलाहार कर लडको के साथ कुछ देर तक मोक्षपट (बच्चो का शतरज की तरह का खेल) खेल खेलता रहा। बाद मे "स्वर्ग नु विमान" पुस्तक पढ़ी।

खेद खेल रहे थे कि रामनारायणजी आये। उनसे लडके के गोद लेने के विषय मे वार्तालाप किया। गोरक्षण और बोर्डिंग कैप मे रामनारायणजी व पुरुषोत्तम को लेकर गया। वहा थोडी देर लडको का खेल देखा। वहापर आनद से भोजन किया। रामनारायणजी, जाजूजी वगैरा भी वगर मे साथ थे। फिर लडको को सुधार के लिए इनाम रखा था, उसके विषय मे लडको को अच्छी तरह से समझा दिया। कुछ इनाम बटा भी दिए।

वर्धा, २५-२-१२

मारवाडी कैंप मे घूमने के लिए गये। आकर स्नान, पूजन, भोजन करके १२ बजे के अदाज मे शामराव, मूलचद व चूडामणराव इंजिनियर को सीविल स्टेशन की ओर भेजा और बबावाले कप्तान के यहा गये। कई विषयो पर बातचीत हुई। उन्होने अपने जीवन की बहुत-सी बातें बताई। बाद मे कौलसाहब के यहा गया। बगला ठीक करवाना था, वह देखा। वहा भी कई विषयो पर बातें हुई। दूकान पर जाकर चिट्ठिया लिखी और नागरमलजी वगैरा को स्टेशन पहुचाया। वह गयाजी गये। जाजूजी व विरदीचदजी के साथ बगीचे आया। रामायण पढी और फलाहार किया। थोडी देर तक फुटबाल खेला। फिर सभी मारवाडी कैंप गये।

भोजन के समय जाजूजी को बिच्छू ने काटा, पर ज्यादा दर्द नही रहा। जल्दी ही आराम हो गया।

सुना कि दत्तूजी की मा बहुत बीमार है, वहा गये। करीब ६। बजे वापस लौटकर सोया। दत्तूजी के लड़के-बच्चे सोने के लिए यहा आ गये थे।

२६-२-१२

आज पूज्य फूलचदजी को हरिद्वार रवाना करना था। उनकी तैयारी करवाई और उनसे बातचीत की। दूकान २॥ बजे के आस-पास गये। पत्रों पर जयगोपाल (दस्तखत) करके जीन मे गया। मेहता पारसी व पुलगाववाले बसीधर साथ मे थे। वहापर गोदाम के माल का जिनिग हो रहा था, वह देखा। अच्छा था। वहा से पोद्दारो के बगीचे गये। विरदीचदजी से हाजिर रूई के सौदे की बातचीत की। स्वदेशी मिल की खरीदी ११० के भाव से हो तो उन्हे बुलाने के लिए लिखवाया था। उनसे बहुत देर तक बातचीत हुई। जाजूजी व अबेसाहब आये, उनसे कई विषयो पर बातचीत हुई। कौलसाहब ने लैंप भेजा, सो देखा। वहा से बगीचे आये। फूलचदजी को रवाना किया, फिर भोजन किया। रामनाथजी आदि आये, उनसे बातचीत की। ११ बजे सोना।

२७-२-१२

मुखमार्जन कर थोडी देर फुटबाल खेलना। दत्तूजी व मानमलजी से बातचीत कर स्नान करना। हरिकिसनजी आये। घोड़े का ताँगा खरीदने को कहा। भोजन कर पपर पढ़े और विश्राम किया। दूकान पर लगभग २॥ बजे गये। पत्रों पर जयगोपाल लिखकर पोद्दारों के बगीचे आया। वहाँ से बिरदीचदजी को साथ लेकर ५ बजे अपने बगीचे आया। फलाहार कर बातचीत की। मारवाडी कैंप में गये। शाम को भी फुटबाल खेले। हरसामलजी वगैरा आये। बाद में भोजन कर रामनाथजी के साथ शतरंज खेलना। जीन के जाट लोग आये। उनका गीदड़[1] देखा। टेनिस ग्राऊंड में रात के ६॥ बजे तक खेल-कूद होता रहा। मोतीलालजी आदि बहुत-से लोग आ गये थे। बाद में शयन।

२८-२-१२

सवेरे कुछ देर से उठे। मुखमार्जन, स्नान भोजन कर आराम किया। दूकान में पत्र लिखकर आये, उनपर जयगोपाल किये। बाद में पुलगाव से बंशीधर हरलालका आया। बातचीत के बाद जावराजीन में जाकर दत्तूजी वगैरा से मिले। बगीचे में वापिस आये। सेक्रेटरी वगैरा आये। उनके साथ वार्तालाप करने के बाद फुटबाल खेले। फिर आराम और भोजन किया। उसके बाद जीन के जाट लोग आये। गीदड़ खेलते रहे। लडके भी खेले।

२६-२-१२

नित्यकर्म से निवृत्त होकर भोजन किया। थोडी देर आराम किया। गंगाबिसन से थोडी देर मराठी रामायण सुनी। दूकान २॥ बजे के करीब गये। चिमनीराम पुलगाव से आया। गाठें बेचने को लिखा। स्टेशन मास्टर को मकान के लिए कहा और बगीचे आया। कुछ देर पढते रहे, फिर भोजन किया और गीदड़ देखा। ११॥ बजे सोया।

---

[1] डांडिये की तरह का पुरुषों का खेल, जो होली के दिनों में खेला जाता है।

१-३-१२

नित्य कर्म से निवृत्त हो पत्र और अखबार पढ़े। बाद मे स्नान कर मोटर के साथ ट्रेन और स्टेशन गया। बगीचे मे ११ बजे आकर भोजन और आराम किया। ८॥ बजे प्रेस होकर जिला कचहरी गया। पुरनाव मकान की रजिस्ट्री करवाई। दरबार की आगे तारीख हुई। कचहरी से बम्बावाले साहब के यहा गये। वे घर पर नहीं थे। घर के लोगों से बहुत देर तक बातचीत होती रही। वहा से पोस्ट आफिस मे गये। रामनारायणजी पोस्ट मास्टर से वार्तालाप कर प्रेस मे गया। लौटकर भोजन किया। तुलसीकृत रामायण और वाल्मीकि रामायण के मराठी अनुवाद का बाल-काड पढ़ा। लड़कों के साथ थोड़ेरो आये। आज सवेरे ही भूमान का साहब पुलगाव से आया था। बगीचे मे ही रहे। सोते समय थोड़ी देर गृहस्थधर्म का अंश पढ़ा। १०॥ बजे सोता। रात को बुरा सपना आया।

२-३-१२

नित्य कर्म से निवृत्त होकर पत्र और अखबार पढ़े। पंडित शिवप्रसादजी गाजीपुरवालों का, उनके लड़के के विवाह के विषय मे, पत्र आया था, उनके लिए ५० रुपये का मनीआर्डर भिजवाया। भोजन के बाद विश्राम और २॥ बजे दुकान जाकर पत्र बाचकर उनपर जयगोपाल किया। ३ बजे तांगे मे बैठकर बाबूजी के यहा गया और थोड़ी देर बैठा। वहा से प्रेस मे गया। राठीजी के मान मे आग लगी थी, सो देखकर तार दिया। बाद मे पोद्दारों के यहा गया और टहाई ली। जाजूजी के साथ बगीचे आकर थोड़ी देर घूमे और भोजन किया। फिर जाजूजी पोद्दारों के बगीचे गये। तुलसीकृत रामायण पढ़ी। बाद मे शयन। गीदड़ के कारण रात को नीद नहीं आई। सवेरे ४॥ बजे होली मगली[1], फिर शयन।

३-३-१२

रात के जागरण के कारण सवेरे देर से उठा। स्वजातीय लोग आये। उनके साथ कपडे पहनकर साथ हुए। उन्होंने होली की राखड (राख) सेरी।

[1] होली जलाने को 'मगली' कहते हैं।

वहां से पोद्दारों के बगीचे गये। वहां ठहरना हुआ और जाजूजी से बातें कीं। बाद में बगीचे में निबटकर स्नान किया। गोइन्दकाजी को बुलाया। बाद में भोजन और विश्राम। ३ बजे दुकान में चले आये, देखे। बाद में थोड़ी देर पुस्तक देखा। गाडीजी आये, उनके साथ श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर में फूल डोल के लिए गया। वहां बिरदीचंदजी, जाजूजी, पोस्ट मास्टर आदि आये। वहां का काम पूरा करके उनके साथ पोद्दारों के बगीचे गया। वहीं भोजन तथा बातचीत। बाद में जाजूजी के साथ मोटर में गया। उनसे बोर्डिंग स्कूल-सम्बन्धी बातचीत करके टांगे में बैठकर बगीचे आये। थोड़ी देर बाद शयन।

वर्धा से बंबई की रेल-यात्रा में ४-३-१२

सवेरे उठते ही मुखमार्जन कर पुस्तक वगैरा रखी। बम्बई साथ ले जाने का सामान जमाया। बाल बनवाकर स्नान-भोजन किया। बाद में मिलनेवाले आये। उनसे बातें कीं। रामनारायणजी के दीवानजी से बातचीत कर गाड़ों का बैलेंस उतारा। फलाहार कर २॥ बजे के करीब स्टेशन आये। स्टेशन पर जाजूजी, बिरदीचंदजी तथा बहुत-से लोग पहुंचाने आये थे। डिब्बा रिजर्व नहीं था, इसलिए सैकंड में बैठा। बबावाले कप्तानसाहब की लड़की रेणुकाबाई भी साथ में थी। डिब्बे में त्रिवेदी-मेहता आदि सज्जनों से गोखले बिल[2], आर्य-समाज आदि विषयों पर बहुत देर तक बातचीत होती रही। वे लोग बड़े सज्जन थे। पुलगांव, धामणगांव पर बहुत-से लोग मिलने आये। महादेवजी वगैरा चांदूर तक साथ थे।

बंबई ५-३-१२

सवेरे कल्याण में रेणुकाबाई पूना जाने के लिए उतरी। साथ में उनका

---

[1] धुलेंडी के दिन शाम को मंदिर में जाकर मित्र-मंडली का गुलाल आदि से सत्कार करना।

[2] श्री गोपालकृष्ण गोखले ने समाज-सुधार का एक बिल असेंबली में रखा था।

गई स्पेशल भी था। दादर स्टेशन पर सीतारामजी बजरंग आदि उपस्थित थे। सामान दादर स्टेशन भेजा। औरों गाड़ी में बैठकर गई। गाड़ी के दूसरे लोग दादर स्टेशन से अंधेरी आये। सीतारामजी मिले। उनसे अन्य बातचीत के बाद अपने स्वयं के विवाह की बात कही। चित्त का रंज हुआ। उन्हें मौसम (इशारे) से समझाया। उनकी इच्छा प्रकट दिखाई दी। स्नानादि कर भोजन किया। आराम करने के बाद गुरुजी से मिले। फिर अंधेरी से चर्नीरोड उतरकर और दुकान से भुगतान के आफिस में गये। वहां से बुलाया गया। वहां बहुत से सज्जन मिले। वर्धा से लाया हुआ रूई का नमूना दिखाया। हाजर का बाजार साधारण ठीक था। वर्धा २८३ घटी था। वहां से चर्चगेट से अंधेरी रवाना हुआ। रास्ते में रघुनाथ नित्यानन्दजी आदि से बातचीत की। घर आये। भोजन के बाद सीतारामजी, प्रेमप्रसादजी से वार्तालाप।

बंबई-अंधेरी ६-३-१२

आज पूना से बम्बावाले आनेवाले थे इसलिए उन्हें लेने के लिए डागू को भेजा था। निकलने जा रहे थे, इतने में वे आये। बातचीत के बाद बहुत दूर तक निकलने के लिए गये। वापिस आकर मुखमार्जन स्नान-भोजन कर बंबई गये। लड़कों को रानीबाग वगैरा देखने भेज दिया। दुकान पर करीब दो घंटा ठहरकर बिले गया। स्वदेशी स्टोर्स से कुछ सामान खरीदा। बुलाया जापान के आफिस गये। वहां कई लोगों से बातचीत की। वापिस चर्चगेट आये। ईश्वर-कृपा से त्र्यबकराव बम्बावाला बहुत बड़ी जोखम से बचा। अंधेरी आये। रामनारायणजी व सूरजमलजी रुइया से सीतारामजी के विवाह के सम्बन्ध में वार्तालाप किया। घर आकर भोजन किया। ब्रजमोहनजी सोने के लिए आये। रात को ताश खेलना व करीब ११ बजे सोना।

हुआ। स्नान-सन्ध्योपासना के बाद ब्रजमोहनजी आदि सबसे मिलकर सीता-रामजी के यहां भोजन किया। बम्बई १०-४ की गाड़ी से आये। दर्जी [illegible] किये गए। फिर से जल्दी ही कुलाबा गये। वहां थोड़ी देर ठहर-कर ४-३० की गाड़ी से अंधेरी वापस आये। यहां आने पर देखा कि सीता-रामजी व किशोरी की सेवा थी। किशोरी से बात हुई। जलपान की। ८-१० भजन और गान थे। हरनाथजी विशालाक्षी से बहुत देर तक बात-चीत हुआ। सीतारामजी थोड़े थे। उन्होंने पंजाबी भाभी की स्त्रियों के गीत सुने। वापिस आकर भोजन किया। थोड़ी देर ब्रजमोहनजी से बातें। १०॥ बजे करीब शयन।

८-३-१२

सवेरे जल्दी उठे। मैदान जाकर, मुखमार्जन कर, बातचीत की। बाद में स्नान-सन्ध्योपासना और ब्रजमोहनजी आदि को मिलकर भोजन किया और फल खाये। सीतारामजी पल्लाजी पर बिदगी की सैर आदि, उसे देखा। दृश्य अवश्य ही देखने योग्य था। १२-४ की गाड़ी से बम्बई आया। रामनारायणजी, सूरजमलजी रूइया भी साथ में थे। वहां मिलकर स्वदेशी स्टोर में जाकर कपड़े बनवाये। कुलाबा गये। वहां कोशिश कर दाउद समून को बर्मा की ३१८ गाठें बेचीं। भुसान मनजी के बहुत से साहबों से मिला। ६-४८ की गाड़ी से अंधेरी ब्रजमोहनजी के साथ आया। भोजन कर हास्य-विनोद की चिट्ठी बिन्दीचंदजी को भेजी। ११ बजे के करीब शयन।

९-३-१२

१२-५ की गाड़ी से बम्बई गये। रामविलासजी के साथ बातचीत की। दुकान पर जाकर किले में भुसान के आफिस गये। वहां से कुलाबा गये। वहां हाजर में ग्राहक कम थे। जीन २७१॥ तक बिकी।
ताजमहल होटल में आग लगी, वह देखी। पानी के बंबे देखे।

१०-३-१२

श्री रामनारायणजी रूइया को विद्यार्थीगृह के नियम भेजे। रामनारायणजी और सूरजमलजी से बम्बई में विद्यालय स्थापन करने के विषय में बहुत-सी

१३-३-१२

१२-५ की गाडी से बंबई आया। दुकान पर पत्र-व्यवहार कर किले में कुलाबा गया। कुलाबा में १२ गाठें २०१ में प०दीनदयालुजी के लिए बेची। ६-७ की गाडी से अंधेरी आया। थोडी देर बाद पं० दीनदयालुजी प० नेकीरामजी के साथ आये। भोजन के बाद उनसे बंबई विद्यालय के विषय में वार्तालाप होता रहा। सीतारामजी सिघानिया भी आ गये थे।

१४-३-१२

पंडित दीनदयालुजी के साथ भोजन कर बंबई आना। चर्नीरोड उतरकर सेनवाडी गये और सेमराजजी से मिलकर बातचीत की। बाद में पंडितजी को डेरे पर छोडकर दुकान गया। दुकान से स्वदेशी स्टोर होकर कुलाबा गया। बाजार की रुख देखकर १०० गाठें कॉटन वेस्ट की २७४ में ली। ६-७ की गाडी से वापिस आये। रेल में रामनारायणजी सूरजमलजी से विद्यालय-संबंधी बातचीत होती रही। दूसरी ट्रेन से पंडितजी भी आये। भोजन कर कुछ देर पढ़ता रहा। १० बजे सोया।

रात ८ बजे की गाड़ी से बम्बई गए। चर्नीरोड से चन्दावाग जाकर पं० दीन-दयालुजी से मिले। वहां नारायणदासजी भिवानीवाले मिले। उनसे विद्यालय के विषय में बातचीत की। वहां से दुकान गए। हीरालाल, श्यामजी आदि से मिले। ४॥ बजे मारवाड़ी विद्यालय में स्नेह-सम्मेलन के लिए चन्दावाग होते हुए पं० दीनदयालजी को साथ लेकर गए। कार्यक्रम शुरू हो गया था। भाषण ठीक रहा। प्रेसिडेंट बैरिस्टर जयकर थे। उनका व्याख्यान बढ़िया रहा। पं० [illegible]जी ने बुलाकर चन्दा के लिए बहुत आग्रह किया। थोड़े लिखकर पंडित दीनदयालुजी को दिये। अपनी गाड़ी दीनदयालुजी को दी और ब्रजमोहनजी की गाड़ी से ग्रान्ट रोड होकर अंधेरी आये।

१८-३-१२

आज सोमवती अमावस्या थी, इसलिए निबटकर मोटर से वरसोवा गये और रत्नाकरजी (समुद्र) में आनन्दपूर्वक स्नान करके सन्ध्या की। बाद में हिन्द पितामह दादाभाई नवरोजी का बंगला देखा। अंधेरी आकर भोजन करके १२-७ की गाड़ी से बम्बई आया। बहुत-से पत्रों का उत्तर दिया। वहां से स्वदेशी भंडार जाकर भवरू के लिए स्वेटर बनाने को दिया, फिर कुलाबा

रवाना होकर पोलो की जगह गये। थोड़ी देर ठहरकर अधेरी आये, ताश खेले। चन्द्रकान्त व रामायण पढ़ी। जावरे से गजाधर आया, गो मिला।

२१-३-१२

त्रिनायक एम० त्रिवेदी आये, उनसे बातचीत कर विश्राम किया। बाद में बम्बई गया। प० वृद्धिचन्द्रजी वैद्य, नारायणदासजी पोद्दार व गजानन्द मोदी आये। उनसे विद्यालय-सम्बन्धी बातचीत की। वार्षिक प्रेस जचाया। पत्र लिखा। ५-४८ की गाड़ी से अंधेरी जाकर भोजन कर बम्बई आया। साथ मे जानकीराम रूइया थे। ६ बजे माधवबाग पहुंचे और दर्शन किये। झांकी उत्तम थी। बाद में पंडित विष्णु दिगम्बरजी की तुलसी रामायण गायन के साथ सुनी। बड़ी ही मनोहर थी। 'हरे राम हरे राम' की छटा विलक्षण थी। ११ बजे रामायण पूरी हुई। प० दिगम्बरजी दीनदयालुजी से मिलकर चर्नीरोड आये। ११-४६ की गाड़ी से रवाना हुए। माहिम के पास गाड़ी लेट हो जाने से १॥। बजे घर पहुंचे। आज गर्मी थी, जिससे २॥ बजे नींद आई।

२२-३-१२

जागरण के कारण देरी से उठा। दैनिक कार्य से निवृत्त होकर ११-१० की गाड़ी से बम्बई गया। रास्ते में सूरजमलजी रूइया से बात हुई। दूकान पर खेमराजजी व प० वृद्धिचन्द्रजी से विद्यालय के सम्बन्ध में बातचीत करने आये थे। ४ बजे फारेन इंडिया एजेंसी गये। वहां से गजानन्द मोदी का लेकर रिकार्ड लिये। माटरमेकर बुलाया गये। आज बाजार नरम था, कुछ सौदा किया। ६-५२ की गाड़ी से अंधेरी आये। गजाधर साथ में था। कल के जागरण के कारण भोजन कर जल्दी सोया।

२३-३-१२

१०-४० की गाड़ी से बम्बई आने के विचार से स्टेशन गया। गाड़ी निकल गई। रामनारायणजी व सूरजमलजी मिले। गजाधर भी साथ था। दूकान पर बाबूभाई से अंग्रेजी में तथा और भी पत्र लिखवाये। जयनारायणजी पोद्दार का आदमी आया। वहां गया, उनसे एकान्त में बहुत देर तक बातचीत

गए। नागरमलजी भिवानीवालों का [illegible] रामनारायणजी से यहां गये।
विद्यालय की बात की। इन बातों में आन्तरिक उत्साह बिल्कुल दिखाई
नहीं दिया, इसीका आज में प्रयत्न [illegible] का विचार किया। कुलाबा
में हाजिर [illegible] बहुत कम थी। [illegible] के भाव की कोई माल नहीं
थी। वहां से बाबू [illegible] दर्शन को गये। अच्छी तरह दर्शन कर बाद
बाद में [illegible] गये। [illegible] ब्रजमोहनजी से वाद-विवाद होता
रहा।

१९-२-१२

सवेरे उठकर देखा तो रात को बहुत आग लगी हुई दिखाई दी। ओस के
कारण पहाड़ी पर मनोहर दृश्य दिख रहा था। भोजन कर ११-२० की
गाड़ी से बम्बई आये। रेल में मुरलीधरजी, नागरमलजी, बैजनाथजी के लड़के
आदि से बातचीत हुई। ब्रजमोहनजी की दुकान पर जाकर हीरे आदि
देखे। प० दीनदयालुजी से मिले। विद्यालय स्थापित होने की आशा नहीं
दिखती। वार्तालाप पर (न्ई रू.) जमे की दुकान गये। पत्रादि लिखकर किले
में भुसान के आफिस गये। बड़े साहब से बहुत देर तक बातचीत होती रही।
वहां से कुलाबा जाकर ३३८ गांठें बेची। रंगनाथजी से मिले। बाद में मुरली-
धर आया। उसने बताया कि लच्छीरामजी नवलगढ़ जाना चाहते हैं।
तब गाडी में बैठकर दुकान के नीचे आया और तलाश किया। लच्छीरामजी
का विचार स्थगित रहा। चर्नीरोड स्टेशन से बैठकर अंधेरी आये। बच्चों
के साथ ताश खेले। थोड़ी देर हार्मोनियम बजाया।

२०-२-१२

नित्यकर्म से निवृत्त होकर गुजराती चन्द्रकान्त वेदान्त की पुस्तक पढ़ी।
भोजन, आराम कर बबई गया। रेल में रामनारायणजी रूइया से वर्धा में
बैंक खोलने की बाबत बहुत-सी बातचीत हुई। चर्नीरोड से उतरकर
दूकान गये। पत्र लिखे। बाद में किले में ध्यवकराव के लिए साइकल
देखी। कीमत ज्यादा थी। कुलाबा गये। आज वहां बहुत भीड थी। वायदे
लिए नियम छपते थे, वहां गये। बाजार का रुख तेजी का था। ६॥ बजे

रवाना होकर पोलों की जगह गये। थोड़ी देर ठहरकर अंधेरी आये, ताश खेले। चन्द्रकान्त व रामायण पढ़ी। जावरे से गजाधर आया, सो मिला।

२१-३-१२

विनायक एम० त्रिवेदी आये, उनसे बातचीत कर विश्राम किया। बाद में बबई गया। प० वृद्धिचन्द्रजी वैद्य, नारायणदासजी पोद्दार व गजानन्द मोदी आये। उनसे विद्यालय-सम्बन्धी बातचीत की। कार्मिक प्रेम जचाया। वर्षा पत्र लिखा। ५-४४ की गाड़ी से अंधेरी जाकर भोजन कर बबई आया। साथ मे जानकीराम रूइया थे। ९ बजे माधवबाग पहुंचे और दर्शन किये। भारी उत्तम थी। बाद मे पंडित विष्णु दिगम्बरजी की तुलसी रामायण गायन के साथ सुनी। बडी ही मनोहर थी। 'हरे राम हरे राम' की छटा विलक्षण थी। ११ बजे रामायण पूरी हुई। प० दिगम्बरजी दीनदयालुजी से मिलकर चर्नीरोड आये। ११-४६ की गाड़ी से रवाना हुए। माहिम के पास गाड़ी लेट हो जाने से १॥ बजे घर पहुंचे। आज गर्मी थी, जिससे २॥ घंटे नींद आई।

२२-३-१२

जागरण के कारण देरी से उठा। दैनिक कार्य से निवृत्त होकर ११-१० की गाड़ी से बबई गया। रास्ते में सूरजमलजी रूइया से बात हुई। दूकान पर शिवराजजी व प० वृद्धिचन्द्रजी से विद्यालय के सम्बन्ध में बातचीत करने आये थे। ४ बजे स्पार्क इंडिया एजेंसी गया। वहां से गजानन्द मोदी को लेकर रिकार्ड लिये। माडर्न लेकर बुलावा गये। आज बाजार तेज था, कुछ सौदा किया। ६-४२ की गाड़ी से अंधेरी आए। गजाधर साथ में था। कल के जागरण के कारण भोजन कर जल्दी सोया।

२३-३-१२

१०-४० की गाड़ी से बबई आने के विचार से स्टेशन गया। गाड़ी निकल गई। रामनारायणजी व सूरजमलजी मिले। गजाधर भी साथ था। दूकान पर बाबुभाई से अंग्रेजी में तथा और भी पत्र लिखवाये। जयनारायणजी पोद्दार का आदमी आया। वहां गया, उनसे एकान्त में बहुत देर तक बातचीत

हुई। सज्जन और उगमाजी मालूम दिये। विद्यालय व नेल की एजेंसी आदि बहुत-सी बाते हुई। दुकान आकर कलैया पर बुलाया गये। बर्मा की ११३ गाठे २८० में ली और मार्च ११०, ३८५ में बेची। बाजार आज भी तेज था। गुरानन्दजी से मिले, विद्यालय-सम्बन्धी चर्चा की। ६-५० की गाडी मे अंधेरी आये। भोजन के बाद, गान्धर्व विद्यालय की तरफ से गायन सिखाने आये थे, उनसे 'जानकी नाथ सहाय करे' यह पद सीखना शुरू किया। फिर मारवाडी विद्यालय की चर्चा हुई। चन्द्रकान्त पढकर सोया।

२४-३-१२

विनायकराव से इंग्लिश पढी। स्नान-भोजन के बाद सीताराममजी सिघानिया से बातचीत की। बबई १०-५ की गाडी से जाकर पत्र आदि देखे। स्त्रिया देवकन्या नाटक मे गई थी। दुकान पर पण्डित लज्जारामजी शर्मा व वृद्धिचन्द्रजी आये थे। बहुत-सी बातचीत हुई। लज्जारामजी से मारवाडी जाति की सच्ची हालत पर पुस्तक लिखने को कहा। उन्होने स्वीकार किया। प० लज्जारामजी बडे ही योग्य मालूम दिये।

२५-३-१२

तेल-मालिश कर स्नान किया। थोडी अग्रेजी पढी। भोजन कर बबई गये। अंधेरी मे पत्र लिखे थे, वे डाक मे गिरवाये। बालुभाई विलायत मे आये हुए एक शिक्षक को लाये। उनसे १ घटा अग्रेजी मे बातचीत सीखने का विचार हुआ। स्टोअर देखने कुलाबा आये। हाजर का बजार सुस्त था। पानी लगी १०० गाठें २७८ मे बेची। ६-७ की गाडी से अधेरी आया। गाडी मे रुइया से बातचीत की, भोजन कर कुछ अग्रेजी का अनुवाद किया। गायन मास्टर आये, उनसे १०॥ बजे तक गायन सीखे।

२६-३-१२

नौरात्र का आखरी दिन था। मिष्टान्न भोजन कर आराम किया। १२-५ की गाडी से बबई जाकर पत्र लिखे। खेमराजजी ने बुलाया, इसलिए वहा गये। वह रास्ते मे ही मिल गये। विद्यालय के सम्बन्ध मे बातचीत हुई। भुसान के आफिस जाकर बाजार का रुख पूछा और कुलाबा गये। वहा

की। वहां से सेनवाडी खेमराजजी के पास गये। गायन छपवाये। दूकान जाकर पत्रादि देखे। निपटकर स्नान किया। ग्रहण तथा सभा के कारण ४ बजे भोजन किया। माधवबाग जाकर कुर्सिया लगवाना, गलीचे बिछाना आदि बंदोबस्त किया। प्रबंध के लिए ८-१० सेल-मुलाकातियों को ले गये थे। सर कस्तूरचंदजी डागा आये। अध्यक्ष के लिए उनके नाम का सुझाव दिया। अध्यक्ष के विराजमान होते ही गायन हुआ। पं० नेकीरामजी का व्याख्यान हुआ। बाद में पं० दीनदयालुजी का जोरदार व सारगर्भित व्याख्यान हुआ। सभा जोरदार हुई। श्रोता करीब १००० थे।

२-४-१२

हाथ-मुंह धोकर किराये के तीन तांगे कर वरसोवा गये। दरिया में खूब नहाये। वहां से आकर भोजन व आराम किया। बंबई ११-२० की गाडी से आये। रास्ते में माधवबाग के मालिक व गोकुलदास तेजपाल के मित्र मिले। उनसे बातचीत हुई। दूकान जाकर पत्र लिखे। वहां से कुलाबा गये। बाजार सुस्त था। ६-३ गाडी से जाने के लिए चर्नीगेट आये। पं० वृद्धि-चंद्रजी विक्टोरिया से गिर गये। गाडी रवाना हो रही थी, इसलिए थर्ड क्लास में बैठे। ग्रांट रोड में उतरकर फर्स्ट क्लास में बैठे। रामनारायणजी से सलाह कर पं० हरिश्चंद्रजी को बादरा से वापिस बंबई भेजा। विद्यालय के लिए चंदा करने के लिए बुधवार को सभा निश्चित की। रामनारायणजी ने आने की स्वीकृति दी। वृद्धिचंद्रजी का कार्ड छपाने के लिए कहा।

३-४-१२

११-१० की गाडी से बंबई गया। रुइयाजी रेल में साथ थे। शाम को सभा में जाने को कहा। दूकान पर जाकर ३-४ जगह फोन किये। चंदाबाग ६॥ बजे के करीब गये। सर डागा को चंदाबाग में लाने के लिए खेमराजजी को टेलीफोन किया। थोडी देर में ताराचंदजी, रामनारायणजी, सर कस्तूर-चंदजी, बलदेवदासजी, खेमराजजी नेवटिया और प्रतिष्ठित दूकानदार व दलाल एकत्र हुए। बातचीत होकर चंदा आरंभ हुआ। ७८,२०० रुपये हुए। दूकान के नाम से ११,००० लिखे। अंधेरी जाते समय रेल में हुकमभाई

कामा व डा० यशवतराव आनदराव भालेकर से बातचीत। विद्यालय के लिए चदा देने के लिए सीतारामजी सिघानिया से बात की। उनको फिकर पैदा हुई। सर कस्तूरचदजी ने चदा लिखवाते समय खानगी (एकान्त) मे मुझसे बात की थी ?

४-४-१२

त्र्यबक वम्बावाला वर्धा जानेवाला था, इसलिए १०-१० की गाडी मे बबई गये। दूकान से १२। बजे बोरीबदर स्टेशन जाकर त्र्यबक को गाडी मे बैठाया। दूकान वापस आये तो शरीर मे कुछ दर्द होने लगा। गर्मी ज्यादा मालूम दी। चिट्ठिया पढकर चर्नीरोड से २-३० की गाड़ी मे बैठे। रेल मे रीताराम दीक्षित मालिसिटर से कई तरह की बातचीत हुई। नागपुर का मारवाडी पत्र पढा। अधेरी आकर सोये। ५॥ बजे उठकर हाथ-मुह धोया। २०-२२ डाकोत (शनी के पुजारी) लोग आकर हल्ला मचाने लगे। रज हुआ। कुछ दिया। फिर कपडे पहनकर लडको के साथ घूमने गये। विला-पार्ला स्टेशन तक पैदल गये। रास्ते मे बगला देखा। नेम से मिला हुआ था। विलापार्ला पहुचने खूब पसीना आया हुआ था। स्टेशन पर अधेरी की गाडी तैयार थी।

५-४-१२

आज बहुत जोर की सर्दी और खासी हो रही थी। बुखार भी १०० तक था। मुह-हाथ धोकर कपडे बदल लिये। हल्का भोजन किया और आराम किया। बबई से चिट्ठिया और अखबार आये, सो पढता रहा। सूरजी मे भी पढाये। शाम को भोजन नही किया। सीतारामजी सिघानिया बहुत देर तक बैठे। उन्हे विद्यालय के चन्दे की बात अच्छी तरह समझाकर कही पर उनका विचार बहुत कम रहा।

६-४-१२

सर्दी का जोर और बुखार रहा। हाथ-मुह धोकर अदरक लिया। भोजन थो[ड़ा] किया, लेकिन रुचि ठीक नही थी। डाक्टर को तीन बजे बुलाया। उ[न्होंने] सर्दी का जोर बताया और कुछ सूघने की दवाई भेजी। चित्त अस्वस्थ र[हा]

शाम को शाहूलालजी दूगरोदो मिलने आये थे। दोपहर को कुन्दबाई कालिन्दी मिलने आई थी। उनके दो बच्चे देवलाली किनारे पर देता है। वह बहुत देर तक बैठी। रात को बृजमोहनजी आदि से बहुत देर तक बात करते रहे। बाद में घूमने व दूध लेकर सोया।

७-४-१२

आज सर्दी का जोर तो था, लेकिन बुखार कम मालूम हुआ। प० वृद्धिचन्दजी सभा-सम्बन्धी जो बातें सुनाकर लाये थे वे अंधेरी में बहुत-सी जगह भेजे। मुह-हाथ धोया। मारवाड़ से मालिक मनोहरदास मिलने आये। दो घंटे से अधिक बैठे रहे। बम्बई से भाई सीताराम पोद्दार व विशेसरलाल आये। वे भी करीब तीन घंटे बैठे। कई विषयों पर बातचीत कर विद्यालय को सहायता मिले, ऐसा प्रबन्ध किया। बम्बई से पारसी डाक्टरनी आई। घर में से तबीयत बताई। तबीयत ठीक है कहा। बीस रुपये फीस दी। थोड़ी देर आराम कर ८-१७ की गाड़ी से सभा के लिए बम्बई गया। चर्नीरोड से चन्दाबाग पंडितजी के पास गये। वहां से माधवबाग आकर दर्शन किये। राजा मोतीलालजी आये। उनके पोते गोविन्दलालजी (पित्ती) बड़े ही उत्साही दिखलाई पड़े। थोड़ी बातचीत हुई। सभा-स्थान पर आये। सभापति का मैंने प्रस्ताव किया। उसका नागचन्दजी ने अनुमोदन किया। सभा का कार्य आरम्भ हुआ। विद्यार्थियों द्वारा मंगलाचरण हुआ। नेकी-रामजी तथा वृद्धिचन्दजी की भूमिका के बाद प० दीनदयालुजी का विद्या और उन्नति पर बड़ा ही प्रभावशाली व्याख्यान हुआ। ६॥ बजे सभा पूरी हुई। गोविन्दलालजी आदि से बातचीत। रामनारायणजी से अंधेरी में दूसरे रोज क्या करना, यह तय किया।

८-४-१२

आज तबीयत ठीक मालूम दी फिर भी सर्दी, तो थी। १०-७ की गाड़ी से बबई गये। दूकान आकर पत्र पढ़े। मथुरा से रामगोपालजी की विद्यालय-सम्बन्धी चिट्ठी पढ़ी। चित्त रंजीदा हुआ। खेमराजजी की दूकान १॥ बजे गये। वहां से रामनारायणजी के यहां, फिर सूरजमलजी के यहां जाकर उनके

देने को तैयार हुए। प० दीनदयालुजी उनके घर थे। भोजन आज गोविन्द-रामजी सिंघानिया ने साथ किया। फिर ग्रामोफोन बजाया। १०॥ बजे सोया।

११-४-१२

पण्डित दीनदयालुजी आज १० बजे तक अंधेरी ही थे। भोजन कर आराम किया। पण्डितजी १२-४ की गाड़ी से बम्बई गये। मैंने १०-१८ की गाड़ी से बम्बई जाकर ७-८ चिट्ठियों के जवाब लिखे। फिर उन्हीं की दुकान जाकर रुई के नमूने का हिसाब किया। वहां से भुगान के आफिस आया और मरोदा से मिला। बहुत देर तक बातचीत हुई। पुनगांगी साहब से सर्टिफिकेट मांगा। वहां से कुलाबा गये। रामनारायणजी रुइया ने बुलाया। विद्यालय-सम्बन्धी बहुत-सी बातचीत हुई। ताराचन्दजी भी वहां थे। रुई के नमूने देखे। वैजनाथजी रुइया मिले। कहने लगे कि हाजिर का थोड़ा माल गोर में खरीदने का विचार है। मैंने कबूल किया। ६-७ की गाड़ी से अंधेरी आये। रुइया साथ थे।

१२-४-१२

बम्बई १०-५ की गाड़ी से दूकान आकर ताराचन्दजी के यहां गये। उन्हें लेकर देवड़ों की तीनों दूकान पर गये। रामनारायणजी रुइया के यहां गये। वहां से विद्यालय के काम से भगवानदासजी बागला, केदारमलजी लडिया आदि की दूकान पर गये। बाद में दूकान जाकर कुलाबा गये। रोजगार-सम्बन्धी कामकाज देखा। अकोला की १०० गाठें २७६ में बेची। गजानन्दजी आदि से विद्यालय-सम्बन्धी बात की। भुसावलवालों के यहां से ३ गाठें लेने के लिए चिट्ठी मंगाई। वैजनाथजी नेवटिया मिले। अंधेरी ६-७ की गाड़ी से आये। रेल में रामनारायणजी व सूरजमलजी से विद्यालय-सम्बन्धी बातें होती रहीं।

१३-४-१२

बम्बई १०-५ की गाड़ी से आया। दूकान पहुंचते ही खेमराजजी के यहां से आदमी बुलाने आया। वहां से ताराचन्दजी की दूकान गये। सीतारामजी

की ओर से विद्यालय के चन्दे में २१०० रुपये लिखवाये। नैनसुख प्रताप से
११०० रुपये और बंशीधर मगनुलाल से ७०१ रुपये लिखवाये, फिर तारा-
चन्दजी घनश्यामदासजी की दूकान पर गये। उनसे फिर सभापति होने को
कहा। और भी कई तरह की बातचीत हुई। बाद में दूकान होकर कुलाबा
आया। थोड़ी देर ठहरकर ५-३८ की गाड़ी से अंधेरी आया। ८-११
की गाड़ी से ब्रजमोहनजी के साथ मैदानिया (प्रदर्शनी) गये और कुछ
खरीदी की। एक्सेल्सियर में सिनेमा देखकर ११-३६ की गाड़ी से अंधेरी
आये। आज १।। बजे सोया।

१४-४-१२

बम्बई से बालुभाई, भगवानदास, छोटेलाल व बंगाली युवक आये। व्यापार-
सम्बन्धी कई प्रकार की बातें हुईं। सभी १२-१० की गाड़ी से बम्बई आये।
रास्ते में बातचीत होती रही। दूकान जाकर पगड़ी बांधी और खेमराजजी
की दूकान पर गये। वहां से चौपाटी पर जैनारायणजी दानी के बंगले डेपु-
टेशन लेकर गये। उनसे कई तरह की बातचीत हुई। उनसे विद्यालय के
लिए २१०० रुपये लिखवाये। वापस आकर प० दीनदयालुजी से मिलने
चन्दाबाग गये। माधवबाग जाकर सभा की व्यवस्था की। आये लोगों को
बिठाया। अध्यक्ष का स्वागत कर आसन पर बैठने की सूचना की। कार्य शुरू
हुआ। 'मनुष्य जीवन' पर प० दीनदयालुजी का बहुत अच्छा व्याख्यान
हुआ। खेमराजजी की गाड़ी में बैठकर ग्राटरोड आये। उनसे उनके घर-
सम्बन्धी बातचीत हुई। त्रिभुवनदासजी से भी बातचीत।

१५-४-१२

बालुभाई आये। उनसे बातचीत की और ११-१० की गाड़ी से बम्
आये। दूकान जाकर चिट्ठियां लिखीं। माधवरावजी सप्रे पूना से आये थे
उनसे पुस्तक के विषय में बातचीत की। भगवानदास, बालुभाई व सच्चि
रामजी के साथ छोटेलाल पारिख के आफिस में गये। वहां से भगवानदा
इंडिया इंजिनियरिंग के आफिस गये। भगवानदास के सीर (साझे)
स्टोर का काम करने का निश्चय हुआ। कुलाबा गये। अंधेरी ६-७ की गा

मे गया। रेल मे रामनारायणजी रुइया ने भूतकाल मे जीवन कैसे बीता और भविष्य मे कैसे बिताना यह प्रेम से सविस्तर बताया। उनके विचार अच्छे थे और मैंने भी कुछ बातें उनसे कही। मृत्युपत्र (वसीयत) बनाने का निश्चय हुआ। भोजन कर घीसूलाल से सेमराजजी के झगडे की बात सुनी। रामनारायणजी के यहा जाकर ताश खेला। थोडी देर शतरज भी। ११ बजे सोया।

१६-४-१२

आज जल्दी ही बाल बनवाकर १०-२७ की गाडी से बबई ब्रजमोहनजी की दूकान पर गया। श्रीनिवासजी जालान वर्धा से आये, उनसे बातचीत की। ताराचदजी वगैरा को बुलवाया और चैनीरामजी जेसराज के यहा गये। भगवानदासजी सीताराम से बात करके सेमराजजी रामभगत के यहा गये। वहा उमरावसिहजी प्रह्लादरायजी नही मिले। पृथ्वीराज भगवानदास और रामकरणदासजी रामविलास के यहा गये। उन्होने ११००रुपये चन्दे मे भरे। दूकान पर गये, पर आलस आने लगा। मथुरा पू० रामगोपालजी को विद्यालय और स्टोर दूकान करने के विषय मे सविस्तर पत्र लिखा। कुलाबा ५ बजे के करीब गये और रामचद्र को लेकर सेमराजजी रामभगत के ५१०० रुपये भरवाये। और वैद्यो से मिले। लल्लुभाई से रेल मे विद्यालय-सबधी अधेरी तक बात होती रही। उनसे इस काम मे मदद मिलने की आशा है। भोजन कर रामनारायणजी के यहा गये। ताश खेली।

१७-४-१२

जल्दी दैनिक कार्य से निवृत्त होकर बबई ११-२० गाडी से गया। दूकान के पत्र देखकर जवाब दिये। आज आनरेबल लल्लुभाई ने अपनी लडकी की लिखी हुई सब किताबे भेजी। गेइटी थियेटर मे नल-दमयन्ती नाटक देखने ३॥ बजे गये। बसीरामजी ने यहा बुलाया मे वर्धा की ४१४ गाठे २८७ के भाव मे बेची।

१८-४-१२

११-१० की गाडी से बबई। रेल मे रामनारायणजी साथ थे। दूकान जाकर

खेमराजजी के यहां गया। वहा से सबको साथ लेकर बडे-बड़े दलालों के यहां गया। तीन घंटे में करीब नौ हजार रुपये हुए। फिर खेमराजजी की दूकान जाकर चन्दावाडी प०दीनदयालुजी के पास गये। वह आज जानेवाले थे। उनको १०१ रुपये भेंट और टिकिट खरीदकर दी। ग्रांट रोड स्टेशन से ५-१८ की गाडी से अंधेरी गये। रामनारायणजी से पंडितजी के जाने की बात कही। भोजन कर ११ बजे की गाडी से कुलाबा जाकर पंडितजी से अच्छी तरह मिले। वहांपर कई सज्जन आये थे। रेल में ग्रांटरोड तक उनके साथ आये। मारवाडी विद्यार्थीगृह वर्धा के डेपुटेशन में साथ आने की स्वीकृति दी। आजतक विद्यालय के लिए १,२५,६५६ रुपये एकत्र हुए।

१९-४-१२

खेमराजजी के यहा १२ बजे गये। वह नही मिले। दूकान जाने पर उनके यहा से आदमी आया, फिर दो बजे वहा गये। विचार हुआ कि आज फिर राजा मोतीलालजी के यहा जावें और विद्यालय के चन्दे-संबंधी नक्की करके चैक लिया जाय। दो मोटरो में ८ लोग वहा गये। वहा जाने पर कुछ देर बाद राजासाहब आये। उनको मानपत्र मैंने पढ़कर सुनाया। बाद में विद्यालय-संबंधी बातचीत की। उन्होने ११००० रुपये देने का वादा किया, वहा से मोटर से कुलाबा गये। मोटरों का १७ रुपया किराया चुकाया। अंधेरी ६-७ की गाडी से गये। रामनारायणजी से शिवलालजी पित्ती की बात की। आज अखबार में पढ़ा कि सबसे बड़ा एक जहाज लंदन से अमरीका जा रहा था। उसमें १५६६ आदमी थे। उसके डूबने से सब लोग संसार से विदा हुए। उसमें कई प्रतिष्ठित करोड़पति भी थे। समाचार पढ़कर रोमांच हुआ। परमात्मा की मर्जी।

२०-४-१२

बंबई १२-५ की गाडी से गये। दूकान जाकर किले में पेटीवाले के यहा गये। पेटी खरीदी, वह अच्छी थी। वहा से दूकान जाकर पत्र-व्यवहार करके कुलाबा गया। वहा ताराचंदजी भिवानीवाले मिले। भुमान के आफिस में गये। खुशालचंदजी, गोपालदासजी के बडे मुनीम, चुन्नीलालजी तथा

भिवानीवालजी इन्जिनियर आदि मिले। आज बाजार में गाठें नहीं किये। अफीम १०० गाठें ७५ में खरीदी। अंधेरी ६-७ की गाड़ी से आये। रामनारायणजी रेल में मिले, उनसे विलायत तथा घर-सबंधी बातचीत हुई। उन्होंने अपने यहां विचार लाभ दिन से करे। रामनारायणजी के यहां गये। वहां बातचीत और नाश्ता लिये। उन्होंने गुरुवार को लोणावला चलने के लिए आग्रहपूर्वक कहा।

२१-४-१२

आज बबई नही गये। बालुभाई के बगले १२ बजे गये। उनसे व प० अनन्तप्रसाद से बातचीत कर माधवबागवालों के बगले गये, उनसे बातचीत की। बगले का फर्नीचर बहुत ही सुदर था। बगले में हवा भी अच्छी आती थी। घर आकर पत्र लिखे। आज प० अनन्तरामजी का अपने यहा हरिकीर्तन था, उसकी तैयारी करवाई। विछायत करवाई। शिवप्रसादजी गाडोदिया बबई से ५ बजे के लगभग आये। वह रात को यहीपर रहे। ६ बजे सब तैयारी कर घूमने गये। बैजनाथजी, गजानदजी लल्लुभाई, रामनारायणजी आदि से मिला। हरिकीर्तन में आने का कहा। हरिकीर्तन ८॥ बज के करीब शुरू हुआ। त्रिभुवनदासजी व लल्लुभाई परिवार के साथ, रामनारायणजी रूइया, बैजनाथजी आदि कई प्रतिष्ठित सज्जन आये। कीर्तन बहुत ही अच्छा हुआ। सभी प्रसन्न हुए। अनतरामजी अच्छे विद्वान व सात्विक वृत्ति के मालूम दिये। वह राधनपुर में कई वर्षो तक दीवान रह चुके थे। नरसी मेहता के परिवार के है। शिवप्रसादजी को सबसे मिलाया। बालुभाई बबई से आये थे।

२२-४-१२

शिवप्रसादजी के यहा गये। फिर भोजन कर थोडी देर आराम किया। ११-३० की गाडी से बबई गये। दूकान जाकर पत्रादि देखे। खेमराजजी के यहा तलाश करवाया। वह दूकान पर नही थे। किला होकर बुलावा गये। वहा बाजार की रगत देखी। बाजार तेज था। ६-७ की गाडी से अधेरी आये। रेल मे रामनारायणजी मिले। शुक्रवार को लोणावला आने को

कहा।

२३-४-१२

बंबई ११-१० की गाड़ी से गये। दूकान पर जाकर पू० मालवीयजी का मथुरा से पत्र आया उसका जवाब दिया और भी पत्र लिखे। कुलाबा गये। रुई के बाजार का रुख तेज दिखाई दिया, इसलिए कुछ गांठें खरीदीं। चर्चगेट से ६-७ की गाड़ी से रवाना हुए। पाठकसाहब से मिलने का विचार हुआ। इस कारण बांद्रा उतरकर उनके बंगले गये। छोटा-सा बंगला समुद्र-किनारे था। वह नहीं मिले, उनकी पत्नी मिलीं। बातचीत की। उन्होंने कहा कि वह देर से आवेंगे। कल बंबई में मिल लेंगे। वापस आये। बांद्रा में बहुत-से पारसी तथा यूरोपियन रहते हैं। यहां के प्रभु जाति के डाक्टर एक यूरोपियन स्त्री से विलायत में विवाह करके ले आये थे। उन्हें देखा। उनका वृत्तांत सुना। पहली स्त्री के लड़के मातामुज में रहते हैं। धिक्कार है उसे! ब्रजमोहनजी से गोठ व नाच का विचार किया। गोठ का निश्चय किया, नाच का नहीं।

२४-४-१२

बंबई १०-१० की गाड़ी से। बांद्रा में पाठकसाहब परिवार-सहित मिले। ग्रांटरोड से चर्नीरोड तक उनसे बातचीत हुई। उन्होंने बताया कि वह २॥। की गाड़ी से मद्रास जानेवाले हैं। दूकान जाकर पत्र लिखे, बाद में हार लेकर २॥ बजे स्टेशन गया। पाठकसाहब व उनकी स्त्री को हार पहनाये। वे बहुत खुश हुए। स्टेशन से गाड़ी छूटने पर भुतान के आफिस गये। रुई का रुख तेजी का बताया। वहां से स्पीसी बैंक में गये। चुन्नीलाल नहीं मिले। मर्चेंट बैंक में गये। जयनारायणजी दानी मिले। विद्यालय-संबंधी बातें करने पर वर्धा में मर्चेंट बैंक की शाखा के विषय में विचार हुआ। उनका मन अनुकूल था, पर निश्चय बाद में करेंगे, ऐसा कहा। अंधेरी ६-७ की गाड़ी से गया। रेल में जामनगर राजघराने के जोरावरसिंहजी, मुलजी जेठा के त जजी व प्रधान आदि से परिचय और बातचीत। रुई के तौल के बारे -सा विचार चलता रहा।

२५-४-१२

अंधेरी से ११-१० की गाड़ी से बम्बई गया। व्रजमोहनजी की दूकान पर गये। वहां घर पर बनाया हुआ आईस्क्रीम खाया। नेमराजजी की दूकान पर गये। वहां नहीं थे। वर्धा से दस्तावेज आया, उस पर साक्षी करवाई। डेप्युटेशन बनाकर चेनीराम जेसराज के यहां गये। उन्होंने विद्यालय के चन्दे में २१०० रुपये लिखे। वहां से १-२ जगह और भी गये, लेकिन सफलता नहीं मिली। कुलाबा गये। वहां वल्लभदासजी के मुनीम चुन्नीलालजी व नेमराजजी दलाल से विद्यालय-सम्बन्धी चर्चा हुई। ५-४८ की गाड़ी से अंधेरी आये। सुना कि सीतारामजी सिंघानिया की लड़की का, जिसकी उम्र १६ साल की बताते हैं, बरेली में ६५ साल के बूढ़े के साथ विवाह हुआ। रंज हुआ।

२६-४-१२

जल्दी उठकर पहाड़ पर निपटने गया। फत्तूलाल रहुआ साथ में था। २-३ दिन के लिए लोणावला में जाने का विचार होने से व्यवस्था की। १२-५ की गाड़ी से बम्बई गये। २-४५ की पूना मेल से लोणावला फर्स्ट क्लास में गये। नेरल में श्री दार्गलिंग मिले। सोमवार को सायंकाल के लिए आवेंगे, यह समाचार वर्धावाले श्री नायडू को पहुंचाने को उनसे कहा। लोणावला ५-४८ को पहुंचे। स्टेशन पर रामनारायणजी गाड़ी लेकर आये थे। मैंने उन्हें देखा, पर आगे के डिब्बे में होने से उन्होंने मुझे नहीं देखा। त्रिभुवनदासजी से पूछ-ताछ कर वह चले गये। मैं तांगा करके बंगले पहुंचा। सेनजी भाई से बहुत देर तक बातचीत होती रही। रामनारायणजी घूमकर आये। भोजन के बाद कई तरह की बातचीत होती रही। रात को दरवाजा बंद करने पर भी ओढ़ने की जरूरत हुई।

लोणावला २७-४-१२

हाथ-मुंह धोकर रामनारायणजी के साथ सूरजमलजी के यहां गये। वहां से सेठ श्री पूरणमल सिंघानिया के बंगले गये। वह बम्बई गया था। नौकरों से उनकी तबीयत के विषय में पूछा। अफसोस रहा। बंगले जाकर स्नान-पूजा,

भोजन और आराम किया। रामनारायणजी से बातचीत के बाद मिनर्मी-भाई, सूरजमलजी, हेमराजभाई के साथ तास खेला। बाद में ६ बजे मोटर से कार्ले की गुफा देखने गये। रामनारायणजी नीचे ही रहे, सूरजमलजी के साथ ऊपर गये। दो माईल की चढ़ाई थी। ऊपर पहुंचकर गुफा देखी। मनोहर तथा देखने योग्य थी। ४६ खंभों पर कमान लगी हुई नग्न मूर्तियां थी। दृश्य अच्छा था। बौद्धों की बनाई हुई है। लौटकर निवटे। भोजन किया। रामनारायणजी से विद्यालय व मारवाड़ी-कान्फरेंस वर्धा करने आदि विषयों पर बहुत-सी बातचीत हुई। उन्होंने कान्फरेंस वर्धा बुलाने के प्रति सहानुभूति बताई और आने को कहा। उनके विचार सराहनीय थे।

२८-४-१२

रामनारायणजी को बबई से आया हुआ पत्र सुनाया। गुरुवार को विद्यालय की मीटिंग करने का निश्चय किया। सूरजमलजी के साथ यूरोपियन लोग रहते हैं। उस रास्ते पैदल घूमते हुए स्टेशन होकर त्रिभुवनदासजी के बंगले गये। वहां से खिलौने की दूकान से ५ रुपये के खिलौने खरीदकर सूरजमलजी के बंगले आये। करीब मील-भर घूमना हुआ। पत्र लिखकर सूरजमलजी के साथ भोजन किया, बाद में फल खाकर रामनारायणजी के बंगले मोटर से आया। कुछ देर आराम किया। रामनारायणजी को विद्यालय की रिपोर्ट सुनाई। सूरजमलजी आये। तास खेलकर स्टेशन गये। श्रीपतराव दीवान से मिले। वहां से टाटा हाइड्रो इलेक्ट्रिक का काम देखने गये। काम जोरों से चल रहा था। बंगले पर जाकर निवटे। सूरजमलजी खेतसीभाई आदि के साथ भोजन किया। बबई से रामरिखजी आये। खेतसीभाई की बात सुनी। रामरिखजी से नरसिंहदासजी के यहां की बातें सुनीं।

माथेरान २९-४-१२

जल्दी उठकर स्नान कर पूड़ी खाकर ८-१३ की मेल ट्रेन से माथेरान जाने को रामनारायणजी के साथ स्टेशन आये। वहां सूरजमलजी, खेतसीभाई, ...भाई आदि आये थे। गाड़ी में बैठकर नेरल आये। बारातियों ने

सीन ड्रामे में अच्छी तरह दिखाया। गोसाईं स्वामीजी मेल ट्रेन से रवाना होकर अमीन लाज में ठहरे। वहाँ से नायडू वकील मिले। माथेरान पहुँच-कर लक्ष्मी हिल होटल में ठहरे। ३ बजे घूमने निकले। घोड़े पर बैठकर नायडू के बंगले गये। फोटो निकालने का विचार था। लेकिन फोटोग्राफर देरी से आया, इसलिए फोटो नहीं निकलवा सके। नायडूसाहब के साथ गोल-मोलनी देखी। होटल में ६ बजे आये। वहाँ से आदमी खींचते उस गाड़ी (रिक्शे) में बैठकर, पुनगोरीमाहब के बंगले गये। वहाँ से दृश्य बहुत अच्छा दीखता था। मैनेजर बहुत ही प्रेम से मिला। दिन में दृश्य बड़ा ही मनोहर दिखाई देता था। हवा बहुत ठंडी थी।

बंबई ३०-४-१२

जल्दी उठकर हाथ-मुँह धोकर होटल का बिल चुकाया। घोड़े पर बैठकर फोटो निकलवाया। ७-५० की गाड़ी से नेरल के लिए रवाना हुए। रास्ते में वकीलसाहब नायडू वकील मिले। रास्ते में माथेरान का दृश्य बड़ा ही मनोहर था। नेरल पहुँचकर वकीलसाहब के बंगले गए। उनकी स्त्री आदि से मिले। बाद में पूना मेल में बैठकर ११॥ बजे बंबई आये। दूकान पर स्नान-भोजन कर पत्र पढ़े। चर्नीरोड से १-१० की गाड़ी से अंधेरी आये। अमरचंदजी साथ में थे। अंधेरी स्टेशन पर सप्रेजी, वृद्धिचंदजी मिले। बंगले पर आये। सूरजबाई से रामायण पढ़ी। भोजन के बाद खुली हवा में सप्रेजी व वृद्धि-चंदजी से बातचीत की। सप्रेजी पूना के लिए रवाना हुए। व्यासजी का गायन सुना।

१-५-१२

बंबई १२-५ की गाड़ी से गया। दूकान जाकर रामनारायणजी रूइया के यहाँ वगैरह जैन प्रेस के बारे में बातचीत करने गये और वहाँ से खेमा-राजजी के दूकान गये। खेमराजजी को साथ लेकर जयनारायणजी दानी के पास मर्चेंट बैंक में गये। यहाँ गजानंदजी नेवटिया भी थे। दानीजी ने विद्या-लय का जो विधान बनाया, वह सुना। बाद में सर कस्तूरचंदजी को फोन कर दूसरे दिन १०॥ बजे उनके यहाँ एकत्र होने का निश्चय किया। नंद-

सेठजी गाताडिया मिले। उनसे पत्रों के बारे में बात करने को कहा। फिर कुलाबा गया। भुलाभाई के आफिस में देर लगी। वहां से दामोदरदासजी राठी से मिलने बाजार में आये, लेकिन वह घर चले गये थे। ६-३८ की गाड़ी से अंधेरी गया और भोजन कर रामनारायणजी के यहां आया, उनसे जैन प्रेस की बात हुई। गुरुद्वारा की वार्षिकी दी।

२-५-१२

पूज्य रामगोपालजी के पत्र का जवाब और अन्य पत्र लिखे। १०-१० की गाड़ी से रवाना होकर रामनारायणजी का साथ लेकर चर्नीरोड उतरा। वहां से गोकुलदास माधवजी व वल्लभदासजी से मिला। दोनों का बनाया हुआ विधान व विधान का मसौदा पढ़ा। रामनारायणजी ने कहा कि उसे हिंदी में छपवाकर सबकी सम्मति लेनी चाहिए। रामनारायणजी को उनकी दुकान छोड़ अपनी दुकान करीब १२ बजे पहुंचे। बरोरा जैन प्रेस के संबंध में सीताराम सेठ व रामरिखजी से बातचीत की। फिर दूरबीन वगैरे ली। ईश्वरदास जालान के आफिस गये। नारायणदासजी से बरोरा जैन प्रेस का सौदा पक्का किया। वहां से कुलाबा गये। दुकान से टेलीफोन आया कि ननाजवाई डाक्टरनी मिल सकती है, इसलिए उनके यहां गये। वह मिली उससे दवाई ली और अंधेरी आये। नारायणदासजी का कुलाबा से संदेशा आया। उनसे कल मिलने को कहा।

३-५-१२

रामनारायणजीवाले नारायणदासजी आये। जैन प्रेस का सौदा पक्का हुआ। उसकी सौदा-चिट्ठी पर दस्तखत करने को कहा। भोजन कर १२-५ की गाड़ी से बंबई गया। वहां जाकर आदमी भेजे व टेलीफोन कर विद्यालय के लिए चन्दा एकत्र करने के लिए डेप्युटेशन तैयार किया। डेप्युटेशन में १०-१२ व्यक्ति हो गये। पूरणमलजी सिघानिया के यहां गये। काफी चर्चा की। उनकी अनुकूलता दिखाई दी। और भी कई जगह गये। १००२ रुपये मिले। बाद में कुलाबा गये। रामरिखजी से जैन प्रेस लेने की बाबत नरसिंहदासजी को तार दिलाया। बाद में अंधेरी गये। भोजन करके बैठे थे कि

लादूरामजी आ गये। उनसे विद्यालय के डेप्युटेशन की बात हुई। बनारसी नि-मलालजी देवड़ा का व्यवहार ठीक नहीं रहा। रविवार को मिलने का निश्चय हुआ।

४-५-१२

१८-१० की गाड़ी से बंबई गये। नरसिंहदासजी मोहता के मुनीम गीताराम पन, रामरिखजी, अर्जुनसिंह आदि दूकान पर आये हुए थे। रामनारायणजी से जो जीन प्रेस लिया था, वह एक लाख पन्द्रह हजार में नरसिंहदासजी को बेच दिया। कच्ची लिखा-पढ़ी करवा ली। बाद में बुलाया गया, ताराचंदजी मिले। जयनारायणजी का टेलीफोन आया। बहुत देर तक बात हुई। ५-२८ की गाड़ी से अंधेरी गया। रविवार शाम को इष्ट मित्रों को बुलाने और आमरस पूरी का भोजन करवाने का विचार हुआ। रामनारायणजी के यहां से बरोरा जीन प्रेस के कागज आये, वे देखे।

५-५-१२

बंबई १०-४० की गाड़ी से गये। रेल में केदारमलजी लड़िया, मोतीलालजी देवड़ा आदि से विद्यालय-संबंधी बहुत-सी बातें हुईं। चर्नीरोड उतरकर जयनारायणजी दानी के यहां गये। दानीजी बड़े ही सज्जन हैं। उनके साथ मोटर से मामड़िया के यहां महालक्ष्मी गये। बहुत देर तक बैठे। नवरोजजी से वर्धा में बैंक की शाखा खोलने की बातें हुईं। उनके बात जची, पर विचार करके पक्का जवाब देने को कहा। उन्होंने अपना मकान दिखाया। बात-चीत से बहुत नम्रता दिखाई दी। वहां से दानीजी को घर छोड़ दूकान आये। नरसिंहदासजी के आदमी को बरोरा जीन प्रेस के कब्जे की चिट्ठी लिखकर दी। विद्यालय के लिए डेपुटेशन बनाकर माहेश्वरी पंचायत में गये, वहां थोड़े सज्जन मिले। लेकिन उनका अनुकूल अभिप्राय दिखाई दिया। बड़ा ही मुलाहिजे का व्यवहार किया। अंधेरी ५-१२ गाड़ी से गया। गोठ थी, इसलिए रंगनाथजी, रघुनाथभाई, बालुभाई, हीरालाल, हिरजीभाई, ब्रजमोहनजी आदि कई सज्जन साथ आये। आनंद से भोजन किया। जावरे से कामेरी को बुलाने की रंगनाथजी से सलाह की।

जिनकी सेवा-सुश्रुषा होती थी। सस्था को पचीस रुपये प्रदान किये और ६-१० धोती-जोड़े दिये। वहा से ग्राटरोड १३वी गली मे अधो का स्कूल देखा। विद्यार्थियो से लिखवाना, पढवाना, हिसाब, गायन, सिलाई कराकर परीक्षा ली। व्यवस्था और पढाई अच्छी है। जीवन मे पहली बार ऐसी उन्नतिदायक सस्था देखी। बाद मे मायखला का लडकियो का अनाथाश्रम देखा। यहा भी बडा ही उत्तम इन्तजाम था। लडकियो को मोजे बनाना, छापखाने का काम करते देखा। फिर त्रिपाठी के यहा से पुस्तकें खरीदी। रेल मे आज बहुत भीड थी।

६-५-१२

११-१० की गाडी से बबई स्टेशन पर बालुभाई और भगवानदास आये थे उनके साथ चर्नीरोड फर्नीचरवाले के आफिस गये। वहा से उनके फर्नीचर के कारखाने मे गये। फर्नीचर ठीक था। आलमारी का आर्डर दिया। वहा से बदूकवाले की दूकान पर गये। बदूके देखकर दूकान वगैरह देखकर कुलाबा गये। ब्रजमोहनजी के साथ यूरोपियन जौहरी से मिलने गये। वह नहीं मिला। डा बालेस के दफ्तर मे गोविंदरामजी से मिलने गये। वह नहीं मिले। बाद मे जापान बाटन मे थोडी देर ठहरकर व्हाइट वे लेडला गये। वहा से ब्रजमोहनजी ने कुछ खरीदा। ६-७ की गाडी से अधेरी आये। रास्ते मे एक यूरोपियन मिला। उसने अपना वृत्तान्त सुनाया।

१०-५-१२

बम्बई १२-१७ की गाडी से जाकर दूकान मे पत्र देखे। बाद मे [illegible] शार्लिगटन के आफिस मिलने गये। वह नहीं मिले। फिर [illegible] रौलिन के आफिस गये। वह भी नहीं मिले। नागपुर के डी० आर० पटेल मिले, उनसे बाते हुईं। बाद मे कुलाबा गये। [illegible] अमेरिकन मेन को कहा। कुलाबा मे भुगतान के आफिस गये। ६-७ की गाडी से अधेरी आये। रेल मे मारी कपनी का [illegible] मिला। उनको [illegible] की जरूरत थी, उनसे मिलने को ब्रजमोहनजी से कहा और रुई के व्यापार-सबधी चर्चा की।

जिसकी सेवा-सुश्रुषा होती थी। संस्था को पचीस रुपये प्रदान किये और ६-१० धोती-जोडे दिये। वहां से ग्रांटरोड १३वीं गली में अंधों का स्कूल देखा। विद्यार्थियों से लिखवाना, पढवाना, हिसाब, गायन, सिलाई कराकर परीक्षा ली। व्यवस्था और पढाई अच्छी है। जीवन में पहली बार ऐसी उन्नति-दायक संस्था देखी। बाद में भायखला का लडकियों का अनाथाश्रम देखा। वहां भी बडा ही उत्तम इन्तजाम था। लडकियों को मोजे बनाना, छापखाने का काम करते देखा। फिर त्रिपाठी के यहां से पुस्तकें खरीदी। रेल में आज बहुत भीड थी।

९-५-१२

११-१० की गाडी से बम्बई स्टेशन पर बालुभाई और भगवानदास आये थे उनके साथ चर्नीरोड फर्नीचरवाले के आफिस गये। वहां से उनके फर्नीचर के कारखाने में गये। फर्नीचर ठीक था। आलमारी का आर्डर दिया। वहां से बन्दूकवाले की दूकान पर गये। बन्दूकें देखकर दूकान पत्रादि देखकर बुलाबा गये। ब्रजमोहनजी के साथ यूरोपियन ज्योतिषी से मिलने गये। वह नहीं मिला। शा वालेस के दफ्तर में गोविंदरामजी से मिलने गये। वह नहीं मिले। बाद में जापान काटन में थोडी देर ठहरकर व्हाइट वे लेडला गये। वहां से ब्रजमोहनजी ने कुछ खरीदा। ६-७ की गाडी से अंधेरी आये। रास्ते में एक यूरोपियन मिला। उसने अपना वृत्तान्त सुनाया।

१०-५-१२

बम्बई १२-१७ की गाडी से जाकर दूकान में पत्र देखे। बाद में मेस्वानजी सालिसिटर के आफिस किले गये। वह नहीं मिले। फिर हरी सीताराम दीक्षित के आफिस गये। वह भी नहीं मिले। नागपुर के बी० आर० पंडित मिले, उनसे बातें हुई। बाद में बुलाबा गये। विट्ठलवाले को सौ गाठ अमेरिकन लेने को कहा। बुलाबा में भुमान के आफिस गये। ६-७ की गाडी से अंधेरी आये। रेल में माही कपनी का मालिक मिला। उनको गेरेंटेड ब्रोकर की जरूरत थी, उनसे मिलने को ब्रजमोहनजी से कहा और रुई के व्यापार-सबधी चर्चा की।

१४-५-१२

बबई १२-५ की गाड़ी से आया। दूकान पर पत्रादि देखे। किले गया। स्वदेशी बैंक के डायरेक्टर चुन्नीलाल, धरमदास व हृदया से मिले। बैंक की शाखा वर्धा मे खोलने की बाबत विचार हुआ। विचार करके उत्तर देने को कहा। वहा से शा वालेस के दफ्तर गये। ताराचद घनश्यामदासजी के मुनीम गोविंदरामजी से विद्यालय के चदे के लिए मिले। उनकी सम्मति देखी। रामगढ से समाचार आने पर नाम लिखने की कही। कुलावा जाकर ब्रजमोहनजी को साथ लेकर गुलाबचदजी ढड्ढा के यहा गये। वहींपर पक्की रसोई जीमे। ढड्ढा बडे उत्साही और विद्वान सज्जन है। वहा से दानीजी के यहा गये। उन्होने पत्नो की पार्टी दी। विद्यालय की चर्चा होती रही। उनसे बैंक मे भी मिले थे।

१५-५-१२

मुसान कंपनी का बबई से तार आया। बबई आफिस मे बुलाया था। १०-११ की गाडी मे बबई गये। दूकान से आफिस गया। स्कोडासाहब आज मद्रास जानेवाला था। फुलगोरीसाहब से वर्धा एजसी के विषय मे बहुत देर तक बातें होती रही। फुलगोरीसाहब ने अपने कार्य और व्यवहार से प्रसन्नता दिखाई। कुलाबा जाकर बाजार की रगत देखी। ६-७ की गाडी से अंधेरी आये। जाजूजी का रवाना होने का तार आया। सवेरे स्टेशन जाने की व्यवस्था की। आज पूज्य पितामह का वार्षिक श्राद्ध था। भूल से नहीं हो सका, वह अमावस्या को कराने की व्यवस्था की।

१६-५-१२

गर्मी होने के कारण जाजूजी को लाने अमरचदजी को भिजवाने के लिए जल्दी उठा। घड़ी मे २ बजे थे। फिर ध्यासजी से सवेरे तक भजन सुनते रहे। जाजूजी को लेने दादर गया। नागपुर मेल १॥ घंटा देर होने से वापस आकर तर्पण आदि करवाया। जाजूजी के साथ अलेसाहब भी आये। ब्राह्मण को जिमवाकर भोजन किया। जाजूजी से बात कर आराम किया। दादाभाई नवरोजजी के यहा अमरचदजी के साथ कागद (पत्र) भेजे।

सेमरा के मुनीम जगन्नाथजी सेमका भी आये थे। बहुत देर तक बैठे जाजूजी डा० राव के यहां गये। सभा के लिए स्थान का इन्तजाम किया। रेल में दानीजी मिले।

१६-५-१२

अंधेरी से बंबई १०-३६ की गाडी से आया। रेल में हरी सीताराम दीक्षित से विद्यालय-सम्बन्धी बातचीत की। दूकान जाकर सभा के नोटिस भेजे। सभा के लिए मार्केट की जगह मांगी। विद्यालय की नियमावली के प्रूफ आये, सो देखे। चार बजे गोविंदलालजी पित्ती आदि को लेकर सभास्थल पर गये। सर कस्तूरचन्दजी आये। ताराचन्दजी घनश्यामदास के मुनीम गोविंदरामजी आये। सभा का कार्यक्रम शुरू हुआ। कई लोग, चन्दा न देना पड़े इसलिए, कार्य को हानि पहुंचाने का प्रयत्न कर रहे थे, पर परमात्मा की कृपा से आवश्यक कार्य विधिवत् पूर्ण हुआ। कार्य को हानि पहुंचे, ऐसा एक बार मौका आया, पर धीरज और चतुराई से काम संभाल लिया। गोविंदलालजी पित्ती से विद्यालय-सम्बन्धी बात हुई। मरीन लाईन से अंधेरी आना। रेल में गजानंदजी सेक्सरिया मिले।

२०-५-१२

जयनारायणजी दानी व लक्ष्मणदासजी डागा आये। उनसे विद्यालय-सम्बन्धी बातचीत होने पर जाजूजी, ब्रजमोहनजी आदि के साथ भोजन आनन्द से किया। दानीजी व डागाजी १०-४० की गाड़ी से गये। विश्राम किया। जाजूजी अग्रेसाहब से कई विषयों पर वाद-विवाद होता रहा। बंबई ८ बजे की गाड़ी से आये। दूकान जाकर स्वदेशी स्टोर होते हुए कुलाबा गया। दूकान पर यह खबर सुनी कि लक्ष्मीनारायणजी डिस्ट्रिक्ट जज आये। कुलाबा व किले से स्टेशन का सामान लेकर चर्चगेट से चले। गाड़ी में डागाजी, गोकुलदास तेजपालवाला, दादाभाई नवरोजजी के ज्वाई दादीना व पोमवर से बातचीत होती रही। डा० दादीना बड़े ही भले मालूम हुए। उन्होंने माणकबाई को अपने यहां भेजने को कहा।

जाजूजी आये। बर्ई की विविध बातें होती रहीं। जाजूजी को विल (वसीयतनामा) बनाने को कहा। शाम को पू० बालुजी के साथ मनीरामजी के यहां बैठने गये। वहां से गोरक्षण का निरीक्षण करने गये। रात को विद्यार्थीगृह की रसोनी करवाई। सिंगाजी, (बृजमोहनजी गगक) चतुर्भुजजी, चांदमलजी सरावगी (हिंगनघाट वाले) आये।

१-६-१२

पोद्दारों के यहां रामचंद्र बीमार था और जीवराजजी आये हुए थे, इसलिए गया। वहां डेढ़-दो घंटा तक बैठकर कन्या पाठशाला का निरीक्षण करके स्नान और भोजन किया। दुबेजी तहसीलदार आये। टाटा-कंपनी के शेयर्स व कागजों पर दस्तखत किये। मथुराप्रसाद दिया। व्यवहार-संबंधी काम देखा और पोद्दारों के यहां गया। पू० जीवराजजी के साथ कई विषयों पर चर्चा हुई। उनके साथ बगीचे व बंगले आये। जाजूजी आये। कल अमरस के भोजन का निश्चय हुआ।

२-६-१२

भोजन कर म्युनिसिपल कमेटी की मीटिंग में गये। वहां से पोद्दारों के यहां होते हुए घर आये। दूकान का कामकाज देखा। हरिराम मुरारका की स्त्री का देहान्त हुआ था, वहां बैठने गये। शाम को पोस्टमास्टर आये। अमरस-पूड़ी का भोजन बना था। छतपर बैठकर आनंद से स्नेहियों के साथ भोजन हुआ।

३-६-१२

खान बहादुर महम्मद सरवर से मिले। बाद में ववावालों से मिले। म्युनिसिपल कमेटी की मीटिंग में गया। इदिनयाक अली घर आये। कन्ट्राक्टर का काम दिखाया। बद्रीनारायणजी पुलगांव से आये। जीन प्रेस का जमा-खर्च किया। पू० बिरदीचंदजी आज बंबई गये। शाम को रामचंद्र के पास बैठे। बद्रीनारायणजी से बिक्री-पत्र आदि की बात हुई। हरमामलजी व जाजूजी से बातचीत।

१०-६-१२

शिवनारायणजी, सिंगाजी, हरगामलजी आदि आये। शिवनारायणजी ने हरगामलजी से रुपये देने या हिसाब करने को कहा। उनका जवाब अनुचित था। श्यामराव सिरस्तेदार पेंशनर को दीवानजी की जगह रखना चाहते हैं। इसलिए जांच की।

११-६-१२

इश्तियाक अली के बगैर छोटे डिप्टी कमिश्नर के यहा गये। बंबावाले व पु० सुपरिंटेंडेंट से बात करके डिप्टी कमिश्नर के यहा गये। उनसे अच्छी तरह बातचीत हुई। आज 'चरित्र गठन' पढ़ा। लड़के गायन सीखते थे, वहां रात को बैठे।

रामगिरजी आये और बोले कि नोटिस मत दो।

१२-६-१२

बद्रीनारायणजी ने मथुरा से पू० रामगोपालजी के आये हुए पत्र का हाल बताया। इनकी भी मर्जी अलग होने की ही ज्यादा दिखाई दी। बनीधर चेनिया ने मथुरा कुछ नहीं लिखा। बद्रीनारायणजी से भागचन्दजी रामगोपालजी की कई बातें हुई। पोद्दारों के यहा आगी-मेवा[१] देखने गये। वहा से आकर बापट से बहुत देर तक बातचीत होती रही। हरिदास पंत आये। भिडे से श्रीधर पंत के विषय में बात हुई। भिडे विरुद्ध मालूम हुए।

१३-६-१२

बद्रीनारायणजी पुलगांव गये। कन्या पाठशाला, विद्यार्थीगृह का निरीक्षण कर दूकान आये। त्र्यंबक सूबेदार मिले। दोपहर को सीताराम रोडे व कृष्णराव रामप्रताप आये। टाटा कंपनी के कागजों पर दस्तखत किये। रात को करीब ९ बजे भिडे ने आकर बताया कि दामोदर पंत व बंबावाले राय-

---

[१] सगाई के बाद लड़कीवाले लड़के व उसके कुटुम्ब के लिए कपड़े-लत्ते, दागीना देते हैं, उसे आग-मेवा कहते हैं।

बहादुर हुए। खुशी हुई। रास्ते में नारी सदन जाकर मिले। देशपांडे आने-वाले थे। उनसे यहां रास्ते में साथ रहे और बातचीत की।

१४-६-१२

रायबहादुर दामोदर दास रास्ते में मिले। रायबहादुर मथुराप्रसाद के यहां जाकर उनका अभिनन्दन किया। वहां हरिदास भी मिले। आगे आए, उनसे बातचीत की। गुजराती 'मनोविकार' पुस्तक पढ़ी।

१५-६-१२

रामेश्वर जाजूजी से मिले। हरिदास भाई कांग्रेस का हिसाब करने आए। १५१ रुपये की बचत रही। शालिग्रामजी से मारवाड़ी जीन के विषय में बातचीत हुई। शाम को पुस्तक पढ़ी। जाजूजी आये। प्रेम गये।
कालपुर से नया पशु आया, वह देखा।
मारवाड़ी विद्यालय की मीटिंग की। वर्मे, अरे, बापट आये। कमेटी का काम ठीक से हो गया। रामनाथजी, व्रजमोहनजी आये थे।

वर्धा १६-६-१२

हीरालालजी आये। उनसे भांदक[1] में मंदिर के बारे में बातचीत की। १०-२१ की गाड़ी से जीन की व्यवस्था के लिए गये। बद्रीनारायणजी व पालीरामजी साथ थे। वहां जाकर नारायण की मां से बातचीत व भागचंदजी से मिला। पहले तो मीठी-मीठी बातें हुईं, पर बाद में उन्होंने पालूरामजी आदि के लिए अश्लील शब्द कहे। अपने गुरु के लिए भी हल्के शब्द का प्रयोग किया। अहंकार बहुत अधिक था। जीन की व्यवस्था होना असंभव देखा।
मारवाड़ी छात्रालय देखा। ठीक चल रहा है। शाम को वर्धा में पुराने दोस्त रेलवे के पुलिस सब-इन्स्पेक्टर मिले। परशुराम पंत, यत्ते आर्वी जा रहे थे। इसलिए एकत्र १५-२० लोगों ने मिलकर कलेवा किया।

१७-६-१२

के लिए नजुल की जमीन देखने गये। वहां से कर्णिक साहब, चिटन-

[1] चांदा जिले में भांदक (भद्रावती) प्राचीन जैन तीर्थ है। वहां के मंदिर की व्यवस्था हीरालालजी फतेहपुरिया देखते थे।

बीस, रामलाल पांडे डिस्ट्रिक्ट जज से मिले। शिवराम मास्टर आदि से बातचीत करके भोजन व आराम। मथुरा पूज्य रामगोपालजी को पत्र लिखा। बद्रीनारायणजी को बताकर फटमी गांव बेचा था, उसकी रजिस्ट्री कर दी। घर आकर बगीचे गये और टेनिस खेले। जाजूजी से बातचीत की। अमरचंद के पास होने की नारायणराव खरे को खबर भेजी। कवि हेडमास्टर से बातचीत। श्रीधर पंत को बुलाकर जगह १०० साल की लीज पर ३५०० में ली। खर्च उनके जिम्मे।

१८-६-१२

रावसाहब शंकरराव चिटनवीस, वणिक, नामडू वकीलसाहब विद्यार्थीगृह देखने आये। मकान वगैरा सब देखा। केसरीमलजी से बातचीत की। शामराव इंजिनियर से देवली-संबंधी वार्ता की।

नरसिंहदासजी का दिवान कृष्णराव आया। बरोरा जीन प्रेस का बिक्री का मसौदा किया। पालीरामजी बंबई गये। रावबहादुर विनायक मोरेश्वर वेलकर से मिलने स्टेशन गये। वहां बहुत-से अमलदार आये थे। शामराव को मुख्त्यार पत्र दिया, उसकी रजिस्ट्री कराने कचहरी गये।

१९-६-१२

राठीजी की स्त्री ज्यादा बीमार सुनी, इसलिए वहां गये। ज्यादा बीमार थी। बातचीत की। पर बचने की उम्मीद नहीं। घर जाकर जलपान किया। खबर सुनी कि राठीजी की स्त्री गुजर गई। श्मशान गये। वहां से ६॥ बजे जीन में स्नान करके राठीजी के घर गया और मंदिर के कुए पर स्नान किया। श्रीनारायणजी व अमरावतीवाले भंडारी आये। भोजन करके श्रीनारायणजी से अमरावती में बोर्डिंग खोलने की बातचीत। उन्होंने कोशिश करने को कहा। राठीजी के लिए चिंता रही।

२०-६-१२

शिवनारायणजी अमरावतीवाले के साथ बगीचे गये। कलेवा कराकर अमरावती रवाना किया।

भोजन करके अखबार पढ़ते थे कि अमरावती की गोखले सोसायटी के

द्रविड, बापूराव भिड़े, अगाशे वकील आये। उनसे बातचीत के बाद आराम। टाउनहाल में मराठा समाज की सभा थी उसमें जाकर १॥ घंटा बैठा। राठीजी से मिलने हुए घर गया। भोजन के बाद अमृतलालजी से थोड़ी देर बातचीत। अंग्रेजी पद्धति के आफिस में सुधार किया।

२१-६-१२

बगीचे से इस्तियाक अली के बंगले होकर गोरक्षण गये। वहां का काम देखा। रामनारायण को कुछ सूचनाएं दीं। कर्णिकसाहब के बंगले गये। घटाटे के मुकदमे में गवाह के लिए कचहरी गये। बाररूम में बैठे रहे। गवाही नहीं हुई, वापिस आया।

जीवराजजी पोद्दार से मिलकर स्कूल बोर्डिंग-सम्बन्धी विविध चर्चा। उन्हें बगीचे पहुंचाकर राठीजी के यहां गये। वहां से बाजार की इमारत तैयार हो रही थी वहां एक घंटा ठहरे। आगे का काम कैसे करना, उसका निश्चय किया। विद्यार्थी-गृह गये। कई सूचनाएं दीं। जाजूजी से बहुत-सी बातें हुई।

२२-६-१२

बगीचे में जाकर बंबई से जो डाक्टरनी आनेवाली थी उसकी व्यवस्था की। बोर्डिंग के लड़कों के चालचलन के विषय में बारीकी से जांच की। गजानंद, लीलाधर, नेमिचंद, लक्ष्मीनारायण, केदार आदि के साथ बगीचे गये। बाई[1] और आराध्ये से बातचीत की। रात को मंदिर जाकर भजन किया।

२३-६-१२

कुछ लड़कों की फिर परीक्षा ली। भिड़े रविदास पंत के चन्दे के लिए आये। नवरोजजी के दामाद दादीना से मिलने प्रेस में गये। शिवनारायण-जी से जावरा जीन के विषय में बातचीत। लक्ष्मीनारायण बजाज को समझाया। अत्रे व जाजूजी से बातचीत की। बोर्डिंग की मासिक सभा के

---

[1] कन्या विद्यालय की अध्यापिका।

आये। लड़कों के नाम लिखवाने कन्या स्कूल होकर सरकारी स्कूल गये। राठीजी के यहां जातिभोज था। वहां गये। दवाखाने गये। ५० रुपये राठीजी से व एक सौ रुपये अपनी ओर से बीमार के इलाज के लिए अर्पण किये। ईश्वरदास तलेगाववाले काच का सामान[1] लेकर आये थे, उसे देखा। उस विषय में बातचीत की। फिर राठीजी के घर गये। वापस आकर तलेगाववालों को भोजन करवाया। रात को गर्भाधान के लिए शास्त्रोक्त हवन किया। विद्यार्थी-गृह में गये। आज २ बजे सोये।

३-७-१२

बगीचे में ईश्वरदासजी से बातचीत की। हीरालालजी ओसवाल के रुपये के विषय में कहा। ब्राह्मण-भोजन था। भोजन कर आराम करना चाहते थे कि शिवनारायण मिश्रजी, संपादक 'मारवाड़ी' नागपुर, अमरचंदजी के साथ आये। उन्हें विद्यालय, कन्या पाठशाला आदि बताये। शाम को बगीचे जाजूजी भी आये। टेनिस खेले। घर आकर मंदिर गये। संपादकजी विद्यार्थी-गृह के निरीक्षण के लिए गये। उनकी उचित व्यवस्था कर दी। जाजूजी के साथ बातचीत। रिपोर्ट छपवाने का निश्चय हुआ।

४-७-१२

निद्रा से उठकर नीचे आये। उसके पहले ही संपादकजी स्टेशन चले गये थे। तबीयत आज कुछ भारी मालूम दी। बद्रीनारायणजी की किताब से कुछ हिस्सा लिखा।

५-७-१२

बद्रीनारायणजी धामणगाव जाने के लिए दूकान आये। दत्तूजी, पन्नालाल आये उनसे बातचीत की। गोपालप्रसाद नरहर आये, उन्होंने चूड़ामणराव के विषय में सारा हाल सुनाया।

६-७-१२

जाजूजी से बातचीत के बाद दामोदर पंत खरे के यहां इश्तियाक अली को

[1] लो० तिलक ने स्वदेशी माल के उत्पादन व प्रचार के लिए 'पैसा-फंड' के नाम से एक फंड खोला और इस उद्योग की स्थापना की।

विषय में समझा रहे थे, सुना। विद्यार्थियों को सवेरे पवनार ले जाने का निश्चय किया। उनके स्नान आदि का निजी प्रबंध किया। पुजारी को अलग होने को कहा। अमरचंदजी से बातचीत। रामनाथजी, हरिकिसनजी, गिगाजी आये।

२९-६-१२

अमरचंदजी को साथ लेकर घोड़े के तांगे से पवनार गये। लड़के पैदल गये। नदी का दृश्य मनोहर था। विद्यार्थी खूब तैरे और नहाये। वापस आते समय म्युनिसिपल प्राइमरी स्कूल की मीटिंग में गये। कन्या पाठशाला का स्कूल देखते हुए घर आये। भोजन-आराम के बाद माहेश्वरी (इंदौर) की टीका की पुस्तक देखी। आगे काम किस प्रकार चले, इस विषय में बातचीत और मथुरा पत्र लिखा। शाम को बाररूम की तरफ से नायडूसाहब के यहां ढवावाले, खरे, इश्तियाक अली को पार्टी थी, वहां गये। कई सज्जन मिले। नागपुर के मारवाड़ी-पत्र के संपादक को पत्र लिखा। बारिश जोर से आई। विद्यार्थियों से बातचीत। राजाराम पंत, दीक्षित, साठे से वार्ता।

३०-६-१२

रात को बारिश १ इंच ६१ सेंट हुई। ओले भी गिरे। राठीजी के यहां गये। वहां से घर आकर पत्र देखे व आराम किया। फिर राठीजी के यहां ब्राह्मण-भोजन था। वहां गये। भिड़े मास्टर ने लीलाधर का हाल कहा। मारवाड़ी विद्यालय की सभा हुई। अत्रे, बापट, जाजूजी आदि उपस्थित थे। रात को अंग्रेजी आफिस के कार्य का निरीक्षण किया। जन्मपत्री देखी। १। बजे सोया।

१-७-१२

बोहनी शुरू हुई। गंगाबिसन को समझाकर प्रतिज्ञा करवाई। मारवाड़ी विद्यालय, कन्या-पाठशाला, लायब्रेरी का निरीक्षण किया। जाजूजी के साथ बैठकर नियम वगैरा कई बातों का निर्णय किया।

२-७-१२

रामनाथजी व उनके संबंधी दो लड़कों को विद्यार्थी-गृह में भरती कराने

आये। लड़कों के नाम लिखवाने कन्या स्कूल होकर सरकारी स्कूल गये। राठीजी के यहां जातिभोज था। वहां गये। दवाखाने गये। ५० रुपये राठीजी से व एक सौ रुपये अपनी ओर से बीमार के इलाज के लिए अर्पण किये। ईश्वरदास तलेगाववाले काच का सामान[1] लेकर आये थे, उसे देखा। उस विषय में बातचीत की। फिर राठीजी के घर गये। वापस जाकर तलेगाववालों को भोजन करवाया। रात को गर्भाधान के लिए शास्त्रोक्त हवन किया। विद्यार्थी-गृह में गये। आज २ बजे सोये।

३-७-१२

बगीचे में ईश्वरदासजी से बातचीत की। हीरालालजी ओसवाल के रुपये के विषय में कहा। ब्राह्मण-भोजन था। भोजन कर आराम करना चाहते थे कि शिवनारायण मिहजी, संपादक 'मारवाडी' नागपुर, अमरचंदजी के साथ आये। उन्हें विद्यालय, कन्या पाठशाला आदि बताये। शाम को बगीचे जाजूजी भी आये। टेनिस खेले। घर आकर मंदिर गये। संपादकजी विद्यार्थी-गृह के निरीक्षण के लिए गये। उनकी उचित व्यवस्था कर दी। जाजूजी-के साथ बातचीत। रिपोर्ट छपवाने का निश्चय हुआ।

४-७-१२

निद्रा से उठकर नीचे आये। उसके पहले ही संपादकजी स्टेशन चले गये थे। तबीयत आज कुछ भारी मालूम दी। बद्रीनारायणजी की किताब से कुछ हिस्सा लिखा।

५-७-१२

बद्रीनारायणजी धामणगाव जाने के लिए दूकान आये। दत्तूजी, पन्नालाल आये उनसे बातचीत की। गोपालप्रसाद नरहर आये, उन्होंने चूडामणराव के विषय में सारा हाल सुनाया।

६-७-१२

जाजूजी से बातचीत के बाद दामोदर पंत खरे के यहां इश्तियाक अली को

[1] लो० तिलक ने स्वदेशी माल के उत्पादन व प्रचार के लिए 'पैसा-फंड' के नाम से एक फंड खोला और इस उद्योग की स्थापना की।

पार्टी थी, वहा गये। शतरंज, गपशप व लोगों का व्यवहार देखकर आनंद हुआ। पार्टी मे देवराव की पूरी-पूरी फजीहत की गई। सरेसाहब के आग्रह के कारण चिवडा व फल लिये। अलग मे दुबे तहसीलदार से गप्पें लगाई।

७-७-१२

बगीचे मे घर आकर नित्यकर्म से निवृत्त हो जाजूजी के यहा गये। मजदूरों की हाजरी देखी। स्कूल में नाली डालने की खबर आई, वहा गये। रा- साहब व देवीप्रसाद से मिले। उन्होने नाली दूसरी ओर डालने की व्यवस्था करने को कहा। बाद मे देवीप्रसाद साहब घर आये, क्योंकि उन्हें सब दस्ता- वेज दिखानी थी। म्युनिसिपल स्पेशल बाजार मे ईदो के विषय में मीटिंग थी, वहा गये। वह काम होने पर इस्तियाक अली, रामलाल पाडे व बर- मा से वार्ता। गजानन्द विद्यार्थी से बातचीत की।

८-७-१२

बद्रीनारायणजी पुनगाव रहने के लिए गये। बवई के रुपये खाते का हिसाब ठीक कर जमाखर्च करवाया। दीप रह गया। रामनारायणजी ने विषय में बवई वृद्धिचन्दजी वैद्य को पत्र दिया। आज से विद्यार्थियों का गायन आरंभ हुआ। कुछ देर सुनते रहे।

९-७-१२

इस्तियाक अली मैनेजरी आये। बवई के हिसाब का जमाखर्च करवाया। विद्यार्थियों से बातचीत। वैनाथ वगैरा आये। बवई से जो सुविधा का [illegible] शुरू हुआ, वह आया। उसे पढ़ा। परमदास विद्यार्थी से रामनारायणलाल पालीवाल का बहुत-सा हाल सुना। स्कूल का [illegible] बमिस्टरसाहब आनेवाले थे, इसलिए लडको को गायन की [illegible] की गई। सुनते रहे।

१०-७-१२

[illegible] मैं पी गर गया। उसका काम ज्यादा था, इसलिए उसका [illegible] हुआ। [illegible], बड़ा गया। १० बजे तक बड़ा रहे। ११ बजे [illegible] । [illegible] से [illegible] आया, उससे बातचीत। [illegible]

सुबह ४ बजे विमलीलामजी गाडी की उम्मीद की दरख्वास्त के लिए आया। जाने की इजाजत दी। बगीचे में आनन्दराम पोस्टमास्टर साहब के यहां गए। उनका लड़का बीमार था। म्युनिसिपल सेक्रेटरी से भी मिला। घर आकर दूध लेकर जाजूजी के यहां गये। वहां से ट्रेन से गया। कमिश्नर साहब को मकान की जगह का मौका दिखाया। सरकारी हाई स्कूल व बोर्डिंग देखा। इन्स्पेक्टर अली आये।

मेल पर गये कमिश्नर आये उनसे मिले। घर पर विश्वम्भरनाथ दुबे सूबेदार आये। विठोबा थोड़से पाहणो रुपया देकर मैजिस्ट्रेट बनने की इच्छा से आया। उसकी मूर्खता पर आश्चर्य हुआ।

१२-७-१२

बर्ड का हिसाब देखा। सुना कि मानकबाई डाक्टरनी के लड़के को बुखार आया। इसलिए प्रेस में गया। बात हुई। वहां से तांगे से बबावाला के यहां गया। वे नहीं मिले। रास्ते में घोड़ा बदमाशी करने लगा इसलिए बायगार की सड़क से काफी दूर निकल गये। रात हो गई। घोड़ा भी थक गया। कमिश्नर के चपरासी आये। उनसे हाल पूछा।

१३-७-१२

बबावाले के यहां होते हुए डिसपेंसरी व गोविंदरावजी का घर देखते हुए आये। जाजूजी के लड़के के सम्बन्ध में बातचीत की। मालूम हुआ कि आगे जोखम नहीं रहेगी। ब्राह्मणपुर का विद्यार्थी बंसीलाल बीमार था, उसे देखने डाक्टर के यहां गये। कमिश्नर चैपमैन से मिले। वह कल ९ बजे

विद्यार्थी-गृह आदि देखने आवेंगे। विद्यार्थी-गृह तथा जाजूजी के घर होते हुए बगीचे गये। बारिश हुई।

१४-७-१२

जाजूजी खरेसाहब के यहां होते हुए मंदिर व बोर्डिंग गये। वहां की सफाई देखी। कमिश्नर चैपमैन ६ बजे आये। बड़े लायक आदमी मालूम दिये। सराय भी देखी। जाजूजी के साथ भोजन व आराम किया। सुना कि केशवदेव बीमार है, वहा गया। नये हाई स्कूल में गये। शाम को घर पर इश्तियाक अली स्कूल के काम के लिए आये।

१५-७-१२

आज केडाक हाईस्कूल का उद्घाटन था। उसका काम करते रहे। पेड़े आदि का प्रबन्ध कर हाई स्कूल जाकर घर आये। चाबी का वजन किया, वह १ तोला साढे आठ आनी भार हुआ। जल्से के लिए ३॥ बजे गये। जल्सा ४ बजे शुरू हुआ। पहले रिपोर्ट पढी गई। कमिश्नरसाहब बोले, कामासाहब ने अंग्रेजी में उनका आभार माना। बाद में हमने हिन्दी में सबका आभार माना। वहा आये हुए प्रतिष्ठित लोगो से बातचीत की। सर गंगाधरराव चिटनवीस, रा० ब० पंडित, श्री ठाकुर, जोगेश्वर, बापू बोबनकर आदि सज्जनों को मन्दिर, मकान दिखाया व विद्यार्थियों से मिलाया। विद्यार्थीगृह के नियमादि देखकर वे प्रसन्न हुए। उनका स्वागत ठंडाई व पान से किया। बंबावाले भी आ गये थे। उन सबको स्टेशन पहुचाकर आये।

१६-७-१२

आज कमिश्नर चैपमैन व स्कूल इन्स्पेक्टर इव्हान्स मारवाडी विद्यालय तथा मारवाडी कन्या पाठशाला का निरीक्षण करने आनेवाले थे। प्रबन्ध करवाया। वे लोग आये। स्कूल तथा कन्या पाठशाला देखकर वे खुश हुए। बहुत देर तक बैठे। रा० ब० खरे, अत्रे, बापट, जाजूजी, हैडमास्टर आदि उपस्थित थे। उनके चले जाने पर जाजूजी के साथ बातचीत। आज ब्रज-मोहन ब्राह्मण का देहान्त हुआ।

२२-७-१२

मचावाला, डी० एम० पी० व डिप्टी कमिश्नर पाठकसाहब के यहां गया। बहुत देर तक अनेक विषयों पर बातें होती रहीं। बंबावाला, मरे व इश्तियाक अली के निमित्त से फूट पार्टी ६ बजे थी। उसका प्रबंध किया। पार्टी में बहुत-से लोग आये। श्री पाठक भी आये। पार्टी आनंद के साथ समाप्त हुई। जाजूजी के यहां गये। कई तरह की बातें हुईं। सराय के लिए नायडूसाहब के सामने की जमीन का विचार किया। वहां से आकर बोर्डिंग गये। ११ बजे सोया।

२३-७-१२

सवेरे स्टेशन पर इश्तियाक अली से मिला। आज मर डागा बडनेरा से हिंगनघाट जानेवाले थे, उनसे स्टेशन पर मिला। बहुत देर तक बर्ड विद्यालय तथा अन्य विषयों पर बातचीत की। बाद में जाजूजी भी आ गये थे। घर आकर मारवाडी विद्यालय गया। वहां कुछ सामान आनेवाला था, वह देखा।

श्रीनिवास राव नायडू आये। उनसे 'नीतिमान मनुष्य का असली कर्तव्य क्या है ? इस विषय पर काफी देर तक चर्चा होती रही।

२५-७-१२

बगीचे से घर आये। स्नान-पूजन कर भोजन किया। म्युनिसिपल कमेटी में जाना चाहता था, पर कमेटी की मीटिंग की तारीख दूसरी निश्चित होने से नहीं गया।

२७-७-१२

सवेरे ४।।। बजे के करीब उठे। बगीचे जाकर मारवाडी विद्यालय गये। पाठशाला की जांच की। बद्रीनारायण पुलगांव से आये।

१।।। बजे कन्या का जन्म हुआ।

इंस्पेक्टर घूस लेता है। उसके विषय में बद्रीनारायण, रामरिखजी, बसीजी से बातचीत।

शाम को भागीरथदासजी व जाजूजी आये।

२८-७-१२

रतन भुवान का बड़ा मैनेजर फुलगोंगी कलकत्ते से बम्बई आ रहा था। उनका तार आया। स्टेशन पर जाकर मिले। बारिश जोर से हो रही थी। रात को दूकान-सम्बन्धी कामकाज देखा।

२९-७-१२

विद्यार्थियों को तैरने की तीव्र इच्छा थी, इसलिए अपने सामने तैरने की व्यवस्था की। जीन ने पुल की जगह देखकर घर आये। भोजन कर दूकान-सम्बन्धी काम किया। शाम को इंजिनियर आया, उसका मसौदा बनाया।

३०-७-१२

बगीचे से आकर जाजूजी के यहां गये। सनावणी का जमाखर्च करवाया। स्नान भोजन के बाद वहीं पर व्यवहार का काम करते रहे। शाम को बोर्डिंग के विद्यार्थियों से बातचीत। माणकबाई के दोनों लड़कों से बातचीत की।

३१-७-१२

भोजन के बाद घटाटे के मुकद्दमे में गवाही थी, इसलिए कचहरी गये। २ घंटे तक वकीलों की रूम में बातें करते रहे। गवाही हुई, घर आये। तुकाराम पन घटाटे का आम मुख्त्यार आया। उसे उनका हिसाब बताया व समझाकर नक्की किया। माणकबाई दादीमा से हिंद पितामह दादाभाई नवरोजजी के जीवन-निर्वाह के बाबत बहुत देर तक बातें हुई।

१-८-१२

स्नान, भोजन, व्यावहारिक कार्य, पत्र तथा जमाखर्च करता रहा। जाजूजी के यहां गया। ४ बजे प्रेस जाकर दरवाजा देखा। रास्ते में श्रीनिवास राय नायड़ मिले। टाउन हॉल के पीछे टेनिस कोर्ट देखने गये और खेले। पेपर तथा 'चरित्र गठन' पुस्तक पढ़ी।

अमृतलालजी चक्रवर्ती की
व्यवहार किया। माणकबा
उन्होंने मेरे लिए दवाई म

१८-८-१२

म्युनिसिपैलिटी की स्पेशल सभा थी, लेकिन स्थगित रही। पोद्दारो के बगीचे गये। जाजूजी, अन्ने व लडको को तैरते देखा। वहा से बालूजी के यहा गये। वह आज हरिद्वार से आये थे। वहा के लोगों आदि विषयों पर बातचीत हुई।

शिवदत्त राठी की औरत गुजर गई, वहा बैठने गये। बालूजी के पास फिर गये। करीब २ घंटे बैठे। बगीचे जाकर टेनिस खेली।

बालूजी के यहा फिर गये। वहां से सेगाववालो के पास गये।

मुरली को छोडने को कहा। उन्होने कबूल किया। रात को हरिकीर्तन सुनने गये। नागपुर के बैंक का सदरवाला ओसवाल दलाल अमोलक के साथ मिलने आया।

१६-८-१२

डिसोजा से बीमा की बातचीत की। बंबई का जमा-खर्च करवाया। पैर के अगूठे मे पत्थर गड गया था, वह निकलवाया।

सोमवार को उपवास था, सो भोजन किया।[१]

२२-८-१२

मेल पर स्टेशन गये। ब्रजमोहनजी जाजोदिया व प० वृद्धिचन्दजी आये। ठाकुरसाहब मिले। भोजन के बाद जाजूजी व वृद्धिचन्दजी धामणगाव गये। डाकगाडी मे भुसावल के फुलगोरीसाहब बबई जा रहे थे। उनके साथ धामणगाव तक गया। वहा दामोदरदासजी राठी, जाजूजी आदि के साथ 'मारवाडी विद्यार्थी-गृह' का निरीक्षण किया। भागचन्दजी मिले। बाद मे वर्षा आया। राठीजी जाजूजी के साथ घर गये। जाजूजी को आर्वी का तार आया, इसलिए मिलने गये। राठीजी को विद्यार्थी-गृह दिखाया। राठीजी [illegible] के यहां भोजन किया।

१. [illegible] महीने के सोमवार को अक्सर लोग व्रत रखते हैं और एक [illegible] हैं।

२३-८-१२

सवेरे दामोदरदासजी राठी व भरतीचन्दजी के साथ बगीचे गया। राठीजी विद्यार्थी-गृह, वर्धा को स्थायी ब्याज से चलाने के लिए रकम देंगे। इसका विचार कर उत्तर देने को कहा। मारवाड़ी स्कूल, कन्या पाठशाला आदि का निरीक्षण किया। राठीजी को ७॥ बजे की गाड़ी से रवाना किया। पूनमचन्दजी के घर गये। बापूजी से बातचीत। कुशालचन्दजी के यहां गये। मेलाबरसाती के काम से बगीचे गये, गोविन्दराम साथ था।

वर्धा-धामणगांव २४-८-१२

१०-४२ की गाड़ी से धामणगांव गया। दामोदरजी राठी भी नागपुर से उसी ट्रेन से आये। रामगोपालजी से बातचीत। भागचन्दजी से स्वयं कई तरह की बातें हुईं। शाम की गाड़ी से ब्रजमोहनजी के साथ वर्धा आया। पुलगांव स्टेशन पर शालिग्रामजी मिले।

जाजूजी आये। उनसे, दामोदरजी राठी ने २११०१ रुपये देकर ब्याज से विद्यार्थी-गृह की आय के बाबत जो बात की थी, उस विषय की चर्चा की।

वर्धा, २५-८-१२

विद्यार्थियों की कुश्ती देखी। फूलचन्दजी के यहां गये। शालिग्रामजी आदि वहां आये थे। शालिग्रामजी को भोजन के लिए बुलाया। भोजन किया। पैसा फंड फैक्टरी से जो चाय का सामान आया वह देखा। अच्छा था। बेदार विद्यार्थी की जांच की। झूठा व गुन्डा है। बापूजी की दूकान पर गये। वहां शालिग्रामजी से बातें होती रहीं। रामनाथजी के बगीचे गये। ठाकुरसाहब व उनके दामाद से वार्ता हुई।

२६-८-१२

शालिग्रामजी से मिलते हुए बगीचे गये। स्नान व भोजन के बाद फूलचन्दजी के यहां ब्राह्मण-भोजन में गये।

नागपुर से वामनराव कोल्हटकर व रावबहादुर पंडित आये। बहुत देर तक बातचीत हुई। फूलचन्दजी के यहां से रुक्मानन्द के यहां लक्ष्मणगढ़ मोसाला

२३-८-१२

सवेरे दामोदरदासजी राठी व ब्रजमोहनजी के साथ बगीचे गया। राठीजी विद्यार्थी-गृह, वर्धा की शाखा ब्यावर में खोलने के लिए रकम देंगे। इनका विचार कर उत्तर देने को कहा। मारवाड़ी स्कूल, कन्या पाठशाला आदि का निरीक्षण किया। राठीजी को ४॥ बजे की गाड़ी से रवाना किया। फूलचन्दजी के घर गये। बाबूजी से बातचीत। मुक्तानन्दजी के यहां गये। नेणावटाजी के बाग से बगीचे गये, गोविंदराम साथ था।

वर्धा-धामणगांव २४-८-१२

१०-५८ की गाड़ी से धामणगांव गया। दामोदरजी राठी भी नागपुर से उसी ट्रेन से आये। रामगोपालजी से बातचीत। भागचन्दजी से स्वतन्त्र कई तरह की बातें हुईं। शाम की गाड़ी से ब्रजमोहनजी के साथ वर्धा आया। पुलगांव स्टेशन पर शालिग्रामजी मिले।

जाजूजी आये। उनसे, दामोदरजी राठी ने २११०१ रुपये देकर ब्यावर में विद्यार्थी-गृह की शाखा के बाबत जो बात की थी, उस विषय की चर्चा की।

वर्धा, २५-८-१२

विद्यार्थियों की कुश्ती देखी। फूलचन्दजी के यहां गये। शालिग्रामजी आदि वहां आये थे। शालिग्रामजी को भोजन के लिए बुलाया। भोजन किया। पैसा फंड फैक्टरी में जो काच का सामान आया वह देखा। अच्छा था। केदार विद्यार्थी की जांच की। झूठा व धुन्ना है। बालूजी की दूकान पर गये। वहां शालिग्रामजी से बातें होती रहीं। रामनाथजी के बगीचे गये। ठाकुरसाहब व उनके दामाद से वार्ता हुई।

२६-८-१२

शालिग्रामजी से मिलते हुए बगीचे गये। स्नान व भोजन के बाद फूलचन्दजी के यहां ब्राह्मण-भोजन में गये।

नागपुर से वामनराव कोल्हटकर व रावबहादुर पंडित आये। बहुत देर तक बातचीत हुई। फूलचन्दजी के यहां से रुक्मानन्द के यहां लक्ष्मणगढ़ गोशाला

स्टेशन पर पू० रामगोपालजी को लेने गये। वह आये, भोजन कर उन्हें मन्दिर ले गया। वहां भजन आदि सुनाया। उन्होंने भागचन्दजी के विषय में बातें कहीं।

६-६-१२

घर पर वेलवर्ड्स की जांच की। गाडोदी के पत्र का संशोधन किया। पू० सेठजी से वार्ता व उनको घर का भाग दिखाया। बगीचे गये। पू० रामगोपालजी ने बगीचे में प्रश्न पूछे। घर आकर भोजन किया और छत पर टहला। कई तरह की बातें हुईं। भागचन्दजी के विषय में बहुत-कुछ कहा। नीचे आये और कई प्रकार की बातें हुईं। बाद में कविताएं सुनीं। विद्यार्थियों को रात को देखने गये। सो गये थे।

७-६-१२

पू० रामगोपालजी से वार्ता। आज कृष्णराव से गरम बातचीत हुई। दत्तजी व रमानन्दजी आये, जीन की पाती (हिस्सा) की बोली (नीलाम) के लिए। शाम को मुन्नालालजी बालूजी के साथ बालाजी-मन्दिर गये। बालूजी की दुकान होकर पू० रामगोपालजी के साथ बगीचे गये। घर आकर भोजन किया। नाटक-कम्पनी के मैनेजर के आग्रह से नाटक देखने गये। प० वृद्धि-चन्द्रजी साथ में थे। 'प्रवत योगिनी' व 'नारायणराव पेशवा की मृत्यु' देखा। पार्ट में गुमेरसिंह व दामो का काम अच्छा था। विटनवीग साहब घर आये थे। २ बजे गाडी देकर भेजा। विद्यार्थी-गृह देखा। निरीक्षण के बाद शयन।

८-६-१२

बगीचे में जाजूजी के यहां गया। प० चन्द्रिकाप्रसाद आये। उनके साथ रामगोपालसाहब के यहां गये। उनके लडके का हाथ टूट गया था, इसलिए करीब १ घंटा बातचीत होती रही। मानमल सरावगी फुलगांव से आया। उससे जैन प्रेम-सम्बन्धी वार्ता हुई।
महाराष्ट्री पण्डित व रामनारायणजी का शास्त्रार्थ बहुत देर तक होता रहा। रमानन्द, भगवानदास व दत्तूजी के साथ विनोद की बातें होती रहीं।

कुछ देर तक कविता आदि पढ़ते रहे।

९-९-१२

पोद्दारों के यहा गया। वहा वातचीत हुई। पू० रामगोपालजी के यहा वार्षिक श्राद्ध था। इसलिए ऊपर की रसोई में जीमे। शिवनारायणजी आये। जावरा जीन का फैसला करने के लिए पचों की नियुक्ति की। दत्तूजी व जाजूजी जो निर्णय दे, वह मान्य करने के बावत चिट्ठी लिखी गई। रामरिख आये। पोद्दारो के यहा होकर वगीचे गये।

१०-९-१२

आज पोले[१] का त्यौहार था, इसलिए बैल नहीं जोते गये। संग्राम गाडी से वगीचे जाकर आया। कुछ लिखा, बाद मे स्नान, पूजन व भोजन किया और जाजूजी के यहा गया।

विद्यार्थी-गृह की कमेटी को कपास की एक गाडी व रुई बोझा पर एक आना लाग धरमादा के रूप मे देना निश्चित करके दस्तखत किये। मानमल सरावगी ने १०० रुपये साल, दस वर्ष तक, देना निश्चित कर दस्तखत किये। पोद्दारो के यहा गये। बातचीत की। घर आये। पू० रामगोपालजी से बातचीत हुई। जाजूजी आदि भी आये। शाम को बैलों का पोला देखकर आये। बैलो को इनाम आदि दिलाया। रात को स्कूल मे पढ़ने गये।

११-९-१२

डिप्टी कमिश्नर पाठक से मिलने गये। बहुत-सी बातें हुई। दुबे तहसीलदार को घर पहुचाकर आये। शाम को लड़को का 'पोला' भरा था, वहा गये। भोजन पोद्दारो के यहा किया। जाजूजी व विरदीचदजी से वार्ता और वालाजी मन्दिर मे सनातन धर्म सभा की स्थापना हुई, उसके अधिवेशन में गये।

---

१ महाराष्ट्र में बैलों का त्यौहार, जिसमें बैलों को सजाकर एकत्र करते हैं और उनकी पूजा की जाती है। बाद में उनमें दौड़ की प्रतिस्पर्द्धा भी होती है।

देवन की मर्दंग देखने गया। ठीक थी।

१२-६-१२

नये जीन प्रेस के कार्य का निरीक्षण किया। नाटीजी से वार्ता। व्यवहार-कार्य देखा। आनन्दराव मोघे आये। बैंक-सम्बन्धी बातें।

पू० रामगोपालजी से वार्ता। उन्होंने कुछ जमा-खर्च करवाये। उनको कुछ सलाह दी। वे दिखलाईं, तब ध्यान में आईं।

कैंप में मुकदमे थे, वहां गये।¹

डाक्टर गोविन्ददासजी की लड़की मोती, गंगा आदि से मिले। वल्लभदासजी के मुनीम सुजानमलजी से जाइंट व म्युनिसिपल-सम्बन्धी बातचीत। पू० रामगोपालजी के साथ पोद्दारों के बगीचे जाना। जीवराजजी विरदीचंदजी सीताराम मगनचंदजी आदि से वार्ता।

१३-६-१२

जाजूजी के यहां होते हुए पोद्दारों के यहां गया। पू० रामगोपालजी के साथ वार्ता। पू० जीवराजजी आये। म्युनिसिपैलिटी के मुकदमे थे, उनके बारे में बातचीत। पू० रामगोपालजी के अकेले व साथ में तीन-चार तरह के फोटो खिचवाये। भिडे आदि से बातचीत।

१४-६-१२

पू० रामगोपालजी के पेट में दर्द था, इसलिए उनके पास बैठे। उनका जाने का विचार स्थगित रखा। जीवराजजी से बहुत-सी बातें। उनसे लाग (चन्दा) कबूल करवाई। उनको व सीताराम को विद्यार्थियों से मिलाया। तालाब में पेटी बांधकर तैरे। पोद्दारों के बगीचे में गोठ जीमे।

नागपुर १५-६-१२

पैसेंजर ट्रेन से नागपुर गये। माहेश्वरी सभा की बैठक थी। कालेज-विद्यार्थी, विपनबाबू, बैजनजी, जमनाधरजी आदि से वार्ता। १२ बजे रात को वर्षा आया।

¹ श्री जमनालालजी उन दिनों आनरेरी मजिस्ट्रेट थे। अतः कोर्ट में जाकर मुकदमे किया करते थे। उसीका यह उल्लेख है।

१६-९-१२

पू० रामगोपालजी से बातें। निरंजन राठी आया, उससे बातें। सीताराम पोद्दार के साथ भोजन किया। पू० रामगोपालजी ने आगे का सुनाना लिया। प्रेम तो बहुत दिखलाया, पर पहले जैसा काम नहीं हुआ। वर्धा की नई दुकान की देख-रेख आती रही। मेल से उन्हें स्टेशन पहुंचाया। बड़े प्रेम से पुलगाव के लिए विदा हुए। पूज्य जीवराजजी घर आये। उनसे बात-चीत। राठीजी से बातें।

वर्धा व पुलगांव १७-९-१२

जाजूजी से एक मसविदा बनवाया। मृत्यु-पत्र का जो मसविदा पू० राम-गोपालजी ने संक्षिप्त कहा था, उसको लेकर पुलगाव बुलाया था। मसविदा लेकर पुलगाव गये। मसविदा पढ़कर सुनाया, उन्हें बहुत पसंद आया। सबेरे वर्धा आकर रजिस्टर करने को कहा।

निवृत्त राठी, दगडूजी आदि को हिसाब का निकाल करने को कहा। राठीजी को माधोजी का जमा-खर्च कर खाता उठाने को कहा। हीरालालजी ओसवाल की तरफ हमेशा चार हजार रुपये रखने को कहा।

वर्धा १८-९-१२

पू० रामगोपालजी व बद्रीनारायणजी पुलगाव से आये। उन्हें जाजूजी के यहा ले गये। मृत्यु-पत्र का मसविदा पू० रामगोपालजी ने जाजूजी को बताया। जाजूजी ने उसे अन्तिम रूप से तैयार किया। घर आकर भोजन किया और मसविदा को अच्छे कागज पर लिखा। रजिस्ट्रार के आफिस में गये। कानून देखकर रजिस्टर किया।

पू० रामगोपालजी से बहुत-सी बातें हुई। उन्होंने प्रसन्नता दिखाई। बोर्डिंग मे पुलगाव, वर्धा, देवली के गाडी-बोझा पर हमेशा लाग देने का सहर्ष कबूल किया। रात की गाडी से पुलगाव गये। श्रवणलालजी का व्याख्यान सुना। जाजूजी व बिरदीचंदजी से बातें।

वर्धा व धामणगांव १९-९-१२

बगीचे मे प० श्रवणलालजी से बातें। विद्यार्थी-गृह गया। घर आया।

स्नान-भोजन कर विरदीचंदजी के यहां गया। बात हुई।
मेल से पुलगांव गया। पू० रामगोपालजी उसी गाडी से धामणगांव जा रहे थे, इसलिए उनके साथ धामणगांव जाते हुए बातें हुईं। बहुत प्रसन्नता दिखलाई।
धामणगांव में भागचंदजी व दुलीचंदजी की माता से बातें। धामणगांव से वापस आते समय इन्स्पेक्टर व पोस्टमास्टर से वार्तालाप। वापस वर्धा आये। बंसीधर हरलालका व अमृतलालजी अमरावतीवाले आये। साधारण धर्म विषय पर श्रवणलालजी का व्याख्यान हुआ।

२०-९-१२

प० वृद्धिचंद्रजी से वार्ता। बाद में श्रवणलालजी से बातें। रात को भोजन के बाद श्रवणलालजी का व्याख्यान सुना।

२१-९-१२

जाजूजी से माहेश्वरी महासभा आदि विषय पर बातें। धामणगांव से दुलीचंद, लच्छी और उनकी माताजी आईं। उनसे बातचीत की।
विद्यार्थियों से हनुमान-चालीसा सुना। भोजन के बाद श्रवणलालजी का व्याख्यान सुना।

२२-९-१२

बगीचे में श्रवणलालजी से बातें। बद्रीनारायणजी आये। बड़े नाना से चूड़ामणगांव के संबंध में बातचीत की। दुलीचंद व उसकी मां मेल ट्रेन से धामणगांव गये। उनसे बातचीत कर जाजूजी के यहां पंचायत के लिए गया। घर पर दत्तूजी आदि से बातें। ठाकुरजी का डोला निकला। साथ में घूमते हुए पोद्दारों के बगीचे गया। वहां पर पूड़ी-साग खाया। विरदीचंदजी के यहां होते हुए रायसाहब के यहां सार्वजनिक गणपति में गया।
गीता विषय पर पारपुरे का व्याख्यान सुना। बिलकुल ही अरुचिकारक था। श्रवणलालजी का व्याख्यान अच्छा हुआ।

२३-९-१२

आज मैदान में तारीख थी, इसलिए वहां गये। अगसर दूसरे मुकर्रर हुए।

बिरदीचंदजी से २॥। बजे तक वाद-विवाद व चर्चा होती रही।
चद्दूलाल सरावगी की आश्चर्यजनक मृत्यु आज हुई। वहा बैठने गये। बालूजी से बातचीत। बगीचे मे टेनिस खेला।
सार्वजनिक गणेशजी के सम्मुख प० श्रवणलालजी का व्याख्यान सुना। घर पर जाजूजी से बातचीत हुई।

२४-६-१२

बगीचे मे श्रवणलालजी व बिरदीचदजी के साथ टेनिस खेला। घर मे अनत का उद्यापन था, उसकी जानकारी ली। दामोदर पत गरे के यहा मुकदमे के लिए गया। श्रवणलालजी से बाते।
साधुराम तुलारामवालो से विद्यार्थी-गृह की लागत बाबत दौलतरामजी व बिरदीचदजी के साथ बातें हुई। गाडी पर तथा बोझे पर आधा आना लाग विद्यार्थी-गृह के लिए लगाया।
अनत की तैयारी की। एक ही बार भोजन किया। रात को ११ से १२॥ बजे तक पूजा-हवन इत्यादि होता रहा।

२५-६-१२

बगीचे से घर आकर अनत-उद्यापन का हवन-कार्य किया। अनत की कथा सुनी। लगभग २८ ब्राह्मणो को भोजन करवाया। ढाई बजे के करीब ऊपर की छत पर आनद से भोजन हुआ। दक्षिणा दी। उद्यापन-कार्य से निवृत्त हुए और पोद्दारो के यहा गये। वहा से बगीचे गया। वहापर रा०ब० पडित, चक्रवर्ती, नायडु आदि आये। कौंसिल के मेंबरो के विषय मे बहुत-सी बातें हुई।
पोद्दारो के यहा गया। पूज्य नागरमलजी की स्त्री मामीजी से लगभग आध घटा बातचीत। उसे समझाना चाहते थे, परतु मन की बडी बिलक्षण मालूम हुई। घरवालो के प्रति उसका आतरिक प्रेम बिलकुल नही है।
विद्या विषयपर श्रवणलालजी का व्याख्यान हुआ।

२६-६-१२

रा०ब० ३९ वासुदेवराव पडित व वकील आये। बातचीत हुई। देशराव

देशपाण्डे व पोद्दार आदि आये, उनसे बातचीत।
शेष पर कमिश्नर मैकनैनसाहब से मिलना और बातचीत। पटवर्धनसाहब को मौका दिखाया। आज थोड़ा अजीर्ण मालूम हुआ। बगीचे जाकर टेनिस खेला।
विद्यार्थी-गृह में श्रवणलालजी, बिरदीचंदजी, सेठ, बंशीधर हरनारायण तथा विद्यार्थियों के साथ आनंदपूर्वक भोजन किया।
बालाजी-मंदिर में श्रवणलालजी का सनातन-धर्म की मुख्यता पर व्याख्यान हुआ। सनातन-धर्म सभा को ब्राह्मण के लड़के सन्ध्या सीखें उन्हें पुरस्कार स्वरूप देने के लिए पचास रुपये देने को कहा।

२७-९-१२

पंडित श्रवणलालजी के साथ भोजन किया। वह आज जानेवाले थे। विदाई में उनको ५१ रुपये दिये। उनके साथ के आदमी को चार रुपये दिये। उन्हें १०-५३ की गाड़ी पर पहुंचाया। स्टेशन से घर आकर विश्राम किया। बखारे के यहां गया। उनसे बातचीत की। बगीचे गये। टेनिस खेले। गरमी मालूम हुई। पोद्दारों के बगीचे जाकर, पेटी बांधकर तालाब में तैरे। कम भोजन किया और जल्दी सोये।

२८-९-१२

म्युनिसिपैलिटी की सब-कमेटी थी, वहां गये। कुएं का मौका देखा। रायसाहब चंद्रिकाप्रसाद से बातचीत की।
रामसिंहजी, टागाजी, दत्तूजी आदि आये। उनसे बातचीत और बाद में भोजन किया। म्युनिसिपैलिटी के अधिकारी रुई की गांठों पर टैक्स लगाना चाहते हैं, इसलिए बहुत-से रुई के व्यापारी घर आये। कल मीटिंग में व्यापारियों की ओर से क्या-क्या दलील देना, इस विषय पर चर्चा हुई। रात को १०॥ बजे तक अन्नाजी सीताराम शेंडे आदि सब आये।

२९-९-१२

विद्यार्थियों की कुश्ती देखी। अत्रे वकील के यहां म्युनिसिपल टैक्स के विषय में सलाह लेने गये।

आज म्युनिसिपैलिटी की स्पेशल मीटिंग थी, वहां गये। १२॥ बजे तक भी पाउरसाहब आदि से वाद-विवाद होता रहा। उनका बहुमत था, इसलिए उनकी इच्छानुसार प्रस्ताव हुआ। पोद्दारों के यहां गये।
रंगलालजी पारखी मिलने आये, उनसे बातचीत हुई। सिटनवीससाहब के यहां उनकी तबीयत देखने गया। वहां पण्डितसाहब आदि से बातचीत हुई। वहां से सबके साथ सिन्हासाहब के यहां गये।
भोजन बोडिंग में किया। पत्रगढ़ान के विद्यार्थियों से बातचीत और उनसे पाठ्यक्रम की बाबत बात की। जालूजी जबलपुर से आये। उनसे मिला।

३०-६-१२

आज सवेरे जैनियों के प्रमुख माणकचन्दजी पानाचन्दजी वर्धा में जैन बोडिंग के उद्घाटन के लिए आये। उन्हें बाजे-गाजे के साथ स्वागत कर जुलूस में ले जा रहे थे, वह दृश्य देखा।
पंडित बुद्धिचन्दजी से बंबई विद्यालय के बारे में बहुत देरतक बातें होती रहीं। उन्हें डाक गाडी पर पहुंचाया। वहां से बिरदीचन्दजी के साथ पोद्दारों के बगीचे आये। वहां दो बाजी शतरंज खेली। वापस आ रहे थे, लेकिन माणकचन्दजी वहां आ गये। उनसे बहुत देरतक बातें होती रहीं।

१-१०-१२

आज दिगंबर जैनियों का रथ था। जल्सा अपने यहां होनेवाला था, इसलिए व्यवस्था की। मगनबाई और ककूबाई कन्या पाठशाला देखने आईं। विलाऊ के सुधारक पंडितजी ने कलकत्ते का बहुत-सा हाल बताया। सरावगियों का रथ आया। २-३ घंटे जल्सा रहा। गाना-बजाना आदि होता रहा।
पोद्दारों के यहां गया। वहां बिरदीचन्दजी से विभीषण के बारे में बहुत देरतक वाद-विवाद होता रहा।

२-१०-१२

बगले की रिपेअरी का काम देखने गये। टाऊन हॉल में को-आपरेटिव बैंक की सभा में जाना था, लेकिन वहां नहीं जा पाये।

दिगंबर जैन बोर्डिंग में अकोलावाले श्री माणकचंद जयकुमारजी वकील आये। उन्हें मारवाड़ी विद्यालय, कन्या पाठशाला व विद्यार्थी-गृह दिखाये। बातचीत हुई, बगीचे में साथ गये।

घर आकर भोजन किया और पोद्दारों के बगीचे होकर जैन पाठशाला के मकान में कस्तूरबाई व मगनबाई के व्याख्यान सुनने गये। व्याख्यान अच्छा हुआ। आदमी भी बहुत आये थे।

३-१०-१२

आज पूज्य दादाजी व पिताजी का श्राद्ध था, १ बजे शुरू हुआ। तीन ब्राह्मणों ने पारायण किया। ३॥ बजे निवृत्त हुए।

माणकचंदजी बंबई-मेल से जानेवाले थे। उनसे मिलने स्टेशन गया और बातचीत की। हाथ-गाड़ी में बिदा किया।

मगनबाई, माणकचंद पानाचंद जौहरी बंबईवालों की बेटी, व कस्तूरबाई (फूलचंद नेमिचंद की पुत्री) मानमलजी के साथ बग्घी में आईं। लक्ष्मी-नारायण मंदिर में रात को कस्तूरबाई व मगनबाई का 'स्त्रियों के कर्तव्य' पर व्याख्यान हुआ। बहुत-सी स्त्रियां उपस्थित थीं। जाजूजी के यहां गये।

४-१०-१२

आज सर्दी लग गई जिससे गरम पानी से स्नान किया। घर आकर देव-दर्शन आदि किया। शरीर गरम मालूम दिया। बुखार आना समझ पड़ा। शाम को डाक्टर को बुलाया। होमियोपैथिक दवाई ली।

मगनबाई, कस्तूरबाई से कई आश्रमों की बातें हुईं। वे रात गाड़ी से बंबई गईं। उनके आश्रम को भी रुपये दिये।

शाम को पोद्दारों के यहां 'क्या विभीषण अन्यायी था?' इस विषय पर वाद-विवाद हुआ। रात को जाजूजी के यहां गये। शिवनारायणजी के हाथ से उनका हिसाब करवाया, विद्यार्थी-गृह की जगह पर हमेशा के लिए उनकी सही करवाई।

५-१०-१२

[illegible] व व्यायाम कर स्नान व पूजा की और सीधा गये। कन्या पाठशाला

में जाकर लड़कियों को समझाया। मंदिर में दर्शन कर भोजन किया। जाजूजी आये, उनसे मारवाड़ी सम्मेलन आदि विषयों पर बहुत-सी बातें हुईं। पीछे से विनिबाबू तथा गणपतराय [illegible] की चिट्ठी आई, वे कल नहीं आ सकेंगे।

६-१०-१२

स्नान सन्ध्या के बाद गीता-पठन। मीठामल पोद्दार से बातचीत और भोजन। पोद्दारों के यहां गये। वहां भी थोड़ा भोजन किया। नागरमलजी आदि बगीचे आये। आज विनिबाबू व गणपतराय आनेवाले थे, पर स्वास्थ्य ठीक न रहने के कारण नहीं आये। पोद्दारों के बगीचे में वर्षा सीलपुर जीमन करने की जनरल सभा हुई। वादविवाद के बाद निर्णय हुए।
आज मारवाड़ी कन्या पाठशाला की लड़कियों को भोजन करवाया। भोजन के बाद ज्योतिषी आये। उनसे प्रश्न पूछे, वादविवाद किया। भगवानदासजी केजड़ीवाल से बातें।

७-१०-१२

नागरमलजी मिलने आये। चिमनी मकान आदि विषय में बातचीत। वगीजी व बापूजी से वार्ता। बगीचे गये। पोद्दारों के यहां भोजन किया, अनेक विषयों पर बातचीत होती रही। अमृतलालजी उपदेशक के एकदम बीमार होने की खबर सुनी। वहां गये। करीब ।। घंटा बैठे, दवाई वगैरा दी।

८-१०-१२

मीठामल पोद्दार व बंसीधर के साथ बगीचे गये। अमृतलालजी की देखभाल कर जाजूजी से बातचीत की। बंसीलालजी आदि से बातचीत की। हीरालालजी से वार्ता। तार वगैरा आये, उनके जवाब दिये। रामकुंवरजी से बातचीत की।
पंडित देवसहायजी, भगवानदासजी, छगनलालजी आदि से शास्त्रीय वार्ता।

९-१०-१२

। से आते समय बालूजी के यहां गये। दो कोरी के कोट-कमीज, दुपट्टे

वहा से घूमते हुए डेरे आये। बालूभाई, नारायणदासजी साथ में थे। मोटर का किराया ८॥ रुपया लगा।

१६-१०-१२

बालूभाई, नेमीरामजी, ताराचन्दजी से बातें। कालीप्रसादजी सेताल की विलायत-यात्रा को लेकर दो विभाग नहीं होने चाहिए, यह ताराचन्दजी ने भी कहा। भोजन के बाद मामूली कार्य कर विलायत जानेवाले स्टीमर पर कालीप्रसादजी सेताल से मिलने गये। वहा समाज के कई सज्जन उपस्थित थे। कालीप्रसादजी के रसोइये का वेश देखकर आश्चर्य हुआ।

मर्चेंट बैंक से जाइंट-सम्बन्धी बातें कीं। ब्रजमोहनजी के पास गये। उनसे विद्यालय-सम्बन्धी बातें हुईं। रामनारायणजी से देश, दानप्रणाली आदि विषयों पर बातें हुईं। उन्हें कहा कि आपकी पूज्य माताजी से मिलते समय वर्धा में स्मारक बनने की बाबत पूरा ख्याल रखें। उन्होंने स्वीकार किया।

पण्डितजी से मिलने बड़ाबाज़ार गये, तो वहा दूसरा ही रंग देखा, जो बिल-कुल ही नियम के विरुद्ध था। ५-६ लोग जमा हो रहे थे। उनसे कोई बात कही गई तो ऐसा सड़मार उत्तर दिया कि बड़ा बुरा लगा। किंतु किसी तरह विद्यालय का काम पार पड़े, इसलिए सहन किया। नन्दलालजी व गोविंदरामजी की मर्यादा-रहित बातें सुनीं। डाँट-डपटकर उत्तर दिया। डेरे आकर भोजन किया।

रामनारायणजी का विचार देश जाने का था, सो कल पर रहा। उनके साथ घूमने गये। कई तरह की, घर की व विद्यार्थी-गृह की खुलासेवार बातें हुईं। बहुत प्रेम दिखाया।

२०-१०-१२

चन्दाबाड़ी सभा के लिए ८ बजे पहुंचे। तब वहा दो ही आदमी थे। धीरे-धीरे लोग आये, उनका स्वागत किया और उनसे बातचीत की। ८॥ बजे काम शुरू हुआ। सभा अच्छी हुई। जुलूस १॥। बजे निकला। बहुत-से बड़े लोग थे। घूमते-फिरते नेमाणी विद्यालय के भवन पर पहुंचे। वहा

बोर आये। उनसे १२ बजे तक बातें होती रहीं। नन्दलालजी, तारा-चन्दजी, सीतारामजी नेवटिया आदि से बातें।

बंबई से रवाना २२-१०-१२

सामान मंगाया। भोईवाड़े में जाकर लक्ष्मीनारायण के दर्शन किये। मन्दिर तो साधारण था, लेकिन मूर्तियां बड़ी ही सुन्दर व मनोहर थीं। वहां से कालबादेवी गये। प० दीनदयालुजी से बातें हुईं। कमेटी का कहना था, वह बता दिया। घर आये।

दर्शों के शीलक्षेम की बात की। डोंगरदासजी नेवटिया से मिलने गये। बहुत सी बातें हुईं। खेमराजजी आये, मानपत्र देने को कहा, लेकिन बिलकुल इनकार कर दिया। डेरे आये। खेमराजजी से बातें होती रहीं। प० बुद्धिचन्द्रजी को विद्यालय के काम का पारिश्रमिक तीन सौ एक रुपया देने को सत्संगमें कहा। ब्रजमोहनजी से बातें कीं। ... आदि ने रहने का आग्रह किया, लेकिन एक तो ... दर्शों में ... भी आये थे।

शिवरामानन्दजी का 'साधारण धर्म' इस विषय पर व्याख्यान हुआ। बारह बजे आरती हुई, प्रसाद लिया। थोड़ी देर बाहर चौक में खड़े रहे। १॥ बजे सोया।

२६-१०-१२

स्टेशन गये। सवेरे पंडित दीनदयालुजी, हरिकृष्णजी, नेमीरामजी आदि रेल से आये। उन्हें बगीचे ले गये। वहां नित्य कर्म से निवृत्त हो घर आये। उनके व विद्यार्थियों के साथ में भोजन किया। विश्राम व गृहकार्य के बाद पंडितजी से बातें कीं। डाक्टर मोहन लालशा जवेरी के साथ कौंसिल के वोट के लिए आये। उन्हें साफ कह दिया कि उन्हें वोट नहीं दे सकता। पंडित वृद्धिचन्दजी के साथ पोद्दारों के बगीचे गये। बाद में बगीचे में टेनिस खेले। घर आकर भोजन व देवदर्शन। पंडितजी से बातें होती रहीं। ९॥ बजे की गाड़ी से छात्रालय के विद्यार्थी नागपुर गये।

नागपुर २७-१०-१२

माहेश्वरी महासभा के लिए ९॥ बजे की गाड़ी से नागपुर जाना था। उसकी तैयारी की। सेकण्ड क्लास रिजर्व कराके रवाना हुआ। रेल में दामोदरदासजी राठी तथा कई सज्जनों से बातें हुई। नागपुर पहुंचे। स्टेशन पर बहुत-से लोग आये थे। जुलूस में पैदल प० दीनदयालुजी के डेरे गये। उनकी वहां सब तरह की व्यवस्था लगा दी। वहां गोस्वामी मधुसूदनाचार्यजी से मिले। फिर पोद्दारों के बगले गये। भोजन के बाद महासभा के मण्डप में गये। जाजूजी, पंडितजी से मिलकर अमोलकचन्द के साथ बगले जाकर सोये।

२८-१०-१२

श्रीनिवास को इतवारी टेलीफोन किया। सभा-मण्डप होते हुए रसोई के लिए इतवारी गये। दादी का वार्षिक दिन था। एक ब्राह्मण जिमाकर भोजन किया। बारह बजे महासभा के लिए रवाना हुए। महासभा का काम शुरू हो गया था। वल्लभदासजी जबलपुरवालों के पास बैठे। सभा का कार्य विधिपूर्वक आनन्द के साथ समाप्त हुआ। जाजूजी से बात कर

पोद्दारों के बगले गये। भोजन किया। आराम करना चाहते थे कि राठी-जी व जाजूजी का बुलावा आया। अध्यक्ष फत्तेलालजी के डेरे पर पहुंचे। विद्या-प्रसार के लिए फड जमा करने के विषय मे उनसे बात की। वहा से दीवान बहादुर वल्लभदासजी के पास गये। फत्तेलालजी, दामोदरदासजी राठी व जाजूजी ने उन्हे बहुत समझाया, उन्होने चन्दा इकट्ठा करने व स्वयं भी देने को कहा। सभा-मण्डप होते हुए पोद्दारों के बगले जाकर शयन किया।

२६-१०-१२

पूज्य बैरिस्टर दादाभाई व दीक्षित आये। उनसे एक घंटे तक बातें हुई। बाद मे सभामडप मे गये। वहा से गोस्वामीजी के यहा गये। फिर बगले जाकर भोजन किया।

सभा मे गये। बारह बजे काम शुरू हुआ। विद्यार्थियों का मगलाचरण होकर प० अमृतलालजी चक्रवर्ती, गोस्वामीजी व दीनदयालुजी के व्याख्यान व अपील ठीक हुई। वल्लभदासजी से बहुत देरतक बातें हुई। अपील का काम शुरू हुआ। करीब ५५-६० हजार रुपये लिखे गये। पचीस हजार रुपयों की पहले ही व्यवस्था कर ली थी।

शाम को आफिसर लोग आये। कमिश्नर बाकरसाहब, डिप्टी कमिश्नर विपिन बोस, चिटनवीस आदि आये। बाकरसाहब का फत्तेलालजी व राठी-जी से परिचय कराया। कार्यक्रम आनद के साथ पूर्ण हुआ।

३०-१०-१२

पू० जीवराजजी, नागरमलजी आदि से बातचीत की। नागरमलजी के साथ एम्प्रेस मिल के मैनेजर सोराबजी से मिलने गया। विद्यार्थी-गृह के विषय मे बहुत-सी बातें हुई। वहा से विपिन कृष्ण बोस के यहा गये। वहा भी खानगी बातचीत हुई। वहा से महासभा पडाल होते हुए बगले पर भोजन किया।

जीवराजजी नागरमलजी से विलायत मे दूकान करने के बाबत बात हुई। बहु ... भली प्रकार ध्यान मे आ गई। नागरमलजी ने पू० जमनालालजी

से पूछने का सङ्कल्प किया। फिर माहेश्वरी सभा में गये। वहां सभा का काम शुरू हुआ। वहां से स्टेशन जाकर वर्धा के लिए डिब्बा रिजर्व करवाया। चीफ कमिश्नर साहब आज आनेवाले थे। सर देशमित गवर्नमेन्ट में पडित-म्टव व सर चिन्नतीन के जरिये मिले। बहुत-से अफसरों व दीवान बहादुर से बातचीत हुई। सभा में आये। बल्लभदासजी से गोहर आदि का नाव बंद कराने को कहा। दीनदयालुजी, मधुसूदनजी डेरे पर आये। महासभा की तरफ से दुशाला भेंट किया। सबसे मिले। स्टेशन पर जाजूजी आदि पहुंचाने आये। वर्धा आकर १॥ बजे शयन।

वर्धा ३१-१०-१२

सवेरे उठकर प० दीनदयालुजी से बातचीत। आज भोजन पगत में किया। अमृतलालजी चक्रवर्ती से बातचीत की। मधुसूदनाचार्यजी की व्यवस्था पोद्दारों के यहां करने को कहा। ७॥ बजे स्टेशन गये। बद्रीनारायणजी पुरुषार्थ से चदौसी जा रहे थे। उनके साथ सीदी तक गये। उनसे लच्छीरामजी व भागचदजी के विषय में बातचीत की। उन्होंने अपना अभिप्राय कहा। सिदी स्टेशन से मेल-ट्रेन से गोस्वामीजी के साथ वर्धा आये। कागजवाले सूरजप्रकाशजी, गुलाबचदजी नागोरी आदि माहेश्वरी सज्जन साथ थे। बगीचा दिखाया। टेनिस खेले। घर पर पक्का भोजन सबके साथ छत पर किया। स्टेशन पर दामोदरदासजी राठी से मिलने गये। वह नहीं आये, पर विद्यार्थी लोग आये थे।

बिरदीचदजी से बातचीत की। आज शाम को डेडराज ब्राह्मण की मा के खर्च (मृत्युभोज) की पचायती थी, इसलिए पोद्दारों के यहां ठहरे। निपटारा हुआ।

१-११-१२

प० दीनदयालुजी, अमृतलालजी चक्रवर्ती आदि से मिलकर बगीचे गये। नेवीरामजी को औषधि दी।

गोस्वामी मधुसूदनाचार्य से मिलने पोद्दारों के बगीचे गये। उनसे बहुत-सी बातें हुईं। सनातन-धर्म के मुख्य लक्षण बताये। अविद्वान ब्राह्मण और दुर्व्य-

४-११-१२

स्नान-भोजन के बाद पंडितजी से बातचीत की। वृद्धिचंदजी आदि आये। पंडितजी का आज व्याख्यान था, लेकिन उनकी माताजी की बीमारी का तार आया, जिससे डाकगाड़ी में प० दीनदयालुजी, हरम्बरूप, नेकीरामजी, हरनारायण को पहुंचाया। विरदीचंदजी के साथ बग्गी में घूमे।
घर आकर बगीचे में जाकर टेनिस खेले। गजु से बातचीत। नागपुर-सभा का हिसाब जाजूजी से किया। बबई का हिसाब हुआ।

६-११-१२

दुबे तहसीलदार के घर होते हुए बगीचे में वापस आया। वहां बातचीत हुई। ६ बजे गाडगील, कर्णिक व दुबे तहसीलदार आये। चीफ कमिश्नर के आने के विषय में बातचीत।
पटाटे के मुकदमे में साक्षी थी, इसलिए कचहरी गया। वकील-रूम में बैठे और बातें करते रहे। वहां की व्यवस्था देखते रहे। मुकदमा शुरू हुआ, थोड़ी देर में साक्षी खतम हुई। महाराजदीन की साक्षी सुनी, मजेदार मालूम हुई।
घर आकर विश्राम व व्यवहार-कार्य।

७-११-१२

सीतापुरवालों से बातचीत की। गाडगीलसाहब आये। चीफ कमिश्नर के कार्यक्रम-संबंधी बातचीत हुई। भोजन-विश्राम के बाद दुकान-कार्य। मिशन कंपनी के देस्तमजी आये, उनसे बातचीत की।
बर्ल्स में थोड़ी देर गये। घर आकर दीयों की पूजा कर भोजन। पोद्दार के यहां गया। वहां श्री रामचंद्रजी की भक्ति पर अच्छा व्याख्यान हुआ।
घर आकर लक्ष्मीजी के आगे बिस्तर पर सोये।

८-११-१२

बगीचा, घर आदि की सजावट करते रहे। दुकान की सजावट का काम शाम तक बराबर होता रहा। शाम को दीपपूजन के बाद सबके साथ मिलकर भोजन किया। श्रीलक्ष्मी-पूजन आनंद से हुआ। रुई आदि के सौदे हुए।
नई दुकान पर पान-सुपारी को गये। वहां से बालूजी आदि के यहां होते हुए

११-११-१२

तहसीलदार साहब आये। उनसे पोस्ट कमिश्नर के मकान-संबंधी बातें हुईं। जाजूजी के साथ साढ़े तीन बजे डिप्टी कमिश्नर के यहां गये। मगर बीरिंग की बातें हुईं। मकान की दरख्वास्त बनाई। वकील से लिख कहा। रामासाहब के यहां सब बातचीत करने आये। उन्होंने कौलसाहब के बारे में कहा। सब पत्र लेकर बुलाया।

बगीचे गये। जाजूजी से बातचीत की। टेनिस खेले। नागपुर, छिंदवाड़े से आये हुओं से बातचीत की।

१२-११-१२

आसाराम दलाल के यहां से पान-बीड़ा लेकर डिप्टी कलेक्टर साहब ने बुलाया, सो वहां गये। कौलसाहब के साथ का सारा पत्र-व्यवहार बताया। उन्होंने साफ कहा—तुम्हारी गलती नहीं है। कौलसाहब बूढ़े होने के कारण भूल गये हैं।

७॥ बजे की गाड़ी से भागचदजी, बद्रीनारायणजी, मानमलजी आदि आये। सिरपुर जीन की बातचीत हुई। २०-२१ हजार तक मिले तो लेने का निश्चय हुआ। उसमें मानमलजी की आधी पाती रहे।

पोद्दारों के बगीचे गये। वहां बिरदीचंदजी से बहुत देरतक बातें हुईं। उनको बहुत समझाया कि सिरपुर के कारखाने में हमारे सीर में तुम रह जाओ, नहीं तो हमें अपने सीर में रख लो। वह नहीं माने। पोद्दारों ने वह जीन २० हजार में लिया। भागचदजी, बद्रीनारायणजी से जाइंट-संबंधी बातें। वह गये।

१३-११-१२

तहसीलदार साहब के यहां होकर जाजूजी के यहां गये। वहांपर कान्ट्रेक्ट का मसविदा बनवाया। अन्नाजी आये। उन्हें काम के बारे में एक घंटे तक समझाया।

[illegible] तथा मिनावर्डी के लोगों की पार्टी थी। आनंद से हुई। घर

ोहरों में चले गये । वहां बहुत से मोटे हुए । पर पर भी थोड़ा शोर हुआ।
इस साल हवा आदि नहीं थी । रोशनी साधारण ठीक थी । दुकान के बंद-
चालियों व नौकरों को इनाम वगैरा दिये ।

९-११-१२

जाजूजी से दुकानदार दरी आदि देखी तथा स्वामी विवेकानंद, गगनगिरि
आदि महात्माओं की बहुत देर तक बातचीत की ।
स्नान पूजन, भोजन करके डिप्टी कमिशनर के यहां सलाम के लिए गये। वह
बाहर से मिल गये । मामूली बात हुई । फिर आने को कहा । ठाकुरसाहब
से मिलकर घोड़ागों के यहां होते हुए घर आये ।
गये घर की चिट्ठियों पर ३॥ से ५॥ तक जैतोराम लिखे । बालाजी के मंदिर
में अन्नकूट के भोजन का बुलावा आया । वहां भोजन के लिए गये । घर पर
भंडार (विद्यार्थी) ने बहुत-सी बातें कहीं । रामनाथ पोद्दार आये, उनसे व
हीरजी से बातचीत । थोड़ी सर्दी थी, इसलिए जल्दी सो गए ।

१०-११-१२

सवेरे अमरचन्दजी के साथ बगीचे गया । स्वामी सरस्वतानंदजी से महात्माओं
के सबंध में बातचीत हुई । सेगाव बोर्डिंग का मास्टर आया । उसे बहुत कुछ
कहा । उसने दस्तावेज लिखाना नामंजूर किया ।
दो बजे ठाकुरजी की आरती हुई । तीन बजे पुलगाव से बद्रीनारायणजी
वगैरा आये । उनके साथ भोजन । मानमल सरावगी से मिरपुर जीन तथ
जाइट वगैरा के बाबत बातें की ।
बिरदीचन्द आये । दीपावली का सौदा किया था । उनको ५०० रुपये मुना
के देकर उसे बराबर किया । बाद में गाव के लोगो को जिमाना शुरू हुआ
बहुत अच्छी तरह से भोजन कराया गया । पुलगाव से कई लोग आये
जाजूजी आदि सभीने भोजन किया । विद्यार्थी-गृह के लाग की बात हु
वर्धा की नई दूकान, देवली व पुलगाव की लाग बद्रीनारायणजी की स
में लिखी गई ।
रामनाथजी के यहा पानबीडा के लिए गये । गोरधनदास बजा

होते हुए घर आये। गाडगील साहब आये। उनसे पार्टी के संबंध की बातें हुई। टर्मिनस टैक्स की मीटिंग थी। पर पैर-दर्द के कारण जाना नहीं हुआ। फिर मीटिंग की नोटिस भी देर से मिली थी, जो गैरकानूनी थी।
विरदीचदजी पोद्दार आये। उनसे मारवाडी-जाति के सुधार के बारे में बातें हुई। उन्होंने कमाई में से १० फीसदी मेरी इच्छा से खर्च करने को कहा। बाद में दत्तूजी के मरो कटनीवाले चाण्डिया मिलने आये। उनसे बातचीत की।
बगीचे गया। वहां वाणी का हुरडा खाया। साथ में मूली भी खाई। घर आकर भोजन किया। विसोबा थोडगे आया। उससे अधिक बात नहीं की। द्वारकादास के रोकड में दो सौ रुपया बढ़ते थे, उसकी देखभाल की भूल नजर नहीं आई।

२१-११-१२

सौदागर विद्यार्थी को समझाया। बगीचे में श्री धारमकर व मर्दन आये। विरदीचदजी आये, उनके साथ दत्तूजी के मरो के यहां गये। घर आये। पार्टी के निमत्रण-कार्ड भिजवाये।
बनारसे से स्टोअर बेचनेवाला यूरोपियन आया। उसकी नम्रता व बात करने की सफाई देखकर आश्चर्य हुआ। बगीचे जाकर काम का निरीक्षण किया। घर आकर पत्र पढ़े और बाद में भोजन किया। केदार विद्यार्थी को समझाया। आर्वीवाला छोटा केदार लक्ष्मीनारायणजी चोमवाल के विरुद्ध लाच्छनास्पद रिपोर्ट लाया। बुद्ध सच्ची भी मालूम दी। जाजूजी आये उनकी सलाह से चीफ कमिश्नर की पार्टी के निमत्रण की यादी (सूची) बनाई और उनसे बातें भी की।

२२-११-१२

टाउन हाल में मेमोरियल की सभा थी, वहां गया। पाठकसाहब ने बिल्डिंग का नक्शा वगैरा समझाया। ११ बजे तक वाद-विवाद होता रहा बाद में कार्यवाही पूर्ण हुई। दस्तरखाव मोघे से बातचीत हुई। उन्होंने मराठा बोर्डिंग की हाल की कार्यवाहियों से असतोष प्रकट किया। घर आकर भोजन

किया।

शास्त्री दलाल ने आकर पैर दबाना शुरू किया। पत्र लिखे। मराठा बोडिंग के समारोह में गये। थोड़ी देर बैठे। बारिश शुरू हुई, थोड़ी देर तक जोरों की हुई।

स्टेशन मेल पर गये। कमिश्नर साहब आ गये थे। उन्हें दूर से मराठा बोडिंग दिखाया। देशपांडे को छोड़कर पाठक से मिलने गये। रास्ते में कमिश्नरसाहब की गाड़ी खड़ी थी। बड़ाबाला के पास गये और उनके साथ वर्स्ट सिविल सर्जन के यहाँ गया। वहाँ बहुत-सी बातें हुईं। बड़ाबाला को वहाँ छोड़कर घर आया।

२३-११-१२

चीफ कमिश्नरसाहब आनेवाले थे। गाड़ी डेढ़ घण्टा लेट थी। इसलिए हाईस्कूल गये।

लरके के साथ विद्यार्थियों को मिठाई बाँटी। स्टेशन गये। नौ बजे चीफ कमिश्नरसाहब आये।

घर आकर मथुरादास मोहता के साथ भोजन किया और टाउन हॉल गये। चीफ कमिश्नरसाहब के हाथ से किंग एडवर्ड हॉस्पिटल का शिलान्यास हुआ। घर आकर पाठकसाहब के यहां गया। वहां से टाउन हॉल गये। वहां म्युनिसिपैलिटी तथा डिस्ट्रिक्ट कौंसिल की ओर से चीफ कमिश्नरसाहब को मानपत्र दिया गया। उन्होंने उसका संतोषजनक उत्तर दिया। वहां से मराठा बोर्डिंग में गये। वहां भी उनके हाथ से शिलान्यास आनन्द से हुआ। वहां से नरसिंगदासजी मोहता ने पार्टी दी थी, वहां गये। जलसा अच्छा हुआ। आतिशबाजी छोड़ी गई थी। पाठकसाहब तथा लरके के द्वारा चीफ कमिश्नरसाहब ने विद्यार्थी-गृह के निरीक्षण को आने को कहा। दूसरे दिन के काम का इन्तजाम किया।

२४-११-१२

बेंजामिन राबर्ट्सन के० सी० आई० चीफ कमिश्नर मंदिर का निरीक्षण · ऊपर के हॉल में आये। विद्यार्थियों का भली प्रकार निरीक्षण किया।

स्टेशन उतरे। मिलन पर चर्चा की। करीब-करीब डेढ़ घण्टा बैठे।
साढ़े ६ बजे कलक्टर से बातचीत की। फिर भूपाल के आफिस जाकर चीफ कमिश्नर तथा कमिश्नर से नन्दि लाल में मिलने गये। उनसे कमिश्नर ईशर के बारे में कहा।
बगीचे जाकर पार्टी की तैयारी की। चीफ कमिश्नर तथा कमिश्नर ५॥ बजे आये। मारवाड़ी विद्यालय के छात्रों का वादन-वादन ? घंटा हुआ। चीफ कमिश्नर तथा अन्य सब सज्जनों ने बहुत तारीफ की। हार पहनाया। ७॥ बजे मोटर से विदा हुए। उत्सव अच्छा हो गया। प्रसन्नता हुई। चीफ कमिश्नरसाहब ने विद्यार्थी-गृह की चाकसूसाहब तथा पाठकसाहब से सिफारिश की।

२५-११-१२

सवेरे बगीचे से लोगों की कुर्सियां आदि भिजवाई। दूकान से लाया गया सामान भी वापस भिजवाया। बगीचे का दृश्य अच्छा मालूम होता था। मथुरादास मोहता व मोतीलालजी कोठारी हिंगनघाटवाले साथ थे। सिटफ्वर घर आये। रायबहादुर घरे के यहा गये। प्रोफेसर चिन्तामणराव भानु, जिन्होंने गीता का अनुवाद किया, उनसे मुलाकात व बातचीत की। कल मन्दिर में उनका व्याख्यान कराने का निश्चय हुआ। मन्दिर से दर्शन करके बोर्डिंग में भोजन किया।
मारवाड़ी-विद्यालय के विष्णु दिगम्बर पलुस्कर विद्यार्थियों का लेकर आये। उनको फंड में ७५ रु० अपनी ओर से व ५० रु० बिरदीचंदजी के तरफ से दिये। उनसे बातें हुईं। उनको कल चीफ कमिश्नरसाहब से अच्छी तरह से मिला दिया था। दत्तूजी के संग बटनीवालों के यहां गये। जीमणवार का काम अच्छी तरह हुआ।

२६-११-१२

बाजार की इमारत का काम देखा। ठीक नहीं था। मुनीमों के साथ बटनीवालों के यहां गये। बारात की निकासी के लिए ताकीद कर जल्दी निकलवाई।

पन्नालाल सगरजी बीमार था, उससे मिले। उसे मृत्युपत्र की सलाह दी। उसने मंजूर किया। बगीचे में थोड़ी देर टेनिस खेला। दत्तूजी के यहां बाजी का हुरड़ा खाया। करीब १॥ घण्टे बैठे। घर आकर भोजन किया। लक्ष्मीनारायण-मन्दिर में पूनावाले प्रो० भानु का व्याख्यान ८॥ बजे शुरू हुआ। व्याख्यान उत्तम था। उन्होंने बताया कि आज के समय में मनुष्य का क्या कर्तव्य है। दो पैर के पशुतुल्य मनुष्य का आचरण कैसा खराब है, इस विषय को भली-भांति समझाया। मनुष्य के लिए विद्या की अत्यन्त आवश्यकता बताई। सचाई के साथ उद्योग करने पर बहुत बल दिया। केवल डाक्टर या ग्रेज्युएट हो जाने मात्र से देश व समाज का कुछ लाभ नहीं है।

प्रो० भानु ने मेरे के साथ विद्यार्थी-गृह का निरीक्षण किया।

२७-११-१२

जीनप्रेस का निरीक्षण किया। गुजानसा व गणपतराव को समझाया। घर आकर पत्र पढ़े। व्यवहार-कार्य और भोजन। आराम के बाद व्यवहार-कार्य कर टाउन हॉल होते हुए पोद्दारों के बगीचे गया। वहां बाजी के हुरड़े खाये। लॉन में बातचीत।

प्रो० भानु का व्याख्यान व दलीलें अधिकांश लोगों को सीधे पसन्द नहीं आई। वहां से दत्तूजी के यहां विवाह की जीमनवार में गये। जाजूजी के साथ भोजन किया। दत्तूजी व उनके सगों से बातें हुई। घर आकर पढ़ते रहे।

२८-११-१२

भोजन कर दत्तूजी के यहां गये। भुसान के बंगले से आने पर बिरदीचंदजी से बातचीत की। उन्होंने मारवाड़ी जाति के हित के लिए पन्द्रह हजार रुपये दिये।

जाजूजी के यहां विश्राम किया।

बल्लभदासजी के मुनीम सुजानमलजी नागपुर से आये। जाइंट का कच्चा लिखित हुआ। डेप्युटेशन लेकर नरसिंगदासजी के यहां गये। उन्होंने पहले तो नाईकोर [illegible] की, बाद में मुश्किल से हमेशा के लिए गाड़ी हाथ-

रुपये पीछे आध आना कबूल किया। त्रिभुवन ने कबूल किया। वल्लभदासजी के जीन में गये। वहा दो आढ़तियों ने कबूल किया। घर आये। नायडू वकील आये, उनसे बातचीत। दत्तूजी के घर जाना। वहा से मंदिर में वृंदावन के पंडित की कथा थोड़ी देर सुनना।

२९-११-१२

गंगाबिसन से बातें। पोद्दारों के यहा होते हुए जल्दी भोजन कर दत्तूजी के यहा पहरावणी में गये। वहां के कार्य से निवृत्त हो घर आये। शंकरराव बरमरकर आगरा से आये। उनसे बातें हुई। उस समय नायडू भी थे। बगानी में बहुत-सी बातें हुई। जाजूजी के पास गये। बिल बनाया। तुतारी (आर)[1] के बारे में दरख्वास्त लिखने को कहा। जीन में आज चिमनी लगी। घर आये। नायडू वकील आये। बगीचे में टेनिस खेले। खरेसाहब के यहा बातचीत की। मोरोपंत दीक्षित आये। खरेसाहब को आनरेबल मेंबर बनाने का विचार हुआ। दत्तूजी के यहा दूकानवालों को लेकर जीमने गये। भोजन किया। उन्होंने तिलक[2] किया। घर आकर 'महाराजा लायबल केस' पढ़ी।

३०-११-१२

गजनगढ़ गये। श्रीधर पंत नहीं मिले। पोद्दारों के यहा दूध पिया। कन्या-पाठशाला का निरीक्षण कर घर आये। नायडू वकील, स्कोडा आदि से बातें की। बिसेसरलालजी, सुखजी, गंगाधरजी, ब्रजमोहन कामठीवालों के साथ भोजन किया। 'महाराजा लायबल केस' पढ़ी।

शिवभगवान ने आगे चोरी न करने की प्रतिज्ञा की। कौलनर होटलवाला आया। उसे लेकर बरटसाहब के पास गये। उन्होंने भी कहा कि बिल बहुत

---

[1] किसान लोग बैल को तेज चलाने के लिए लकड़ी के सिरे पर कील लगाकर उसे बैल को चुभोते हैं। इसके विरुद्ध आंदोलन हुआ था।

[2] जमनालालजी इनके यहां के जंवाई होते थे, इस कारण प्रथा के अनुसार तिलक किया।

जाता है।
घर आए। भोजन किया। कन्हैयालाल भालोटिया, हरनाम देवराजजी व देवराज वगैरह से बातचीत की। 'महात्मा गान्धी बेग' पढ़ी।

१-१२-१२

राजेन्द्र हॉल में श्री भारतीय डेरी की मीटिंग रखी थी। वहाँ गये। ८ बजकर बजे पुनः गये—मोरे, कु० देवमुनि, नाथू, जाजूजी, किन्दीबरजी पोद्दार, रामनाथजी व मैं। इस तरह मीटिंग के साथ घर आये। कुछ हँसी-मजाक हुआ। फिर भोजन किया।
लक्ष्मीनारायणजी को बहुत समझाया। उनसे दो वर्ष के लिए प्रतिज्ञा की। मिंटे साहब से बातचीत की। जाजूजी आये। मारवाड़ी हाई स्कूल की सभा का कार्य हुआ। बाद में जाजूजी के साथ पाठकसाहब के यहां गये। सरकार-संबंधी बातें हुईं। उन्होंने समझाया किया। खुशी के साथ काम शुरू करने में हर्ज नहीं। और भी बातें हुईं। बखारिया व बन्दरसाहब मिलने आये। वे भुसावलवाला बगला देखने आ गये थे। साहबसिंहसाहब डा० बालर के यहां ठहरे थे। उनसे बहुत-सी बातें हुईं। उन्होंने रामनारायणसाहब के बारे में सब हाल बताया। उनको साथ लेकर बगीचे गया और टेनिस खेले। घर आये। किन्दीबरजी मिले, उनके यहां भोजन किया। पेपर वगैरा पढ़े।

२-१२-१२

बगीचे से वापस लौट रहे थे कि रास्ते में नायडू तथा मेघे मिले। वोट-संबंधी बातें हुईं। घर आकर जाजूजी के यहां गया। श्री कृष्णबुवा के शिष्य से भजन सुने। घर आकर भोजन करके देवराज, दत्तूजी व अब्दुल हुसैन को साथ लेकर जिला कचहरी गये। एकनाथ थोडगे को समझाया। कामासाहब से बातें हुईं। वह विरुद्ध रहे। आखिर रात वोटों से नागपुर जाने का निश्चय हुआ। पोद्दारों के यहां होते हुए घर आये। पुलगाव का मुनीम आया। बातें हुईं। चूड़ामणराव से स्टोअर-संबंधी बातें।

३-१२-१२

लगाववाले सुरजा से ग्याना जाट के बारे में बातचीत की। स्नान-पूजन के

ाद हूरदा दादा। घर लौटते समय बाजार के मकान का निरीक्षण किया। मोर्टपर बड़ा बने, यह बताया। बाद मे, पन्नालाल सरावगी मर गया, वहा ये। उसने अपने हाथ से बिल बना दिया था, गात दृष्टियों के द्वारा काम होने को लिखा था। बालूजी के यहा ब्राह्मण-पचायत थी। वहा जाकर घर आये। अत्रे वकील के साथ भोजन किया। पन्नालाल का विल उसका मुनीम ले आया, वह पढा।

ब्राह्मणों की पचायत का निपटारा करने के लिए रामसुख को बुलाया। निपटारा होने का रग नही लगा। जीवराजजी पोद्दार आये थे। उनसे मिलने गया। थोडी देर बातें हुई। घर जाकर प्रेस मे गये। गाठे बेचने का प्रयत्न किया। सौदा नही हुआ।

पुलगांव ४-१२-१२

टांगगाडी से पुलगाव गये। वहा के काम का निरीक्षण किया। जीन की ट्रायल थी। खरीदी बद करने को कहा। भुसान के खाते मे भी गाठे खरीदी। जीन प्रेस के बारे मे आत्माराम को व दूकान के बारे मे मुनीम को समझाया। गाडी १। घटा लेट थी। ८। बजे वर्धा पहुचे। रेल मे कणिकसाहब से बातें हुई।

५-१२-१२

जाजूजी के यहा गया। वहा से आकर व्यवहार-कार्य देखा। भोजन कर प्रेस में गये। आकर विश्राम किया। पोद्दारो के यहा गये। थोडी देर के बाद बिरदीचदजी से बातचीत की। ८०० गाठो मे ८४०० रुपये मुनाफा वह देते थे। घर आकर पत्रादि लिखे। डिप्टी कमिश्नर की धारपुरे के विषय मे चिट्ठी आई। लिखा कि धारपुरे ने दरखास्त ४।। बजे को, जो कानून के अनुसार ठीक नही थी। इस विषय मे बात करने बुलाया था। इस विषय मे बात करके बगीचे जाना।

नायडू, जाजूजी, आगाशे, करमरकर, देवराव आदि आये। बातें हुई। धारपुरे की दरखास्त खारिज हुई थी, इसलिए उसकी ओर से बैरिस्टर मोरोपत दीक्षित आये थे। दुबे तहसीलदार से बातें।

मदिर मे गायनवाला आया। उसका गायन सुना। 'महाराजा लायबल बेम'

पढ़ते हुए १०॥ बजे तक सोया।
रात को २-३ बार चौंककर उठा। पहरा ठीक है या नहीं, यह देखा।

हिंगनघाट ६-१२-१२

घोड़े के तांगे से रकोड़ा के साथ स्टेशन जा रहे थे। बुढ़िया तांगे के नीचे आ गई। गाजी ने बहुत घंटी बजाई, आवाज दी परन्तु बुढ़िया ने सुना ही नहीं। गाजी की होशियारी से बुढ़िया को चोट नहीं आई। बच गई।
हिंगनघाट गये। रास्ते में 'महाराजा लायबल केस' पढ़ा व रकोड़ा से बातें की। श्री वल्लभजी के पास गये। भाभी बीमार थी, उनके पास बहुत देर तक बैठे। गाड़ी का समय होने तक पोद्दारों की दूकान, रुई-बाजार होते हुए स्टेशन गये। श्री वल्लभजी से बातें होती रहीं। वर्धा २ बजे पहुंचे। प्रेस होते हुए घर आये। जीन व जावरा जीन होते हुए बगीचे गये। टैनिस खेल रहे थे कि हल्ला सुना कि बैंक के जूने कोठे में आग लग गई। दौड़ते हुए गये। प्रेस से फायर इंजिन पाइप बुलाकर १॥ घंटा तक खड़े रहकर आग बुझवाई। घास जल गई, और भी थोड़ी हानि हुई। घर आकर भोजन किया।

७-१२-१२

बगीचे जा रहे थे। पोद्दारों की दूकान के आगे लाल बैल चल नहीं रहा था। जाणो मारने लगा, उसे छुड़ाया। बगीचे गये। लाल बैल मर गया। चित्त अस्वस्थ रहा। घर आये। जाजूजी के घर होते हुए भोजन कर बाजार में गये। कोशिश कर कपास का भाव १०२ निकलवाया।

८-१२-१२

म्युनिसिपल कमेटी में गये। नाके बाजार आदि विषय निकले। घर ११॥। बजे गये। भोजन व विश्राम। पत्र-व्यवहार देखा। हाजिरी देखी। त्र्यबकराव बबेवाले से बातचीत। करीमभाई का एजंट आया। कलेवा किया। ...ली (बच्ची) कमला का फोटो खिंचवाया। आज बारिश का रुख बहुत ...था। जीन में २-३ आदमी कपास ढाकने भेजे। बारिश और हवा बहुत की आई।

उनका उत्तर सुनकर चित्त को बहुत बुरा मालूम हुआ। पैसों के आगे मनुष्य को कुछ भी ख्याल नही रहता।

१२-१२-१२

हाईस्कूल से बुलावा आने से वहा गये। रावबहादुर खरे का 'राजभक्ति' पर विद्यार्थियों व अध्यापको के लिए बहुत अच्छा उपदेश हुआ। ५वें जार्ज के राज्य-आरोहण की यादगार मे लायब्रेरी की स्थापना की गई।

ढाई बजे स्कूल मे हैडमास्टर का बुलावा आया, इसलिए वहा गये। राज्य आरोहण के निमित्त लडको के खेल हुए। मेरे हाथ से इनाम बाटे गये। हाकी का खेल अच्छा हुआ। जीन होकर बगीचे गये। वापिस आकर भोजन किया। जाजूजी आये, उनसे नागपुर की बातें हुई। उन्होने दीवान बहादुर वल्लभदासजी की बातें कही।

शाम को नायडू, करमरकर, अगाशे, अत्रे आदि आये।

१३-१२-१२

सोराबजी, रतनशा, आदि मिलने आये। नरसिंगदासजी की गांठो का सौदा किया। वह माल देखने गये। १२१ गाठें १२७ से देना निश्चय हुआ। उससे बहुत-सी बातें हुई। उसने सेठजी का पूर्णतया उपकार कबूल किया। रामा शेंडे आया, जाजूजी आये। बगीचे में विद्यार्थियों का फुटबाल का खेल देखा। गोपीजी की चिट्ठी आई। वहा को-आपरेटिव बैंक की बात हुई। गीगाजी आये। उन्हे फाटका (सट्टा) न करने को भली प्रकार समझाया।

नागपुर १४-१२-१२

७-४५ की गाडी से जाजूजी के साथ नागपुर गये। गोपीजी बीमार थे। को-आपरेटिव बैंक की सभा थी। नागपुर पहुचकर पोद्दारो के बगले गया। ८ रुपये मे तागा ठहराया। सभा के लिए अजायबघर गये। सभा का कार्य १२॥। तक चला। वहा २-४ लोगो से मिले। कई विषयो पर वल्लभदासजी जबलपुरवालो से बातें की। वहा से मारवाडी प्रेस होते हुए घर आये। गोपीजी से मिले। बहुत देरतक बैठे। दो रोज मे तबीयत ठीक बताई। डाक्टर राघेबाबू आये। उनसे बातें की। बंगले होते स्टेशन आया। ५॥

बजे की गाडी से वर्धा आया। रेल मे बम्बई के पारसी से बहुत-सी बाते होती रही।

वर्धा १५-१२-१२

रा० ब० बापट मोविल सर्जन आये। कमला के दोनो हाथो पर माता का टीका लगाया। वह रोई नही। बरटसाहब को अचरज हुआ। बरटसाहब से कीलनर हाटेलवालो को चिट्ठी लिखवाई।

स्कोडासाहब आये। उनसे बाते हुई। पुलगाव तार किया। जावरा जीन गये। प्रेम के बारे मे मुजानसा को समझाया। उसने सुधार करने को कहा। बगीचे जाने की तैयारी से नई दूकान गये। पर वहा बहुत देर हो गई। बसीजी से बात कर रहे थे। उस समय एक आदमी शराब पीकर आया। उसे पुलिस मे भिजवा दिया।

दानीजी का पत्र आया। उन्हे तार दिया। मदिर के सामने व्याख्यान हुआ। वह सुना। गर्गाविसन से निर्यामतता विषय पर बातचीत की।

नागपुर १६-१२-१२

श्री निवासजी जालान ने भोजन के लिए कहलाया। सुना कि गौरीशकरजी गोयनका गुरजावाले आये हैं। पोद्दारो के बगीचे गये। उनसे वार्तालाप हुआ। प्रेम की कीमत सबध मे कम है, ऐसा बातचीत से मालूम हुआ। घर आकर थोडा कार्य कर पोद्दारो के बगीचे गये। गौरीशकरजी और बिरदी-चदजी के साथ भोजन किया। उनको घर लाकर सब दिखाया। नागपुर जाना था, इसलिए स्टेशन गया। रेल मे आर्वीवाले शालीग्रामजी व बारजावाले प्रयागजीभाई साथ हो गये। नागपुर तक बहुत-सी बातें होती रही। गौरीशकरजी ने .के बारे मे बहुत ही घृणा प्रकट की। नागपुर पहुचकर पोद्दारो के यहा भोजन कर दीवान बहादुर वल्लभदासजी के पास गये। उनसे विलायत की दूकान-सबधी १॥ घटा तक अच्छी तरह बातें हुई। विलायत दो आदमी भेजने का निश्चय हुआ।

१७-१२-१२

चाय पीकर नानरमलजी के साथ मिल मे गये। कपडा वगैरा बनते देखा।

बगले जाकर भोजन किया। लार्ड हार्डिंज के हाथ से कौंसिल हॉल का शिलान्यास होनेवाला था, वहां गये। बहुत-से साहब लोगों से मिलना हुआ। इतवारी जाकर गोपीजी की तबीयत देखी और बंगले पर आकर विश्राम किया। जाजूजी आये। कलेवा कर मिल में गये। पाच नंबर की मिल में लाटसाहब आनेवाले थे, उनके स्वागत के लिए नियुक्ति हुई। फाइकसाहब व मेजसाहब से अच्छी तरह बातें हुई। लार्ड हार्डिंज तथा लेडी हार्डिंज आये। साथ मे सर रावर्ट्सन भी थे। उन्हे भली प्रकार देखा। लाटसाहब से मुलाकात करके सबको खाना खिलाकर स्टेशन आये। जाजूजी के साथ रायपुरवाले नथमलजी आये। उनमे जातीय उन्नति के विषय मे बहुत-सी बातें हुई। अमरचदजी भी आये।

वर्धा १८-१२-१२

जाजूजी के यहा म्युनिसिपैलिटी के काम से गये। बालाराम व नेमिचद विद्यार्थी को समझाया। म्युनिसिपल सेक्रेटरी, विरदीचदजी पोद्दार, दत्तूजी आदि आये। उनसे बातचीत की और जाजूजी के यहा जाकर वापस आये। पश्चादि बहुत-से लिखे। रामनाथजी के यहा बैठने जाने का विचार था, पर शाम हो गई।

आर्वीवाले शालीग्रामजी कामठी से आये। उनसे बातें। जयनारायणजी आये। अयोध्यावालों को २१ रुपये विदाई दी। जाजूजी के यहां गये। मग्रेजी 'आत्मविद्या' का अनुवाद करके लाये थे। उनसे बहुत देर तक बातें हुईं। आत्म-विद्या के भाषातर के १५० रुपये निश्चित किये। घर पर पू० शालीग्रामजी से बातें।

पुलगांव १९-१२-१२

आर्वीवाले शालीग्रामजी के साथ बगीचे में बहुत देर तक घूमते रहे। बालुजी की दूकान होकर घर आये। शालीग्रामजी ११ बजे की गाड़ी से गये। गाडी से फाइकसाहब अपनी मेम व लड़की के साथ दिल्ली गये। मिलने स्टेशन गये। पुलगाव तक उनके साथ गये। कर्मशियल कालेज मे ध्यान रखने को कहा। पुलगाव में बद्रीनारायणजी से मिले।

२१-१२-१२

हरजी का हिसाब के लिए बुलाया था। रात को आने को कहा पर नहीं आये। पुलगाव के मुनीम आये थे। उनसे गांठें बन्द करने के बारे में बातचीत हुई।

जाजूजी आये। बाद में नारद, देशपांडे बगड़िया आये। उनसे बातचीत की।

प्रो० अमीन के जादू—मेस्मेरिज्म के खेल देखने गये। २-३ काम अच्छे किये। विद्यार्थी-गृह में जाकर नेमीचंद विद्यार्थी की जांच की।

२२-१२-१२

मुसानवाले से एक हजार गांठों के सौदे की बात की लेकिन भाव बहुत कम रहा। धामणगाव ११ बजे की गाड़ी से गया। वहां सौदा किया। श्रीराम दास की चलवसी की परवानगी दिलाई। पुलगाव के बसीधर से सौदा किया। दो बजे भुसान के साहब के यहां गये। उनसे ६५० गांठों का सौदा किया। उनकी बात से मन में रंज हुआ, क्योंकि वह बात करके बदल गया। दुकान आकर जाजूजी के यहां गया, उनसे बातचीत की। वहां से घूमते हुए पोद्दारों के बगीचे गया। आकर विद्यार्थी-गृह में भोजन किया। गडीजी को उधारी वसूल करने को कहा। रामनारायण जमादार की व्यवस्था की।

२३-१२-१२

जाजूजी के यहां गये। कल कलकत्ता जाने का विचार था, लेकिन युद्ध खबर सुनने के कारण कलकत्ते २-३ तार भिजवाये। पोद्दारों के यहां गोपीराम व ब्रजमोहन का आपस में मिलाप हुआ।

दोपहर को बद्रीनारायणजी व बसीधर पुलगाव से आये। उनसे बातचीत।

रात को पन्नालाल सरावगी के घर गये।

२४-१२-१२

प्रो० अमीन से टुनिया की मा की बीमारी के विषय मे बगीचे मे बातचीत की। कलकत्ते जाने का विचार स्थगित रहा। रात को प्रो० अमीन के मेस्मेरिजम के खेल ऊपर के बंगले मे करवाये।

२५-१२-१२

बगीचे मे गाडगिलसाहब मिले। लार्ड हार्डिंज पर २३ तारीख को दिल्ली मे बम फेंका गया। थोडी चोट आई। यह खबर सुनकर चित्त को रंज हुआ। बम्बई-समाचार मे पढा। ३ बजे टाउन हॉल मे जाकर चीफ कमिश्नर के मार्फत, लाटसाहब को चोट आई, उस बारे मे तार दिया। पोद्दार के यहा कलेवा किया।

पन्नालाल सरावगी की एस्टेट के बारे मे सभा थी। इसलिए उसके घर गये। चित्रकूट का पण्डा बाबूराम आया।

२६-१२-१२

जावरा जीन प्रेस होते हुए बगीचे गया। प्रेमराज ने मकान लिया, सो देखा। पोद्दारो के यहा प्रो० अमीन व भुसान के यहा जापान का साहब आया, उससे मिले। प्रेम वगैरा दिखाया।

धामणगाववाले किसनलाल, महादेवजी से बातें। भुसानवालो से बातें। गीगाजी के लिए नथूसिंह का मकान देखा। भुसान का अमरावती का साहब आया। उधारी वसूल की, सब जिम्मेदारी चिमणीराम राठी के सुपुर्द की।

पुलगांव व आर्वी २८-१२-१२

पुलगाव १०॥ की गाडी से जाजूजी के साथ गये। वहा पहुचने पर काटन मार्केट की जबरदस्त शिकायत सुनी। रुई-बाजार मे गये। सेक्रेटरी को जाजूजी ने समझाया। वह मान गया।

शालचन्दजी के तागे मे आर्वी रवाना हुए। टागे की रस्सी ढीली होने से मे डर रहा। जाजूजी से कई तरह की बातें हुई। आर्वी चिमणीरामजी आ गये। उनको बहुत समझाया। फिर पू० शालीग्रामजी के यहा गये।

वहीं ठहरे। रात को उनसे बातें हुई।

आर्वी २९-१२-१२

सत्यनारायण-मन्दिर मे स्नान व पूजन और धर्मशाला, जीन प्रेस, रुई-बाजार सीतारामजी वगैरा से मिलते हुए पू० शालीग्रामजी के यहा आये। भोजन हुआ। आर्वी में मारवाड़ी विद्यार्थी-गृह स्थापित करने का पक्का निश्चय हुआ। चन्दा मडवाना शुरू हुआ। सीतारामजी को बहुत समझाकर ५००० रु० मडवाये। शालीग्रामजी आदि ने माडे। वाठोडा श्री किसनदास-जी की तरफ डेप्युटेशन लेकर गये। उन्होंने २१०० रुपये माडे। रात मे सभा हुई। सभापति वगैरा का निश्चय हुआ। १२ बजे तक विद्यार्थी-गृह का कार्य अच्छी तरह चलता रहा।

आर्वी-पुलगांव ३०-१२-१२

सवेरे बगीचे मे शालीग्रामजी से बहुत-सी बातें। रुई-बाजार होते हुए उनकी दुकान गये। जीवनमल माहेश्वरी से ५०० रुपये मडाये। सीताराम के यहा बाजूजी शालीग्रामजी के साथ भोजन को गये। वापस आकर आराम किया। और १-२ लोगों से चन्दा मडवाकर २॥। बजे पुलगाव रवाना हुए। पुलगाव ५॥। बजे पहुचे। आर्वी मे मारवाड़ी विद्यार्थी-गृह के लिए १६००० रुपये हुए।

वर्धा ३१-१२-१२

नये प्रेस व जावरा जीन में गये। वहा मुजानसा व चूडामण के ऊपर बहुत नाराज हुए। भुसानसाहब से यहा बड़ी बातें हुईं।

श्रीनिवासराव नायडू आये। उनसे बातें। सीताराम दांडे, शिवनारायणजी, बंसीधरजी आये। व्यवहार की बातें। बस्ती होते हुए बगीचे गया। गोपी-चन्दजी से बातें। घर पर भोजन किया। बाद में पोद्दारों के यहां गया।

नोट—१९१३ की डायरी उपलब्ध नहीं है।

१९१४

वर्धा १-१-१४

बगीचे मे नित्यकर्म से निवृत्त हुए। भुसानवाले छोटे एजेंट से बहुत-सी बातें हुई। आज से मंदिर में रामचन्द्रजी की कथा आरम्भ हुई। रात को १०॥ बजे सोया।

२-१-१४

६ बजे दूकान का काम देखा। आज कजर से एक घोडी ३४०) मे मोल ली।

जीन प्रेस होता हुआ बगीचे गया। टेनिस, ब्रिज खेला। रात को ६॥ बजे सोया।

३-१-१४

आज बंबई से माटसुमका आया था। बहुत-सी बातें हुईं। वहा से बंबईवाले भुसानसाहब से मिलने गये। बातें हुई। तीन जापानी साहब और आये थे। उनसे बातचीत हुई। घर पर मंदिर मे ज्ञानेश्वरी पर विष्णुबुवा जोग की कथा सुनी। विषय-वासना पर अच्छे दृष्टांत सुनाये थे। बाद मे विद्यार्थियो के भजन हुए।

कल जो घोडी ली थी, उसे चोट आ गई।

६-१-१४

शाम को डिप्टी इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस से मिलने गये। बहुत-सी बातें हुईं।

७-१-१४

बजे नागपुर डिविजन के डिप्टी इन्स्पेक्टर जनरल हेलेटसाहब व

बच्चावाले स्कूल और बोर्डिंग देखने आये। १॥ घंटे तक देखते रहे, बहुत खुश हुए।
घर पर गीता सुनी। रात को १०॥ बजे सो गया।

८-१-१४

जावरा जीन से सा० तुलाराम के बगीचे गया। वहां तुलारामजी, गौरीशंकरजी से बहुत-सी बातें हुई। पोद्दारों के यहां भोजन किया। शाम को पोद्दारों के बगीचे होते हुए तुलारामजी के पास गये। थोड़ी देर तक बातें होती रहीं। गौरीशंकरजी भी साथ थे। घर गौरीशंकरजी जीमने आये। आनन्द के साथ भोजन किया और बातें हुई। गायन-वादन के बाद १० बजे सोने गया।

९-१-१४

जापान का बीमावाला साहब बिलासपुर के पास फर्स्ट क्लास में ऊपर की सीट पर से गिर पड़ा, ऐसा तार आया। नागपुर से शाम तक डाक्टर वगैरा की तजवीज की।
टेनिस, बैडमिंटन, ब्रिज खेला। रात को ज्ञानेश्वरी पढ़ी और इंग्लिश का अभ्यास किया।

१०-१-१४

कारोनेशन के खेलों के उपलक्ष्य में बोर्डिंग के लड़कों को इनाम दिया गया। एक घंटा जीन में गया। जाजूजी के यहां भोजन किया। जापान के बीमा-वाले साहब को, जिन्हें कम चोट आ गई थी, मेल से रवाना किया। घर पर किसनलालजी के साथ भोजन किया। जाजूजी से घर के बारे में बहुत-सी बातें की।

वर्धा-देवली ११-१-१४

टाउन हॉल में मेम्बरों का चुनाव था। बाद में ११ बजे तक कमेटी में गया। बोर्डिंग में भोजन किया। बिरदीचन्दजी की तरफ से पार्टी थी। ८॥ बजे के अन्दाज घोड़े के तांगे से देवली रवाना हुए। ४। बजे के करीब देवली पहुंचे। जीन वगैरा देखी।

देवली १२-१-१४

नित्य कर्म से निपटकर आज बाल बनवाये। जीन में पीसे हुए (मांडे हुए) माल का बन्दोबस्त किया। स्नान, पूजन, विश्राम और मिलनेवालों से बातचीत की। नारंगी (बिजौरा) का सौदा किया। १॥ बजे पैदल सैर देखने गया। नदी पर निपटे और दूसरा गेट देखा। पैदल वापस आये और जीन में गये। बाद में देशमुख के यहां पान-सुपारी को गये। घाटआजी जाने को गोपीलाल व लक्ष्मणराव को कहा।

देवली-वर्धा १३-१-१४

कई जने मिलने आये। डाक्टर, रजिस्ट्रार, म्युनिसिपल सेक्रेटरी, हैडमास्टर आदि से बातें हुईं। घोड़े के तांगे से रवाना हुए। सालोड़ (गांव) में थोड़ी देर रुके। बाद में गोपालजी के साथ वर्धा आये।

वर्धा १४-१-१४

नित्यकर्म से निवृत्त होकर ११ बजे तक गोरक्षण के मेले में रहा। चन्दा वसूल किया।

१६-१-१४

घर पर नित्यकर्म से निवृत्त होकर रामायण सुनी।
श्रीनारायणजी अमरावतीवाले से बातें हुईं। बिरदीचन्दजी पोद्दार के साथ रामनाथजी के लड़के मोहन को देखने गये। बगीचे में स्वामीजी से बातें की। ११ बजे सोया।

१७-१-१४

घर पर नित्यकर्म से निवृत्त होकर वाल्मीकि रामायण सुनी। जाजूजी के यहां भोजन किया। शिवभगवान का गीता पर उपदेश सुना। पत्र आदि के बाद जयनारायण केजडीवाल के यहां बैठने गये। बगीचे में टेनिस, ब्रिज आदि खेलने के बाद भोजन करके खरे के पास पढ़ा। नरसिंहदासजी मोहता मिलने आये। १०॥ बजे तक बातें होती रहीं। ११ बजे सोया।

१८-१-१४

से निवृत्त होकर रामायण सुनी। चुन्नीलाल हिंगनघाटवाले से

बातें हुई। नरसिंहदासजी मंदिर आये, मामूली बातें हुई। दोपहर को बाल बनवाये। टाउन हॉल में, शंकरराव मेंबर विलायत जानेवाले हैं, इसलिए मराठा होस्टल की तरफ से सभा हुई। शंकरराव की बहुत देर तक राह देखी, पर नहीं आये। एक सेट टेनिस का खेलकर जाजूजी के साथ रामनाथजी के यहा मोहनलालजी की तबीयत देखने गये। रात को पढ़ाई और बाद मे सोना।

२०-१-१४

घर पर नित्यकर्म से निवृत्त होकर सीत्या महाराज का मान देखा। नरसिंहदास-का सौदा २०० गांठों का २०६ में सैटल किया। ७॥ बजे के करीब राम-नाथजी के बगीचे गये, मोहनलाल की तबीयत देखने ९। बजे तक वहा रहे। रामनाथजी वगैरा को भोजन कराया। दिलासा दिया कि मोहनलाल को आराम हो जायगा। वह किसी प्रकार अच्छा हो, ऐसी हार्दिक इच्छा थी। पर मन मे फिकर थी। घर आकर भोजन किया। बाद में सुना कि मोहन-लाल का शरीर शांत हो गया। बड़ी फिकर हुई। १० बजे सोये।

२१-१-१४

जल्दी उठकर रामनाथजी के बगीचे गये। बाद में भगवानदासजी के बगीचे गये। ११॥ बजे घर आकर स्नान करके १२ बजे भोजन किया। स्त्रियों का रुदन बड़ा ही भयानक था। जीन वगैरा होता हुआ बगीचे में स्वामीजी से बातें की। टेनिस, ब्रिज आदि खेले। घर पर भोजन, मंदिर मे गायन आदि सुनने के बाद १०॥ बजे रात को सोया।

२२-१-१४

निवृत्त होकर कथा सुनी। रामनाथजी के यहा गये, १॥ घंटे तक बातचीत होती रही। मोहनलाल की बहू को समझाया। घर पर भोजन किया, फिर वालकट से सौदा तय किया। शाम को सुना कि छेदराज ब्राह्मण का देहांत हो गया।

नागपुर जाने का विचार था, सो तैयारी की और ११ बजे सोया।

नागपुर २३-१-१४

जल्दी निवृत्त होकर मेल से नागपुर रवाना हो गया। रेल में मोतीलाल पोद्दार से बहुत-सी बातें हुईं। विश्वनाथजी राठी से मिले। उन्हीं के यहां भोजन किया। मारवाड़ी बोर्डिंग हाउस देखा। वगैरा नागपुर का रुई बाजार देखा। बाद में बालकट का जला हुआ माल देखा। बालकट के एजेंट धनजीभाई व धीमावाले से बहुत-सी बातें हुईं। वमनजी एम्प्रेस मिल के एजेंट मिले। पोद्दारों के यहां जीवनराजजी से बातें हुईं। नीलाम हुआ। जोखिम ज्यादा थी। ६ की गाड़ी से वर्धा, १०।। बजे पहुंचे।

वर्धा २४-१-१४

नित्यकर्म से निवृत्त होकर रामायण सुनी। बंधावाले कप्तानसाहब मिलने आये थे। गंज में गये। कपास का भाव ८०।।। निकला। बंबई में मंदी थी। पोद्दार के यहां बिरदीचंदजी से मिले। बोर्डिंग के लड़कों की हिंगनघाट हाईस्कूलवालों से मैच हुआ, बराबर रहे। आर्वी से आये हुए मेहमानों को भोजन कराया। कोआपरेटिव बैंक की मीटिंग हुई। १०।। बजे सोया।

२६-१-१४

रात को नागपुर की वकील-मंडली ने 'तोतयाचा बंड' नाटक खेला, वह देखा। बिरदीचंदजी आदि साथ थे। पार्वतीबाई, हैबतराव, नाना फड़नवीस, वामन भट आदि पात्रों ने अच्छा काम किया। ३।। बजे घर आकर ४ बजे सोया।

३०-१-१४

शाम को माटसुमका (जापानी) के साथ बगीचे में टेनिस, ब्रिज खेली। रात को मामूली कार्य किया।

३१-१-१४

नित्यकर्म से निवृत्त होकर रामायण सुनी।
आज माटसुमका (भुमान एजंट) बंबई जानेवाला था। उससे बातें कीं। रामनाथजी का आदमी आया था। उनके यहां गया। बावनवीर की कहानी सुनी। वहां से घर माटसुमका से मिले। वह मेल से बंबई गया।
नये डिप्टी कमिश्नर वेचलर मेल से वर्धा आये। भोजन के बाद लक्ष्मी-

लगवान-मंदिर और वहां से राम-मंदिर गये। वहां वालचन्दजी का व्याख्यान 'स्वधर्म' विषय पर सुना। ११ बजे घर आकर सोये।

१-२-१४

पोद्दारों के बगीचे जाकर बिन्दीचंदजी से बातचीत की। कोआपरेटिव बैंक के सज्जनों के लिए पाई से बात की। कल के व्याख्यान की समालोचना की। घर पर पंडितजी ने एक घंटा वेद सुनाया। बाद में मारवाड़ी विद्यालय की कमेटी हुई। ११ बजे तक चर्चा होती रही। ११॥ बजे सोया।

२-२-१४

भोजन के बाद मिस्टर टकाया नागी के साथ ४-५ कंपाउंड में घूमकर कपास और रुई देखी। १ बजे वापस आकर व्यवहार-संबंधी कार्य किया। शाम को पोद्दारों के यहां गया। जापान कॉटन के एजंट मि० डेमुरो से मिले। घर पर भोजन किया। मिस्टर किटा और मिस्टर सुगीफुजी आये। उनसे मुलाकात की। उन्हें घर पर 'दामाजी' नाटक देखने का निमंत्रण दिया। उन्होंने कबूल किया। व्यवस्था की। वे पौन घंटे तक नाटक देखते रहे। बहुत खुश हुए। ढाई बजे तक नाटक देखकर सोया।

३-२-१४

जापान कॉटन कंपनी के मैनेजिंग डायरेक्टर मि० किटा बगीचे आये। वहां गये। उनसे बहुत देर तक बहुत-सी बातें हुईं। वह घर आये। उन्हें हार पहनाया। उनके घर डाली (फल आदि) भेजी। २॥ बजे की एक्सप्रेस से मि० किटा नागपुर गये। उन्हें पहुंचाने स्टेशन गया। पू० रामगोपालजी के साथ उनकी दूकान गये। बहुत-सी बातचीत हुई।

५-२-१४

नित्यकार्य और कथा सुनी। व्यवहार-कार्य किया। जाजूजी से बातचीत। बगीचे टेनिस खेलकर सुमान के बंगले गये। उपनिषद् पढ़ी।

६-२-१४

कोल्हापुरवाले दौलतराव राणे के समधी मिलने आये। उनसे बातचीत की। बगीचा देखा। विश्राम के बाद व्यवहार-कार्य किया।

८-२-१४

विद्यार्थी-गृह-संबंधी जाजूजी से बहुत-सी बातचीत हुई। बिरदीचंदजी नहीं आये।

९-२-१४

तबीयत अस्वस्थ रहने के कारण शिवरामनजी वैद्य की दवा ली। 'जीवन-कर्तव्य' पढ़ा। विचार चलते रहे।
शाम को पोद्दारों के बगीचे गारे की पार्टी थी। वहा गये, थोड़ा खाया। बात-चीत की।

११-२-१४

तबीयत ठीक नहीं थी। दवावाले कप्तानसाहब व रा० ब० बर्ट सिविल सर्जन आये। उनसे बातचीत की।

१३-२-१४

तबीयत ठीक थी। बिना पत्तों[1] का कपास छटवाया। अन्दाज १६०० मन था। राठीजी किसन की ओर से उदास होने लगे। उन्हें समझाया बगीचे में टेनिस, ब्रिज खेली।

१४-२-१४

आज तबीयत ठीक मालूम दी। तेल मालिश करवाई। बोर्डिंग, जीन प्रेस व बगीचे गये। बगीचे में टेनिस ब्रिज आदि खेली। रात के भोजन के बाद मन्दिर में गायन सुना। पोद्दारों के यहां जाकर बिरदीचंदजी से बातें की।

१७-२-१४

तबीयत साधारण ठीक थी। बालाराम सेक्रेटरी आया। उससे बहुत-सी बातें। बोर्डिंग व जीन प्रेस गया।

१८-२-१४

डिप्टी कमिश्नर के बंगले गये। पहले वाटर नेस्टसाहब से मिले।

---

[1] कपास चुनते समय लगा हुआ पत्ते का कचरा।

बहुत देर तक विद्यार्थी-गृह विद्यालय आदि विषय पर बातचीत हुई। बाद में बेचलर—डिप्टी कमिश्नर से मिले। उनके साथ आनन्द के साथ एक घण्टा बातचीत हुई। देश की उन्नति-सम्बन्धी विलायत के बहुत-से उदाहरण उन्होंने दिये।

आज बारिश की बहुत अधिक सम्भावना थी, इसलिए ४ से ६॥ बजे तक जीन में रहे।

१६-२-१४

नित्य कार्य से निवृत्त होकर कथा सुनी। आंखों में दर्द था, इसलिए दवा से सेक किया। भोजन कर रुई-बाजार में गये। वहां १२॥ बजे तक रहे। भाव ७०॥। का नोट किया गया।

हनुमानगढ़ पर ४॥ बजे गये। गोपाल काला[1] देखा। श्रीधर पंत गुरुजी से वार्तालाप किया। रायपुरवाले माधवराव सप्रे से अध्यात्म तथा आत्म-विद्या-सम्बन्धी बातें। बगीचे में रात को कठोपनिषद सुनी।

२०-२-१४

आज कथा में सीता-हरण के विषय में रामचन्द्रजी का आश्चर्यजनक विलाप का प्रसंग आया।

बिरदीचंदजी पोद्दार के यहां गये। उनको अब आगे सौदा-सट्टा न करने के लिए भली प्रकार समझाया। स्वोड़ा अकोला से आया।

वर्धा, २२-२-१४

म्युनिसिपल कमेटी की मीटिंग थी। मिस्टर वाटरसन आये। शहर बढ़ाने के विषय में बातचीत हुई।

श्रीनारायणजी अमरावतीवालों से बातचीत। भागचन्दजी मिलने आये। दुलीचन्द के विवाह की जनेत (बारात) का काम हुआ।

---

[1] महाराष्ट्र में कृष्ण की 'माखन-चोर-लीला' का अभिनय।

२३-२-१४

शिवरात्रि का उपवास था। फलाहार १ बजे लिया। उधारी देखी। जानूजी से ८ बजे मिले। उनसे वार्तालाप। पोद्दारों के बगीचे गये। लॉन में बातचीत। वजन लिया। २ मन ३० सेर हुआ। घर ८ बजे आये। बाद में मन्दिर में विद्यार्थियों के भजन सुने।

२४-२-१४

सोहनी मास्टर के जिमनास्टिक के प्रयोग देखे। ठीक हुए। भिडे मास्टर से बहुत-सी बातचीत की। उनका इरादा दूसरी जगह, अधिक लाभ हो तो जाने का दिखा।

पोद्दारों के यहा विरदीचन्दजी से बातचीत। उनके साथ बोर्डिंग गया। उन्होंने भी सोहनी के प्रयोगों को ठीक बताया।

२५-२-१४

भुसान के एजेंट से बातचीत। जीन प्रेस व बगीचे गया।

२६-२-१४

सोहनी के प्रयोग देखकर उसकी रीति आदि उनसे पूछी।
माडक हाईस्कूल मे स्कॉलरशिप का टेस्ट (परीक्षा) था। मुकुन्दराम मास्टर बुलाने आये थे। वहा गये। जोन्ससाहब से मिले।
राजा टोडरमल का इतिहास पढा। रात को नीद ठीक नहीं आई।

२७-२-१४

दयामानाजी के साथ जीन प्रेस गया। भोजन के बाद विश्राम व व्यवहार-कार्य।

१-३-१४

म्युनिसिपल कमेटी मे गये। हिन्दी स्कूल अप्रैल से शुरु करने का निश्चय हुआ। टाऊन हॉल मे एम० ए० पढे सज्जन का अंग्रेजी मे व्याख्यान हुआ। व्याख्यान ठीक रहा। खरेसाहब की समालोचना भी ठीक मालूम हुई।

२-३-१४

पूज्य रामगोपालजी से मिले। उनसे बातचीत हुई। पू० जीवराजजी से

मिले। वह दिल्ली गये।
शाम को हाईस्कूल की स्कॉलरशिप का टेस्ट था, वहा गये। टाऊन हॉल मे बेंच के मुकदमे करने गया। शरीर मे थकावट थी, इसलिए जल्दी सो गया।

२-३-१४

चार बजे आख खुल गई। भजन वगैरा किये।
जाजूजी के यहा तथा बोर्डिंग मे गया। नथमलजी जाजू से आर्वी बोर्डिंग के फड के विषय मे बातचीत की। नागरमलजी पोद्दार आये। उन्हे बोर्डिंग दिखाया। भोजन करके नागरमलजी से मिलने गये। दूकान से रुपये भेजने को कहा अथवा पू० जमनाधरजी के हाथ की चिट्ठी भेजने को कहा।

६-३-१४

टक्कामालागी से काफी बाते की। वह कल बम्बई जा रहा है।

७-३-१४

विद्यार्थी-गृह मे पेपर देखे और गायन सुना। पत्रादि लिखे। भुमान का एक्रेट टक्कामालागी आज बम्बई गया। उसे पहुचाने स्टेशन गया।
बिरदीचदजी के साथ बगीचे गये। जावरा जीन होते हुए मराठी वर्नाक्युलर स्कूल का रिजल्ट देखने गये। आज दुनिया व वैभव पास हुए इसलिए पोद्दारो के यहा चावली के चावल का भोजन हुआ। दूकान पर गाडीजी से खरीदी के विषय मे बहुत-सी बातो की चर्चा।

८-३-१४

बिरदीचदजी के यहा गया और उनसे बातचीत की। जीन प्रेस आदि म गया। भोजन के बाद रात को उपनिषद पढ़ी। बाद मे बिरदीचदजी पोद्दार व बालचन्दजी के साथ सत्य सुखराम नाटक देखने गये। नाटक ठीक हुआ। विद्यार्थीगृह के लड़को की देख-भाल कर ३ बजे सोया।

६.-

रात का जागरण था, इसलिए आ...
गुनावाला ध्यवटराव एकप्रेस मे अ...

वर्धा, २९-३-१४

सेन से वर्धा पहुंचे। नित्यकर्म से निवृत्त होकर डाक पढ़ी। यवतमालवालों से बातचीत की। गोपीनाथ की परिस्थिति उन्हें बता दी।

आज गणगौर निकलनेवाली थी। उसकी तैयारी की। शाम को गणगौर उत्साह के साथ निकाली गई। एक-दो लोगों को छोड़कर सभी आ गये थे। आज पू० रामगोपालजी भी मिले थे, उनसे बातें हुईं। वृद्धिचन्द्रजी का पत्र भगवानदासजी ने दिया। पढ़कर चिन्ता व शोक हुआ। कुछ देर बाद समाधान हुआ।

३०-३-१४

विद्यार्थी-गृह गये। पूना के बापूराव कोनगावकर हिंगणे[1] की संस्था के लिए आये। दस रुपये चंदे में दिये। जैन बोर्डिंग के सुपरिंटेंडेंट से बातचीत हुई।

१-४-१४

बोर्डिंग का व्याख्यान-कार्य देखा। भोजन व विश्राम के बाद विप्रदेवी मास्टरनी से व्यवस्था-कार्य-सम्बन्धी बातें। रजिस्ट्रार की कचहरी में गये। विद्यालय का पावर ऑव अटर्नी रजिस्टरी करवाकर बम्बई भेजा।

शाम को बच्चेवाले के यहां गये। वह नहीं मिले। त्र्यंबक की माता से थोड़ी देर बातचीत की। बगीचे में पूना के कोनगावकर तथा पाठक आये। रात को व्याख्यान में नागपुरवाले दीनदयालु वाजपेयी ठीक बोले।

८-४-१४

पौनार के बगीचे तक घूमने गया। वापस आते रामनाथजी से मिला। इनसे

---

[1] श्री कर्वेजी द्वारा स्थापित स्त्री-शिक्षा की संस्था।

आदि कर उन्हीं के यहां भोजन किया। दो बजे गाडी वहां से रवाना हुई। रास्ते में ब्रिज खेले और कुछ वाचन किया। चक्रधरपुर में साग-पूडी खाई और खिलाई।

कलकत्ता १६-४-१४

खड़गपुर में नींद खुली। अड्डा में लक्ष्मीनारायणजी आदि मिले। उनके साथ मोटर में, रेलगाडी के हावड़ा पहुंचने के पहले ही पहुंच गये। ओंकारमलजी जटिया के यहां ठहरे। भोजन आदि कर विश्राम लिया। लक्ष्मीनारायणजी, ओंकारमल और उनके भाई आदि मिलने आये। उनसे बातचीत। निवासी के साथ गये। बाद में ओंकारमलजी के साथ मोटर में घूमने गये। वापस आकर भोजन किया।

१७-४-१४

सवेरे ४॥ बजे फेरे में गये। निवृत्त होकर पू० रामगोपालजी के पास गये। वहां २॥-३ घंटा वादविवाद होता रहा। हरीरामजी साहब का कहना ठीक था। वहां से शिवप्रसादजी गाडोदिया के साथ पोद्दार की दूकान गये। भोजन करके डेरे आये। लक्ष्मीनारायणजी सराफ व उनके भाई आदि से बातें कीं। शाम को जोखीरामजी से मिलने गया, उनके साथ किले की तरफ घूमने गये।

आज शाम को श्री दयानंद विद्यालय देखा। प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका, ज्वालाप्रसादजी कानोडिया आदि से बहुत सी बातें शिक्षा-प्रचार व समाज-सुधार के विषय में हुई। उनके साथ बगीचे घूमने गये। श्रीरामजी की सगाई की बात भी हुई।

१८-४-१४

हिंदी-क्लब का निरीक्षण किया। मारवाडी जाति में यहां व्यायाम का काम व रुचि देखकर आनन्द हुआ। वहां जुगलकिशोरजी बिड़ला से बातचीत की। श्री गंगाजी स्नान करने गये। वहां से श्रीराम बजाज के साथ डेरे पर आये। जोखीराम के यहां भोजन करने गये।

जुगलकिशोरजी बिड़ला डेरे पर मिलने आये। बहुत देर तक बातें होतीं

बातचीत।

२२-४-१४

दुर्गाप्रसादजी खेतान से बातचीत हुई। सेठ राधाकिसनजी पोद्दार, जुहारमलजी खेमका, दौलतरामजी व रामदेवजी चोखानी से मिले। बहुत-सी बातें हुईं। रात को पुरजे का भुगतान बंद होने के विषय में बातचीत की। कानुरामजी केडिया के यहां भोजन किया। तुलारामजी गोयनका मिलने आये। बहुत देर तक बातचीत हुई। बाद में लक्ष्मीनारायणजी सराफ के यहां गये। दो-तीन घंटे बातचीत हुई। गिलकिया जाना था, पर बारिश आ गई। आर्वी वाले शालीग्रामजी जगदीशजी गये। दुर्गाप्रसाद खेतान के यहां भोजन के लिए गये। आनंद के साथ भोजन और बातचीत की। बाद में फूलचंदजी के साथ बातचीत करते हुए घर आया।

२३-४-१४

रामदेवजी चोखानी व फूलचंदजी मिलने आये। उनसे बातचीत हुई। फूलचंदजी चौधरी के साथ धन्नूलालजी अटर्नी, जगन्नाथजी झुनझुनवाला तथा रूपमलजी गोयनका के यहां मिलने गये। बहुत-सी बातचीत हुई। डेरे पर १२ बजे भोजन व विश्राम। जो लोग मिलने आये, उनसे बातचीत।

शाम को लक्ष्मीनारायणजी सराफ के बगीचे भोजन के लिए जाना हुआ। बहुत-से सज्जन आये थे। एक बंगाली ने नक्शे का काम बहुत बढ़िया किया था। आनंद से भोजन हुआ।

२४-४-१४

गर्मी मिटी नहीं। हावड़े गये। रामप्रसादजी सर्राफ, भीमाबाई, मुरारीलालजी गोयनका आदि से मिले। डेरे पर भोजन किया। मिलनेवाले आये।

रामनिवास पोद्दार के साथ लक्ष्मी काटन मिल में जाना हुआ। वहां दोनों गांठों का सौदा हुआ। गाड़ी के घोड़े को चोट आई। डेरे आये। महादेव-प्रसाद पोद्दार, सीताराम सेकसरिया आदि के साथ भारत मित्र आफिस में गये। वहां बातचीत की। वहां से मिल देखने गये। सीताराम के साथ दुर्गा-प्रसाद का बगीचा देखा। ओंकारमलजी जटिया के यहां भोज था। वहां मोटर

और मनरे गये। पण्डितजी व बालुजी से बातचीत की। मोरे-
ई का प्रबंध किया। पोद्दारों के यहां मिलने के लिए गया।

३०-४-१४

गपुरे व कृष्णराव वाने के यहां यज्ञोपवीत में गये। आज शरीर
मालूम दिया, सर में थोड़ा दर्द था। पू० कनीरामजी कानाजी
। उनसे बातचीत की। शाम को उन्हें स्टेशन पहुंचाने गये।

२-५-१४

रा से मिलने गये। पोद्दारों के यहां भोजन किया। रात में
भजन सुने।

रजी की बड़ी लड़की गुजर गई।

३-५-१४

पर पर पत्र-व्यवहार किया। रुई के नमूने भिजवाये। वर्षा
भी थी। जाजजी के साथ छत पर आनंद के साथ भोजन और
संबंधी कई प्रकार की बातें हुईं।

४-५-१४

णे के भाई, जो डाक्टर हैं, की लड़की की शादी थी। वहां गये।
आदि मिले।

के यहां गये। वहां से पोद्दारों के बगीचे गया और जाजजी से
।

६-५-१४

नू हुआ। भोजन के बाद व्यवहार-कार्य। २ से ६ बजे तक मुन-
। करते रहे। जो नई पोथी व नई वग्गी खरीदी थी, नागरमलजी
वैठकर बोडिंग गये। वहां बहुत देर तक नागरमलजी, पण्डितजी
साथ बातचीत हुई और बाद में पोद्दारों के यहां भोजन।

७-५-१४

शापर, सरे, पाणे आदि से बातचीत। मुकदमे का काम-काज

बम्बई की तैयारी की। दमूजी आये। अनुपस्थिति मे काम की व्यवस्था उनको समझाई। पू० रामगोपालजी से मिले। मेल से रवाना हुए। स्टेशन पर पहुचाने बहुत-से लोग आये थे। पुलगाव मे जलपान लेकर बसीलाल आया उसे कलकत्ते की बात समझाई और कलकत्ते जाने को कहा। धामणगाव मे भागचदजी व बडनेरा मे कोठारी आये। अकोला मे श्रीराम रामधनजी व शेगाव मे जुहारमलजी मुसरफा जल व दूध लेकर आये। भुसावल मे राम-भाऊ की तरफ से जल और दूध लेकर आये व मनमाड मे राधाकृष्ण आये रात को निद्रा ठीक नही आई। कमला की मा की तबीयत अस्वस्थ रही।

बंबई १२-५-१२

इगतपुरी मे आख खुली। पहाड का दृश्य देखते रहे। कमला खेल रही थी। दादर स्टेशन से सामान रेल मे भेजा और मोटर मे बैठकर बगले गये बगला तो ठीक मालूम दिया, पर रास्ता ठीक नही था।

शाम को पोस्ट आफिस मार्केट आदि घूमकर घर गये। जोरावरमलजी पोद्दार, हरिकिसनजी, बैजनाथजी के मुनीम मिलने आये। उनसे बातचीत

१३-५-१४

वर्धावाले रमानदजी बजाज आये। उनसे बातचीत करके फतेचदजी रूइया के यहा मिलने गया। वहा बातचीत की और भोजन किया।

११-१५ की गाडी से बबई गये। रास्ते मे रामनारायणजी व सूरजमलजी की दूकान पर गये और वहा व्यवहार-सबधी बाते की। सीतारामजी सिघा-निया के यहा बैठने गये। वहा से भुमान के आफिस। फुलशोरी २० तारीख को जापान जा रहे हैं। फिर गुलाबचदजी ढढ्ढा आदि से मिलकर कुलाब गये। वहा से कुसुमाटो से मिले। ५॥ बजे की गाडी से अधेरी रवाना।

१४-५-१४

सवेरे वरसोवा की सडक तक घूमने व निपटने गये। तालाब पर हाथ धोये मालिश करवाकर नीम के पत्ते के पानी से स्नान किया। ५ बजे तक अधेरी ही रहे। बबई ५-५७ की गाडी से गये। चर्नीरोड सोनीराम के साथ उतरे वहा से तारदेव जाकर मगनबाई से मिले। माणकचदजी सोलापुरवालो से

रेल में शिवदत्तराय किसनलाल रुइया आदि से समाज-सुधार पर चर्चा। शाम को सोनीराम मीनाराम के भजन व गायन सुने। फत्तेचन्द, किसनलाल जोरावरमलजी पोद्दार से १०1 बजे तक समाज के विषय में बातचीत।

१७-५-१४

मराठी साधना सीखने का प्रयत्न किया। फुलगोरी व उसके परिवार से परिवार-सहित मिलकर आया।

मारवाड़ी वाचनालय की सभा थी। नियम वगैरा बनाने थे। इसलिए वहां गये। वहां दो-तीन घंटे लगे। केशवदेवजी नेवटिया आदि से परिचय हुआ। वहां से दानीजी के यहां गये। वहां जलपान किया। माधोबाग में प० बनारसीदासजी, अमृतलालजी चक्रवर्ती व गणेशरामजी बीकानेरवालों के सत्कार पर भाषण हुए। चक्रवर्तीजी का अधिक प्रभावशाली हुआ। किंतु कन्या-विवाह पर उन्होंने जो कहा, वह अनुचित था।

केशवदेवजी के साथ अंधेरी आया।

१८-५-१४

आज बम्बई नहीं गये। सानाक्रुझ तक पैदल घूमे। वापस रेल से लौटे। शाम को १० बजे पुरुषोत्तमदासजी के यहां भोजन किया। गंगाधरजी बागला भी आनेवाले थे। वह कार्यवश नहीं आये। वहां बहुत-सी बातचीत हुई।

१९-५-१४

१-२५ की गाड़ी से बम्बई गया। बोरीबंदर होकर भुसान के दफ्तर गये। फुलगोरीसाहब की मेम के लिए घड़ी खरीदी। रखोडा के साथ व्यंकटेश्वर आफिस व जावरेवालों के यहां होकर फुलाबा गये। वहां फुलगोरीसाहब का सम्मान-समारोह था। व्यापारी लोगों ने पान-इत्र बड़े उत्साह के साथ दिया। बहुत-से लोग एकत्र हुए थे। मैंने थोड़ा हिंदी में कहा। रामनारायणजी रुइया के साथ अंधेरी आये। रास्ते में बातचीत की।

२०-५-१४

नित्यकार्य से जल्दी निवृत्त होकर ६ बजे की गाड़ी से चर्चगेट गया। घड़ी पर नाम खुदवाया। घड़ी भुगतान के दफ्तरवाले कई लोगों ने देखी। उन्हें

गये। दरिया पर स्नान किया और बहुत देर तक ठहरे। घर लौटकर भोजन किया।

४-३३, की गाड़ी से बम्बई गये। ६॥ बजे के गाड़ी से वापस लौटे। रास्ते में प० बनवारीलालजी से बहुत-सी बातें, सीताराम के विवाह के विषय में होती रही। केशवदेवजी नेवटिया से भी बातें।

२६-५-१४

पुरुषोत्तम जाजोदिया को भली प्रकार समझाया। उनके लिए जो विचार थे, वे अब नहीं रहे।

श्रीनिवासदासजी जावरेवाले आये। उनसे बहुत-सी बातें हुईं।

१-२० की गाड़ी से बम्बई गया। चेनीराम जेसराज की दूकान, भुगान के दफ्तर, मर्चेंट बैंक होकर श्रीनिवासजी के साथ पंचायतवाडी में आया। वहां बहुत-सी बातें हुईं। बच्चों को कुछ दिया।

५ बजे की गाड़ी से रामेश्वरदासजी बिड़ला व केशवदेवजी के साथ माटुंगा गये। वहां कार्ड[1]-सम्बन्धी बहुत-सी बातें हुईं।

भोजन के बाद फतेचन्द रूइया से बातचीत।

२७-५-१४

रामनारायणजी से मिलने गये। उनसे बातें कीं। बाबूराम खरे, उनकी पत्नी व बालक नासिक से आये। उनकी व्यवस्था की। भोजन के बाद विश्राम। फिर स्वामी रामतीर्थ का जीवन १२॥ बजे तक पढ़ा और पत्र-व्यवहार किया।

२ बजे की गाड़ी से बम्बई गया और कुलाबा होकर वापस आया।

२८-५-१४

बाबूराव खरे से बातचीत की। २-१५ की गाड़ी से चर्चगेट स्टेशन उतरे। रास्ते में गोवर्धनदास तेजपाल आदि से बातचीत।

किले में घूमकर ६-८ की गाड़ी से मरीन लाइन्स से बैठे। साथ में मीठामल

---

[1]. शेयर-बाजार या रुई-बाजार का प्रवेश-पत्र

गये। दरिया पर स्नान किया और बहुत देर तक ठहरे। घर लौटकर भोजन किया।

४-२३, की गाड़ी से बम्बई गये। ६॥ बजे की गाड़ी से वापस लौटे। रास्ते में प० बनवारीलालजी से बहुत-सी बातें, सीताराम के विवाह के विषय में होती रहीं। केशवदेवजी नेवटिया से भी बातें।

२६-५-१४

पुरुषोत्तम जाजोदिया को भली प्रकार समझाया। उनके लिए जो विचार थे, वे अब नहीं रहे।

श्रीनिवासदासजी जावरेवाले आये। उनसे बहुत-सी बातें हुईं।

१-२० की गाड़ी से बम्बई गया। चेनीराम जेसराज की दुकान, भुसान के दफ्तर, मर्चेंट बैंक होकर श्रीनिवासजी के साथ पंचायतवाडी में आया। वहां बहुत-सी बातें हुईं। बच्चों को कुछ दिया।

५ बजे की गाड़ी से रामेश्वरदासजी बिड़ला व केशवदेवजी के साथ माटुंगा गये। वहां बाड़े[1]-सम्बन्धी बहुत-सी बातें हुईं।

भोजन के बाद फतेचन्द रूइया से बातचीत।

२७-५-१४

रामनारायणजी से मिलने गये। उनसे बातें कीं। बाबूराम खरे, उनकी पत्नी व बालक नासिक से आये। उनकी व्यवस्था की। भोजन के बाद विश्राम। फिर स्वामी रामतीर्थ का जीवन १२॥ बजे तक पढ़ा और पत्र-व्यवहार किया।

२ बजे की गाड़ी से बम्बई गया और कुलाबा होकर वापस आया।

२८-५-१४

बाबूराव खरे से बातचीत की। ७-१५ की गाड़ी से चर्चगेट स्टेशन उतरे। रास्ते में गोवर्धनदास तेजपाल आदि से बातचीत।

किले में घूमकर ६-८ की गाड़ी से मरीन लाइन्स से बैठे। साथ में सीताराम

---

[1] शेयर-बाजार या रुई-बाजार का प्रवेश-पत्र

बल्लूभाई, दुलीचन्दजी, लक्ष्मणदासजी डागा, पण्डित गणेशदत्तजी बीकानेर-वाले पुरुषोत्तम, सीताराम पोद्दार, हैडमास्टर आदि कई सज्जन आये। आनन्द के साथ वार्तालाप हुआ। गायक विद्यासागरजी का गायन, भजन, ठंडाई आदि के बाद बड़े आनन्द के साथ भोजन हुआ। रसोई उत्तम हुई। आज बाबूराव पगे आदि १३-१४ सज्जन आ गये थे। उन्हें भी प्रेम से भोजन कराया। सभी बहुत खुश हुए।

२-६-१४

८-१५ की गाड़ी से ग्रांट रोड उतरे। रेल में गोवर्धनदास सेठ साथ थे। दुलीचन्दजी कलकत्तेवालों से मिले। उनसे बातचीत। कुलाबा होकर अंधेरी आया।

दुलीचन्दजी की वृत्ति में कुछ फर्क दिखाई दिया। वह रामायण पढ़ते थे और ज्ञान के विषय में उनकी वार्ता सुनी।

३-६-१४

विलेपार्ले स्टेशन तक पैदल आकर ८.४१ की गाडी से चर्चगेट कुलाबा आदि गया। एक्सेलसियर सिनेमा देखा। ८-२० की गाडी से अंधेरी वापस आया।

४-६-१४

४ बजे की गाडी से बम्बई गया। चर्चगेट से कुलाबा। सीताराम पोद्दार मिले। उनसे बातचीत हुई।

पण्डित बनवारीलाल को ११ रुपये बिदाई दी। माधोबाग होकर ग्रांट रोड से अंधेरी आये। आज अमरस-पूड़ी का भोजन किया।

५-६-१४

रामनारायणजी रुइया, सूरजमलजी, आनन्दलाल लल्लुभाई आदि से मिले। ४ बजे की गाडी से बम्बई गये। स्वदेशी स्टोअर होकर गेइटी थियेटर। वहां सिनेमा, मिस लेसी का नाच, कसरत आदि देखी। ६-१७ की गाडी से अंधेरी आया। रेल में मॉनिमिटर रोमर मिले। उनसे थोड़ी बातचीत हुई। उसी डिब्बे में थाना के डी० एम० मिले, उनसे बहुत-सी बातचीत हुई।

[illegible] किया। १४-२० मील से ज्यादा स्पीड देने को कहा। वहां से [illegible]। [illegible] की [illegible]। [illegible] बेचने की कोशिश की। मौका नहीं हुआ। [illegible] के साथ मारोवाग जाने के लिए रवाना हुए। रास्ते में [illegible] के मारोवाग [illegible] से मिले। उनसे बातचीत हुई। उन्होंने [illegible] को कहा। बाद में बाबूराव से मिले। उनकी [illegible] नहीं थी। वर्षा शुरू हो जाने से मारोवाग नहीं गये। चर्चगेट से [illegible] आ गये। रास्ते में [illegible]। घर पर दामोदरदासजी राठी व [illegible] अमृतलालजी चक्रवर्ती बैठे थे। थोड़ी देर ठहरकर सबने भोजन किया व सबने बातचीत की।

९-६-१४

दामोदरदासजी राठी, अमृतलालजी चक्रवर्ती व दानीजी मुंबई गये। मारोवाग विल्सनरोड पत्नी-सहित आये। उन्हें साथ मिठाई और बाद में भोजन कराया। उनसे बातचीत व बाद में पत्र-व्यवहार किया।

४ बजे उनके साथ बम्बई गये। उनसे बहुत-सी बातें होती रहीं। उनकी पत्नी का स्वभाव सरकारी मालूम दिया। चर्चगेट से उन्हें एम्पायर होटल में पहुंचाकर पैदल बाजार होते हुए दानीजी से मिले। उनसे दामोदरदासजी राठी से मिलने का समय निश्चित किया। भगवानदास के यहां गये। वह नहीं मिले।

गिरगांव से राठीजी व अमृतलालजी को लेकर दानीजी के यहां गये। राठीजी व दानीजी से व्यवहार-सम्बन्धी बातचीत हुई। चक्रवर्तीजी को उनके ठिकाने पर छोड़कर ग्रांट रोड से अंधेरी आया। रास्ते में गोवर्धनदास सेठ आदि से बातचीत।

१०-६-१४

दामोदरदासजी राठी की दाती-वाल वगैरा मुश्किल से निकलवाये। ४ बजे उनके साथ चर्चगेट गया। रास्ते में वादरे से गाहब साथ हुआ। पुराने स्टाक के काम के लिए उसे पांच हजार रुपये देकर भागीदार होने को कहा, लेकिन उसने इन्कार किया। भगवानदास मगनभाई इंडिया इंजिनियरिंग

कपनीवालो गे मिले । उसने १५-२० रोज में रुपये देने को कहा। कुलावा मे हाजर का बाजार कडक था । १०० गाठ जीन की हुई, २६० मे देने के लिए नमूना दिया । पालवे मे राठीजी नही मिले। वर्धावाले बाबूराव खरे मिले । उनकी प्रकृति अस्वस्थ थी । राठीजी सीधे अंधेरी चले गये होंगे, समझकर चर्चगेट से ७-५५ को अंधेरी पहुचे । रामनारायणजी से बातचीत की । राठीजी १०। बजे आये ।

१२-६-१४

प्रताप का पत्र आया । परीक्षा मे पास होने के विषय मे लिखा ।
पत्र आदि लिखे । ४ बजे की गाडी से चर्चगेट आये । एपायर मे चिटनवीस के समाचार लिये । कुलाबा का बाजार ठीक था। वहाँ से रामप्रतापजी मोहता, मगनीराम पपालिया, नरसिंगदास के मुनीम साथ हुए । आर्यन होटल मे बाबूराव को देखने गये । मालूम हुआ कि वह अंधेरी गये हैं । कावस जी हॉल मे 'लीडर' पत्र देखने गये । अमरचन्दजी का रिजल्ट देखा । नहीं मिला ।
चर्चगेट से ७-५ की गाडी से अंधेरी आये । वर्षा थी, बाबूराव आदि ७ जने वहा आये थे। सब मिलकर १६ आदमी पगत में भोजन के लिए बैठे। आनन्द से भोजन किया। रात मे सबने मिलकर बातचीत की। ग्रामोफोन आदि सुना । चक्रवर्तीजी भी आ गये थे ।

१३-६-१४

बाबूराव खरे से बातचीत की । सबके साथ बैठकर भोजन किया । बाबूराव आदि छ जने, हेमराज सोनीराम अंधेरी से ११-१५ की गाड़ी से वर्धा के लिए रवाना हुए । बहुत-सी बातचीत हुई । पत्र दिये ।
१२-५ की गाड़ी से रवाना । दादरे मे रेल मे थाने के कप्तानसाहब मिले, उन्हे मारवाडी और गोडवाळ का फर्क समझाया । उन्होंने वचन दिया कि मुझे लिखकर भेजो, मैं पुलिस-गजट मे छपवा दूगा । यह फरक अवश्य प्रकाश मे आना चाहिए । दादरे उतरे व मिसेस पाठक से मिले । बहुत-सी बातें हुई । उन्होने कमला आदि को मिलने बुलाया ।

राठीजी से बातचीत। ५ बजे की गाड़ी से चर्नगेट आये। दानीजी से मिले। मारवाड़-गोड़वाड़ के बारे में चर्चा की। कल बालकेश्वर में एकत्र होने का निश्चय हुआ। ६ बजे कमला आदि आनेवाले थे, इसलिए ६ बजे चर्नगेट गया। गाड़ी लेट थी। माइग्रा दादर में डिब्बा गिर गया। इसलिए चिन्ता हुई। ग्रांट रोड में बगीचे, कमरा आदि देखे। कुलाबा तक उनके साथ गये। आनन्द से पान खाये। वापस अंधेरी आये। बारिश जोरों की थी। दादरा तक रेल में, बाद में घोड़ा-गाड़ी में अंधेरी गये।

१४-६-१४

राठीजी से बातें। ९-१७ की गाड़ी से चर्नीरोड गये। ग्रांट रोड से राठीजी साथ थे। बालकेश्वर दानीजी के बंगले गये। मारवाड़ी-गोड़वाड़ का फरक निश्चय कर जाहिर करने की तजवीज करने का निश्चय हुआ। ढड्ढाजी कार्यवश नहीं आ सके। वहां से सेनवाड़ी में राठीजी के डेरे गये। चक्र धर्नीजी ने वेंकटेश्वर समाचार सुनाया।

१५-६-१४

राठीजी से बातचीत। १-२० की गाड़ी से बम्बई जाना। रायफर्ड कम्पनी में मोटर का नीलाम था। वहां गये। मेघराज की मोटर नाथनसाहब ने ३६०० में ली। दूसरी १४०० में दूसरे ने ली। आलमारी ४० में ली। मर्चेंट बैंक जाना। वहां राठीजी, दोनों दानीजी, ढड्ढाजी, रामनारायणजी रुइया आदि से मारवाड़ी-गोड़वाड़ फरक-सम्बन्धी चर्चा। मि० वाच्छा को लायब्रेरी में से कुछ जानकारी लाने को कहा।
कुलाबा बाजार ठीक था। बंगला देखने बालकेश्वर गये। सोमानजी का बंगला १ जुलाई से तय किया।
चर्नीरोड से अंधेरी। राठीजी के साथ भोजन किया।

१६-४-१४

सुबह ही मेंदोली की तरफ भाड़े से बंगला देखने गये। ६। बजे वापस घर। रामनारायणजी से मिलने हुए भोजन। बाद में दादरा, विलेपार्ले मोटर से, कमला-सहित १-२० की गाड़ी से अकेले बम्बई। मुनीम जवान आफिस।

१९-६-१४

आज ४ बजे की गाडी से चर्चगेट उतरे। कुनावा का रुई-बाजार बन्द था। श्राविकाश्रम गये। मगनबाई नही मिली। रिपोर्ट आदि पढी। वहा से सेवा-सदन (चौपाटी) चर्नीरोड से मरीन लाइन तक पैदल गये और वहा से रेल से अधेरी गये। रात मे बालकिशन द्वारकादास आदि से बातचीत।

२०-६-१४

सवेरे रामनारायणजी से मिले। श्री राठीजी को लेने मगनीरामजी पचालिया के साथ स्टेशन गये। १॥ घटे तक राठीजी नही पहुचे थे। १० बजे पहुचे। ११॥ बजे भोजन व राठीजी से बातचीत। पुरुषोत्तम गनेडीवाल से बात करनी है। २-३५ की गाडी से बम्बई गये। राठीजी अधेरी ही रहे।

ग्राट रोड से श्राविकाश्रम आये। बालकिसन तथा द्वारिकादास साथ थे। वहा मगनबाई से मिले व बातचीत की। मगनबाई को साथ लेकर जमना-बाई से मिलने गये। उनके पति नगीनदासभाई का स्वर्गवास हो गया था। इसलिए उनसे सहानुभूति प्रदर्शित करने गये। वहा से ग्राट रोड होकर अधेरी आये। साथ मे रूइयाजी थे। घर पर राठीजी से बातचीत की।

२१-६-१४

मगनबाई बम्बई से मिलने आई। बातचीत की। बाद मे सबके साथ बैठकर आनद से भोजन किया। भोजन के समय श्लोक आदि बोले। फिर स्त्री-शिक्षण व कई विषयो पर मगनबाई व राठीजी मे वार्तालाप होता रहा। ४ बजे फलाहार। मगनबाई बम्बई गई।

पुरुषोत्तमदासजी गनेडीवाल से मिले। सुधार आदि कई विषयो पर बहुत-सी बातचीत हुई। बोर्डिंग व विद्यालय के कार्य मे सहानुभूति बताई। रतन व नर्मदा को देखकर घर आया। घर पर राठीजी से बातचीत।

२२-६-१४

सर्दी लगने से स्नान नही किया। राठीजी से बातचीत।

अधेरी गुफा देखने गये। राठीजी, बालकिसन, द्वारकादास ने गुफा देखी। यहा से ६ मील पर गेदोली के रास्ते पर एक तालाब है, उसे देखने गये।

वहा से बम्बई के लिए पानी आता है। दृश्य अच्छा था। करीब ५॥ बजे वापस आये। रामनारायणजी व सूरजमलजी से बातचीत। घर आकर फलाहार किया और कार्य-सम्बन्धी बातचीत की। भोजन नहीं किया। राठीजी से बातें।

२३-६-१४

राठीजी जल्दी भोजनकर बम्बई गये। सभी पत्रों के उत्तर दिये। करीब १३ कार्ड लिखे। सामान बम्बई भेजना शुरू किया। बम्बई घूमकर आये। आज मामूली काम हुआ।

बम्बई २४-६-१४

आनरेबुल लल्लुभाई मिलने आये। उनसे बातचीत। राठीजी से बातें की। ४ बजे बम्बई आये। तीन तसवीरें लीं। भुलाबा गये, पर बाजार बन्द था। स्वदेशी स्टोअर जाकर गेइटी सिनेमा देखने गये। कमला आदि आ गई। वहा से मोटर से चौपाटी पर बगले आकर साग-पूरी का भोजन किया। रात को बम्बई ही रहे।

रेल में २५-६-१४

६ बजे ग्राट रोड से अंधेरी आये। राठीजी से बातचीत। सभी कामों से निवृत्त होकर ११-१५ की गाड़ी से मरीन लाइन आये। राठीजी, सूरजमलजी, फत्तेचद आदि आये। १ बजे नागपुर मेल से वर्धा रवाना। वर्षा शुरू हुई।

वर्धा-धामणगांव २६-६-१४

सवेरे मेल से वर्धा पहुचे। भाजूजी के साथ भोजन किया। बोर्डिंग से जनेत की निकासी हुई। ११ बजे की गाडी से जनेत को रवाना किया। रामनारायणजी पोद्दार आदि के घर जाकर जनेत मे चलने को कहा और मेल से धामणगांव गये। जनेतियों को बैलगाडी व मोटर मे बैठाकर रवाना किया। कुछ किराये के तागे किये थे, वे नही आये। इसीलिए रात को धामणगाव मे रुकना पडा। नींद नही आई। बारिश भी थी। ११ बजे तक भागचदजी के साथ गप्पें होती रहीं।

वर्धा ३०-६-१४

निवृत्त होकर डिप्टी कमिश्नर मजीदसाहब से घनश्यामदासजी की टमटम में बैठकर मिलने गये। वह घर पर नहीं मिले। बाद में आगे वकील से मिले। वह यहां मिलने आये थे वहां से फिर डिप्टी कमिश्नर के यहां गये। थोड़ी देर बाद साहब आये। मुलाकात हुई। बहुत देर तक वार्ता, स्कूल, बोर्डिंग आदि तथा विद्यार्थियों को सिगरेट से बचाने कुछ अच्छे नियम पालने के लिए उन्होंने तरीका बतलाया-समझाया।

वहां से घनश्यामदासजी के यहां। शिवराम पन्त हेडमास्टर मिलने आये, वार्ता। प्रधान डाक्टर से वार्ता। घनश्यामदासजी के यहां भोजन, बाद में वर्धावालों को ४ टांगों में रवाना किया। १०॥ बजे के अन्दाज गोकुल छगन के साथ उनके टांगे से रवाना हुए। रास्ते में घोड़े अड़े। बाकी ठीक से गये। ५ बजे धामणगांव बोर्डिंग। पैसेंजर से वर्धा।

१-७-१४

मामूली कार्य। भोजन। बाद में आजूजी से वार्ता। नाइक हाईस्कूल के हेडमास्टर से मिले। छगन वगैरा के लिए संतोषकारक जवाब नहीं मिला। व्यवहार-कार्य बोर्डिंग वगैरा का किया। शिवनारायणजी के साथ नाट्यकला कम्पनी का सारा नाटक देखा, ठीक था। दो लड़कों ने अच्छा काम किया। ३॥ बजे रात में घर आये। सर्कल इन्सपेक्टर दारू में चूर होकर वहाँ अजब पोशाक में आया था, दृश्य देखने योग्य था।

हिंगणघाट, वरोरा २-७-१४

बम्बेवाले कप्तानसाहब के यहां हरिभाऊ वकील को ले जा रहे थे। कप्तानसाहब नहीं मिले। घर कलेवा कर हिंगणघाट गये, पोद्दार के यहां। शाम को ४॥ बजे सरकस्तूरचंदजी डागा से मिले। मारवाड़ी शिक्षा मंडल के उद्देश्य, नियम वगैरा सुनाये। बहुत-सी बातें हुई। उन्हें अध्यक्ष होने के लिए कहा। पहले तो इन्कार कर गये, बाद में सोचकर जवाब देने को कहा। जीवराज- ी भी साथ थे। वहां से दुलीचंदजी से वार्ता। बाद में वरोरा रवाना हुए। ...न विरदीचंदजी स्टेशन पर आये थे। उनके साथ उनकी दूकान गये, भोजन

४-७-१४

जल्दी उठे, निवृत्त होकर पैदल स्टेशन। सब भाई … आई। पीछे कमिश्नरसाहब आये। सबका बना दिया। कमिश्नर और डिप्टी कमिश्नर से इस विषय में बातें की। बाद में सब अस्पताल देखकर बस्ती घूमने गये। फिर स्टेशन। गाड़ी रवाना होने के पहले हार वगैरा उन्हें भली प्रकार पहनाये।

आज एकादशी का उपवास किया। नाट्यकला प्रवर्तक नाटक कम्पनी के मालिक मापोराव, गोपालराव आदि मिलने आये। उन्हें मकान-बोर्डिंग दिखाई, बाद में मास्टर लोग मिलने आये। ४॥ बजे कम्बावाले साहब के यहां नये तांगे में बैठकर गये। बहुत-सी बातें। वहां से सिविल स्टेशन बंगले होते हुए बगीचे, बातें। यहां कम्पनीवाले और भी लोग आ गये थे। वहां से घर। जाजूजी से बहुत-सी बातें। रात में नाटकवालों के आग्रह के कारण संत सखुबाई के दो अंक देखे।

गये। चर्चगेट से ट्रेन में दादर रोड आये। वहां से शान्तिनिवास होटल पर आये। स्नान-भोजन कर विश्राम किया। मूलजी जेठा आफिस में मिले। सायंकाल इलेक्शन का काम था। लिकपाट के तीन इलेक्शन-बाजार के लोगों की पक्की बातचीत हुई। वहां से मानिकचन्द के आफिस बुद्धिचन्दजी से मिल गये। उन्होंने सलाह वगैरह करके चिट्ठी लिख दी। मर्चेंट बैंक में रजिस्ट्री वगैरा कर दी। दानीजी से वार्ता। डाक्टर पोपट के यहां होते हुए वापस गये। १०॥ बजे शयन।

११-७-१४

सत्यनारायणजी के साथ घूमने गया। विद्यालय के चपरासी को पुलिस ने पकड़ लिया। इसलिए सत्यनारायणजी सिन्धाव पुलिस में गये। उनके साथ वहां गये। करीब पौन घंटा वहां रहे। वहां से मूलेश्वर मार्केट साग, तरकारी, फल आदि खुद खरीदकर वापस आये। भोजन के बाद थोड़ा विश्राम।

डाक्टर पोपट आये। उन्होंने, उंगली पर आदन (यानी फोड़ा जगह) हो गई थी, उसका आपरेशन किया। थोड़ा दर्द हुआ। खून निकला। पट्टी वगैरा बांध दी। ३-४ घंटे सोने को कहा।

श्रीनिवासजी जालान आये। उनसे बैंक-सम्बन्धी बातचीत। बाद में दौलतरामजी भरतिया वगैरा आये। उनसे वार्तालाप हुआ। शाम को भोजन के बाद कमला वगैरा के साथ पालवा तक घूमकर एक्सलसियर सिनेमा देखा। अच्छा था। यहां एक स्त्री नायिका बैठी थी। उसके आगे उसका प्रेमी बैठा था। उनका व्यवहार देखने योग्य था।

१२-७-१४

पैर में दर्द था, इसलिए घूमने नहीं गये। भोजन के बाद विश्राम। डाक्टर पोपट आये। दवा वगैरा लगाई। आज 'वसंतप्रभा' और 'सुकन्या सावित्री' का खेल देखा। कमला वगैरा सुकन्या सावित्री में गई थी।

१३-७-१४

. ... . .गो . . डे . से वार्ता। डाक्टर पोपट के यहां पट्टी बदल-

थाने गये।
श्रीमती लेडी हार्डिंज की अकाल मृत्यु सुनकर रंज हुआ।
घर पर भोजन किया। पत्र वगैरा लिखकर २॥ बजे गोविंदा की गाड़ी से, जो आज से रखी है, किले गये। आज कुलाबा बंद था। किले में दानीजी की मोटर में घूमकर गोंडल राज्य के दीवान श्री पटवारीजी से वल्लभनारायणजी के साथ मिले। वार्ता व परस्पर परिचय। बाद में घर आये। भोजन करके चौपाटी ब्रजमोहनजी से बातचीत की। विद्यालय आदि के संबंध में बातचीत करने श्रीनिवास जालान आये। उनसे वार्ता। १०॥ बजे शयन।

१४-७-१४

चुन्नीलाल कापड़िया आया। डायरेक्ट मेथड[१] से थोड़ा समझाया। विल्सन कालेज का बोर्डिंग हाउस देखा। १४'×६' की एक खोली एक विद्यार्थी के लिए है। मि० नायक से मिले। भोजन के बाद १२॥ बजे भूलेश्वर से फल खरीदे। बाद में रामनारायणजी रुइया के यहां गये। १ घंटे तक मिल व विद्यालय-संबंधी बातें। बाद में किले, कुलाबा, बंबई समाचार आफिस। ६ बजे बालकेश्वर गये। चौपाटी पर चने, मूंगफली व फल खाये। दानीजी से ट्रेड बैंक-संबंधी बातचीत। उन्होंने खानगी में कीमत कही। घर पर भोजन, शयन।

१५-७-१४

मरीन लाइन तक पैदल घूमने गये। वल्लभनारायणजी मि० कापड़िया साथ थे, पैदल घर तक वापस आये। अंग्रेजी में बातचीत करने का प्रयत्न किया। कामर्स कालेज के नियम सुने। अखबार पढ़ा। भोजन-विश्राम। सूरजमलजी की दुकान पर गहना-जेवर लेकर गये। उनको समझा दिया। वहां से किले, कुलाबा होकर चौपाटी घूमते हुए घर आये।

१६-७-१४

घूमकर आये। भोजन के बाद पत्र-व्यवहार व विश्राम।

[१] अंग्रेजी पढ़ाने का एक तरीका।

भुसान आफिस फत्तेचन्दजी साथ। चौपाटी होकर घर। सीताराम पोद्दार आया। यही वे तीनो जीमे। जिद मे ज्यादा खा गया। रात मे केशवदेवजी नेवटिया वगैरा मिलने आये, बातचीत।

१६-७-१४

मालूमी घूम आये, भोजन किया। इतने में वल्लभनारायणजी आ गये। बहुत-सी वार्ता। उनके साथ मारवाड़ी हिन्दी लायब्रेरी गये। साधारण सभा थी। वहा करीब २। घंटा लगे। नियम तय हो गये। वहा से महालक्ष्मी थाटर पर नाटक देखा। मिस्त्रीवाला दृश्य अच्छा था। घर पर भोजन।

२०-७-१४

सुबह बोरीबन्दर पैदल गये। वल्लभनारायणजी साथ थे। राठीजी आनेवाले थे। ट्रेन २ घंटा लेट थी। वापस दानीजी के बगले आये। बातचीत होती रही। घर पर आकर बाल बनवाये। तेल-मालिश, भोजन, विश्राम व पत्र-लेखन। बाद मे मर्चेंट बैंक मे व्यवहार-सम्बन्धी दानीजी से वार्ता। कुलाबा बाजार का रग मदा ही था। वहा से डाक्टर के यहा होते हुए विट्ठलवाडी राठीजी को देखने गये। वह नही मिले, पर घर पर राठीजी पहले पहुच गए थे। उनको भोजन करवाया। १०।। बजे रात तक उनसे व्यवहार-सम्बन्धी वार्ता।

२१-७-१४

जयदेवजी सहदेव हिसारवाले के साथ समुद्र-स्नान। घर पर भोजन। बाद मे पावेल वर्षा होते हुए मारवाड़ी विद्यालय गये। १।। २ घंटे तक निरीक्षण किया, बाद मे सूरजमलजी के साथ उनके इर्विनदर व उनका मकान का प्लान देखा। वर्षा बहुत जोर की थी, वहा से कुलाबा गये। विक्टोरिया गाड़ी लेकर घर आये। राठीजी पहुच गये थे। भोजन, फल आदि लेकर कुलाबा गये। उन्हे भली प्रकार एक्सप्रेस मे रवाना किया। घर आकर १०।। बजे शयन। आज राठीजी से बहुत-सी बातें की।

२२-७-१४

सूरजमलजी सवेरा आये। उन्होंने विल (मृत्युपत्र) बनाने की इच्छा प्रकट

थी। नोट सम लिये। कई बातें उन्हें समझाईं। भोजन के बाद ब्रजनारायणजी दानी व वल्लभनारायणजी आये। व्यवहार-सम्बन्धी वार्ता। ३ बजे मर्चेंट बैंक में दानीजी के साथ गये। वार्ता। वहां से ग्वालियर के श्रीनिवासदासजी बागड़ी से मिलने दानीजी के साथ गये। परिचय व वार्ता। वहां से खेमराजजी के यहां गये। उन्होंने बैठा लिया। कालीप्रसादजी खेतान-सम्बन्धी बातचीत। वहां से मर्चेंट बैंक, बाद में फलपट्टी गली में सूरजबाई से मिलकर चौपाटी आया। देवशर्मा आये। जीन प्रेस की वार्ता की। बाद में दानीजी के यहां गये। वहां ११ बजे तक रामेश्वरजी बिड़ला, सीतारामजी पोद्दार आदि से व्यवहार-सम्बन्धी बातचीत। घर आकर ११॥ बजे शयन।

२३-७-१४

वल्लभनारायणजी वगैरा आये। व्यवहार-सम्बन्धी बातचीत। धर्मशा पढ़ने थे, इतने में रामनारायणजी रुइया, सूरजमलजी रुइया व्यक्तिग सलाह के लिए आये। सूरजमलजी को बिल लिख दिया। भोजन के बा श्रीनिवासजी वगैरा आये, थोड़ी वार्ता। सूरजमलजी का मसौदा बराब तैयार करके उनकी दुकान गये। उन्हें सुनाया। उनके ध्यान में बराबर आ गया। बाद में उनके साथ उनके सॉलिसिटर मट्टूभाई जमियतराम सॉलिसिट को बिल सुनाया, उसने पसन्द किया। गुजराती में करने को कहा। कुलाबा कालीप्रसादजी के आगमन की व्यवस्था करके घर आ गये।

२४-७-१४

७॥ बजे पूजन। दूध लेकर सूरजमलजी की मोटर में कालीप्रसादजी खेतान बार-एट-लॉ को लेने गये। वहां जाने पर मालूम हुआ कि जहाज २-३ घंटा लेट है। वहां से वल्लभनारायणजी को घर पहुंचाकर खेतवाडी खेमराजजी के पास गये। अखबार में कालीप्रसादजी की खबर देनी थी, पर वह छप चुका था। वहां रा० ब० नौरंगरायजी मिले। आज ही वह श्रीरामेश्वरजी से आये थे। उनको घर ले आये, साथ में भली प्रकार भोजन करवाकर फल वगैरा खाये। बाद में दानीजी के यहां गये। वहां से बोट पर गये तो बोट का पता

यहीं स्नान किया। कालीप्रसादजी तथा एक पण्डित के साथ सीताराम पोद्दार के यहा आनन्द से भोजन। बाद में कालीप्रसादजी को 'अनसूया' नाटक दिखाने ले गए। ठीक था। वहा से रामेश्वरजी के साथ घूमते हुए गेलवाड़ी। रा० ब० नौरंगरायजी से एक घण्टा बातचीत। घर पर आये। भोजन किया।

२७-७-१४

दानीजी के यहा बालासाहब सरदार, जो कोल्हापुर से आये थे, उनसे परिचय हुआ। बाद मे गोपालदासजी (अकोला मिलवाले) आये। उनसे अकोला मिल-सम्बन्धी वार्ता। भोजन के बाद कालबादेवी गये। पत्र वगैरा लिखे। इतने मे रा० ब० नौरंगरायजी व कालीप्रसादजी आ गये, उनके साथ ५-६ जगह गये। गोविन्दरामजी मुनीम से कालीप्रसादजी के मानपत्र के विषय मे बातचीत की। उन्होंने बहुत खुशी प्रकट की और जोर देकर कहा कि यह काम जरूर हो जाना चाहिए। बाद मे कुलाबा जाकर रामनारायणजी वगैरा से वार्ता। सब लोगों ने उत्साह से बात की। रामनारायणजी वगैरा ने खुशी के साथ इच्छा प्रकट की। वहा से प्रार्थना-समाज गया। साइन्स पर सिरीनबाई एम० ए० का व्याख्यान हुआ। विल्सन कालेज के प्रिन्सिपल से परिचय हुआ। कालीप्रसादजी के साथ घर पर भोजन। विलायत की कई बातें बताईं। वल्लभनारायणजी, रामेश्वरजी, फत्तेचन्दजी आये। बहुत देर तक वार्ता। वर्षा बहुत जोर की थी। बाबुलनाथ की झाकी के अद्भुत दर्शन किये। ११॥ बजे शयन।

२८-७-१४

पत्र-व्यवहार। कल अपने यहा नौरंगरायजी साहब के सन्मानार्थ भोजन का निश्चय किया। न्यौते माडे। सामान की तजवीज की। भोजन के बाद नौरंगरायजी साहब से मिलकर न्यौते रूबरू व टेलिफोन से किले, कुलाबा मे दिये। बहुत-से मित्र कालीप्रसादजी वगैरा को नरसिंगदास जोधराज के यहा जीमने गये।

२०-७-१४

जीमने की व्यवस्था की। नौरंगरायजी साहब को व गेमराजजी को स्वतः जाकर निमन्त्रण दिया। ११॥ बजे घर से निकलकर पूज्य रामगोपालजी से मिले, उनसे वार्ता। भोजन के लिए कहा। कबूल किया। बाद में मोतीलालजी नेवटिया से मिले। उन्होंने भी कबूल किया।

नाथूरामजी की वाडी में कालीप्रसादजी की तरफ से जो ब्रह्मभोज था, वहा गये। बहुत-से पच जमा थे। ब्रह्मभोज में कार्य आनन्द से हो रहा था। मानपत्र का यहा निश्चय हो गया था।

सूरजमलजी रामनारायणजी से मिलकर फिर कुछ सौदा लेकर घर आये। कालीप्रसादजी साथ में थे। उनकी माताजी भी आ गई। अमृतलालजी से थोडा वाद-विवाद हो गया। घर पर भोजन का प्रबंध किया। जिन्हे न्यौते दिये थे, वे सब आ गये। ८॥ बजे पगत बहुत आनन्द से हुई। सीताराम पोद्दार, रामेश्वरजी ने बहुत मदद की। करीब ७० लोग जीमे।

३१-७-१४

दानीजी के यहा गये। अकोला मित्र-सम्बन्धी बातचीत। भोजन करके गाड़ी से नौरंगरायजी के पास गये। सोमवार को चलने का निश्चय किया। नौरंगरायजी डालमिया के यहां मिलनी देने गये। बाद में व्यवहार बात। फिर दुलाबा आदि सब जगह मिल लिये। मानपत्र की बातचीत की।

१-८-१४

साथ चले गये। गिरधारीजी रेवड़ा व ब्रजमोहनजी से मानपत्र व जीव
प्रेम-सम्बन्धी वार्ता। बाद में पधारे आये, उनसे मानपत्र की वार्ता। सर्वविद्या
बनाने का निश्चय हुआ। रामेश्वरजी के यहाँ से वापस आये तो सर्वविद्या
एकदम रेवड़ा से गये। आश्चर्य हुआ।
आज दो स्थानों से निमन्त्रण मिले। रोग से नहीं जा सके।

बम्बई २-८-१४

सेमराजजी, गुलाबचन्दजी रुइया, लक्ष्मीनारायणजी दानी घर पर आये, मानपत्र की कार्यवाही का निश्चय हुआ। रामेश्वरजी बिड़ला भी आये। दानीजी के यहाँ भोजन। रंगई बेकराने वहाँ आये। उनकी बात सुनी। बाद में मानपत्र की कार्यवाही, ७ बजे हुई। पंचायती से व पुस्तकालय से रा० ब० नौरंगरायजी व कालीप्रसादजी को बड़े ही समारोह के साथ सब पंचों ने हार्दिक सहानुभूति के साथ मानपत्र दिये। पुस्तकालय की तरफ से अध्यक्ष का काम करना पड़ा। बाद में पुस्तकालय में व्याख्यान वगैरा हुए। रामनारायणजी भी आ गये। बड़े ही आनन्द के साथ कार्य समाप्त हो गया। फिकर मिटा। कार्यवाही में सफलता मिली। रात में कालीप्रसादजी के घर पर भोजन और वार्ता। सब मित्र आये, मिलवाले गोयनकाजी भी आये थे। १२ बजे तक कार्यक्रम रहा।

रेल में ३-८-१४

रामेश्वरजी बिड़ला, सेमराजजी, मगनबाई, दानीजी आदि से मिलकर १२॥ बजे स्टेशन आये। रामनारायणजी, सूरजमलजी, गोविंदरामजी आदि बहुत-से प्रतिष्ठित सज्जन भी पधारे थे। रा० ब० नौरंगरायजी व कालीप्रसादजी भी आ गये। सभी को फर्स्ट क्लास में बैठाया, बाकी तीनों सेकण्ड क्लास में आनंद से बैठे। वहाँ से विदा हुए। हार-फूल पहनाये। रास्ते में विलायत की कई तरह की चर्चा हुई।
छिंदवाड़ा के मथुराप्रसादजी मिल गये, उनसे वार्ता। फल लिये। भुसावल में शयन।

वर्धा ४-८-१४

सोनगाव में भीनासायन आया। दुग्गाव में वशीलाल आया। वर्धा समय पर पहुंचे। रायबहादुर नौरंगरायजी व शालीप्रसादजी के साथ बगीचे में गये। बोर्डिंग बनाई। भोजन, विश्राम और वार्तालाप। जीवराजजी आदि मिलने आये। शाम को बोर्डिंग में रमगन, मलगम, कुश्ती रामरक्षा पाठ आदि दिखलाये। बाद में २५-३० सज्जनों सहित सप्रेम भोजन व वार्ता। रात में मंदिर में विद्यार्थियों के भजन १०। तक। बाद में विद्यार्थियों के व शालीप्रसादजी के व्याख्यान। १२ बजे रात में शयन।

५-८-१४

रायबहादुर नौरंगरायजी व शालीप्रसादजी स्टेशन में वार्तालाप। भोजन करके ११ की गाड़ी में इन्हें अमरावती विदा किया। श्रावणीकर्म कर २॥ बजे भोजन किया। जाजूजी से वार्ता। पूज्य जीवराजजी से बहुत-सी बातचीत। पोद्दार के यहां रक्षा बांधी। रात में मंदिर गये। १०॥ बजे शयन।

६-८-१४

नित्यकार्य, जीवराजजी, श्रीधरजी, वशीधरजी हरलालका, जाजूजी आदि से वार्ता। दुनिया की भाजी को दिलासा दिया। बबावाले साहब के यहां गये। करीब दो घंटा वार्तालाप। शाम को बगीचे। यवतमाल से रामधनजी बाजोरिया आये। रात में बबावाला साहब मंदिर दर्शन करने आये, उनसे व्यवहार की वार्ता। ११॥ बजे शयन।

७-८-१४

बोर्डिंग की भली प्रकार देखभाल की। बबावाले के यहां गये। वहां से आकर बाल बनवाये। पंडित भागीरथजी मिले। भोजन के बाद कचहरी जाकर जयनारायणजी सा० से मिले। सराय-संबंधी वार्ता। बगीचे घूमकर स्टेशन गये। नानी से वार्ता। शाम को उरेसाहब वकील से मिले। पुलगांव मिल-संबंधी बातचीत।

आज [illegible] अस्वस्थ [illegible] मालूम हुई, [illegible] होम-
[illegible] बीमार हो गये, [illegible] बीमारी
का ज्यादा जोर [illegible] ठीक किया। रात
[illegible] शयन।

८-८-१४

[illegible] तबीयत ठीक मालूम हुई।
[illegible] पूर्णिमा [illegible] आये। [illegible] हुआ कि [illegible] नागपुरवाले आये, उनसे
बातें।

९-८-१४

सुबह पैदल घूमने गए। धर्मदास विद्यार्थी साथ था। अनन्तरावजी नागपुर
गए। दोपहर को घर पर व्यवहार-कार्य व व्यवसाय सम्बन्धी-विचार।
शाम को स्टेशन गए। कालीप्रसादजी धामनगाव से आ गये, घर पर भोजन
बातें। फैजरसाहब का पत्र। मने मा० के यहां कालीप्रसादजी को ले गये।
वहां १०॥ बजे तक रा० ब० राव, अत्रे आदि से वार्तालाप। रात में
११ बजे शयन।

१०-८-१४

कालीप्रसादजी आज जानेवाले थे, परन्तु बालप्रबोधिनी सभा के सभासदों के
आग्रह से ठहर गये। पोनार तक टांगे में घूमने गये। उन्हें नदी वगैरा दिख-
लाई। नदी-किनारे से वर्षा की बरसात देखी। वहां से आकर भोजन के बाद
थोड़ा विश्राम। कालीप्रसादजी को मानपत्र देने का निश्चय हुआ। उसके
शाम को उन्हें जाति-भाइयों के यहां ले गये। बबावाले ने
को ६ बजे से अभिनन्दन-पत्र का कार्य शुरू हुआ। विद्यार्थी-
समारोह के साथ मानपत्र दिया। समारोह में बहुत-से मार-
गये थे। वकील वगैरा की मंडली थी। ११ बजे तक कार्यक्रम

रहा। कीर्तन बहुत ही ठीक से हुआ। ११॥ बजे रात में शयन।

११-८-१४

सुबह मेल ट्रेन से कालीप्रसादजी बैरिस्टर चाडिल के लिए रवाना हुए। टांगे में घूम-फिरकर आये। सुस्ती मालूम हुई। सो गये। भोजन के बाद थोड़ी देर फिर शयन। शाम को पोद्दार के बगीचे गये।

१२-८-१४

गंगाबिसन के साथ घूमने गये, बैरिस्टर जाल ने बुलाया। उससे थोड़ी देर चर्चा। गंगाबिसन को समझाया। घर पर बाल बनवाये। बंशीधरजी हर-गोलका आया। जमा-खर्च करवाया। बाद में पत्र-व्यवहार किया। रमा-नंदजी आये। उनसे बातचीत। बगीचे में मकई के भुट्टे खाये। राधाकिसन नरा अहीर के साथ देश गया। उसको पहुंचाया। भोजन किया, अखबार पढ़े। चिरंजीलालजी से बातें। ९॥ बजे शयन।

१३-८-१४

सवेरे चन्दूलाल विद्यार्थी के साथ घूमने गये। पोद्दार के यहां दुनिया की मांजी से मिले। घर डाक्टर बापट व वारटे आये। श्यामराव इंजिनियर के लड़कों को, डालूराम को, कमला को व चार-पांच विद्यार्थियों को बताया। भोजन करके कचहरी बार-रूम गये। वहां चर्चा।
आज वजन लिया। २॥ मन ४॥ सेर।

१४-८-१४

नेमीचंद विद्यार्थी के साथ घूमने गये। उसने गलती कबूल की। किंतु खुलासा नहीं बतलाया। रास्ते में जयनारायण सा० से मिले। बहुत देरतक, बहुत-सी बातें होती रहीं। वहां से रामनारायणजी से मिलकर घर आये। एडवर्ड मेमोरियल की मीटिंग में गये। वहां से घर आकर स्नान-भोजन किया। दोपहर को फल वगैरा खाये। शाम को भोजन नहीं किया। बोर्डिंग में ताश खेले। रात में १२॥ बजे तक मंदिर में थे, गोकुलाष्टमी का उत्सव हुआ। १२॥ बजे रात को पूड़ी वगैरा का भोजन करके शयन।

१५-८-१४

वोरगाव के तरफ जयनारायण सा० के साथ घूमने गये। प्लेग्राउड की जमीन देखी।

यूरोप की लडाई के कारण बवई के रुई बाजार पर खराब परिणाम हुआ। चित्त मे थोडा विचार रहा। शाम को पोद्दारो के बगीचे गये। रात मे चित्त ठीक नही मालूम हुआ। अकोलेवाले मिलने आये। शिवनारायणजी के साथ 'पिंगला' नाटक देखने गये। नाटक ठीक हुआ। ४ बजे रात को घर जाकर शयन।

१६-८-१४

८ बजे उठे। मुह-हाथ धोकर स्नान किया। पत्र पढे। भोजन कर शयन। १॥ बजे उठे। पसीने में जल पिया गया। बाद मे लघुशका करने छत पर गये। लघुशका करके उठे, कुल्ला किया कि बहुत जोर का चक्कर आया व बेभान होकर गिर गया। १॥ मिनिट मूर्छा रही। थोडी चोट भी आई। पत्नी वगैरा घबरा गई। नीचे से लोग एकदम आये। सुधि आई। लोगो को नीचे भेज दिया। बापट डाक्टर को बुलाया, उसने आकर देखा। 'हार्ट' कमजोर बतलाया। दवाई वगैरा दी। तबीयत ठीक मालूम हुई। शाम को नीचे आये, आज कुछ नही खाया। चित्त में अक्सर विचार आते रहने से चक्कर आया होगा, ऐसा लगा।

१७-८-१४

तबीयत साधारण ठीक थी। बशीधरजी पुलगाव से आये, उनसे वार्ता। हिसाब वगैरा देखा। भोजन के बाद विश्राम और उनसे वार्ता। शाम को थोडा खाकर नीचे बैठे। ६ बजे शयन। रात मे पीठ के दोनो तरफ की नसो में दर्द रहा, रात मे नीद ठीक नही आई।

१८-८-१४

मुह-हाथ धोया। डाक्टर बापट आया। उसे कहा कि रात मे दर्द रहा। उसने पेन किलर लगाकर सेक करने को कहा। सेक कर स्नान किया। थोडा भोजन किया। १०१ डिग्री बुखार था। शाम को पसीना आकर बुखार उतर गया। कपडे पहनकर नीचे ६ बजे तक बैठा रहा। बाद में

शयन।

तेल लगाने, बाल बनाने, गर्म पानी से नहाने के लिए डाक्टर ने कहा। रात में ठीक से नींद नहीं आई। खुजली चलती रही।

१९-८-१४

निवृत्त होकर बाल बनवाये व तेल-मालिश करवाई। गोपालरावजी देशमुख आये, उनसे व्यवहार-संबंधी बातचीत। नीम के पत्ते उबालकर सिकाई वगैरा में स्नान किया, इससे थोड़ा अच्छा मालूम हुआ। भोजन ऊपर ही किया, थोड़ा विश्राम किया। १। बजे उठे। शरीर भारी मालूम हुआ। दूकान पर जाये, १५-२० मिनट तक बातें कीं। बाद में शरीर में दर्द होने लगा, ऊपर गये। देखा तो बुखार १०३ डिग्री तक आया। सो गये। जाजूजी आदि आये। उनसे वार्ता। डा० बापट आया, दवा दी, पर रातभर बुखार उतरा नहीं। रात को हीरालालजी, बालूजी वगैरा आये थे। नींद ठीक नहीं आई।

२०-८-१४

सुबह बुखार नहीं था। बापट ने भी देखा। १० बजे अंदाज फिर जोर का बुखार आया। सिविल सर्जन आये। बापट भी आये, बुखार देखा तो १०४ डिग्री था। सिर में बड़ा दर्द था। उन्होंने दवा बताई, सिर पर कोलन वाटर की पट्टी रखने को कहा। वैसा ही किया। ४ बजे बुखार कम पड़ा, १०२ डिग्री रहा, रात में भी १०२ डिग्री ही रहा। नींद ठीक नहीं आई।

२१-८-१४

सुबह बुखार नहीं था। डाक्टर बापट आये। बाद में सिविल सर्जन मुझे देखने आये। अत्रे, जाजूजी वगैरा बैठे थे। डा० बापट भी १॥ घंटा करीब बैठे रहे। दवाई दी। आज जरा तबीयत ठीक मालूम होती थी। सुस्ती बहुत हो गई। थोड़ा साबूदाने के सिवा कुछ भी नहीं खाया। मिलन-भेंटनवाले आये। रात में साधारण निद्रा।

२२-८-१४

बाहर तो बुखार नहीं था। कमजोरी थी। डाक्टर ने कहा कि अन्दर बुखार

है। दवा ली. शाम थोड़ी-सी खिचड़ी व मुगोड़ी खाई। ठीक लगी। तबीयत साधारण रही, दोपहर को सिंगाजी, मिश्रजी वगैरा बहुत लोग आये थे। उनसे वार्ता। पत्र आदि लिखे। शाम को भी थोड़ी खिचड़ी ली। रात में नींद आ गई। आज लड़कों का पोला हुआ। कमला को आज बुखार आ गया, जिससे चित्त में चिन्ता रही।

२३-८-१४

हाथ-मुंह धोया। अणे, तानवा जवडे वकील आये। उनसे बहुत-सी वार्ता। उनसे वर्धा में एक सार्वजनिक सभा कर लड़ाई के लिए सहानुभूति प्रकट करने के लिए कहा। उन्होंने कबूल किया। दत्तूजी, बंसीधरजी हरलालका आये। उनसे वार्ता। इतने में रा० ब० बम्बावाले कप्तानसाहब मिलने आये। वह करीब एक घंटा बैठे। उनसे तबीयत-सम्बन्धी व लड़ाई-सम्बन्धी बहुत-सी बातें हुईं। बाद में १०॥ बजे खाकर थोड़ा विश्राम किया।

२४-८-१४

तबीयत ठीक थी। पर कमजोरी थी। मुंह-हाथ धोकर १०॥ बजे थोड़ा भोजन किया। बाद में ११ बजे स्कूल खाते के डायरेक्टर व इन्स्पेक्टर मारवाड़ी विद्यालय में आनेवाले थे, इसलिए वहां गया। वे लोग आये। वहां से १२। बजे वापस। डायरेक्टर सादा व अच्छा मालूम होता था। पांचवें क्लास की परवानगी देना मंजूर किया। विश्राम, ३॥ बजे पत्र आदि लिखे। शाम को बोर्डिंग में गये। बाद में जल्दी ही शयन।

२५-८-१४

तबीयत सामान्य ठीक थी। स्नान, भोजन व विश्राम। १२॥ तक व्यवहार-कार्य। शाम को मन्दिर, बोर्डिंग। गणपति के दर्शन करके भोजन किया। बाद में व्यवहार-सम्बन्धी वार्ता। १० बजे रात को शयन।

२६-८-१४

नित्य कार्य। भोजन के बाद विश्राम। ११॥ बजे तक व्यवहार-कार्य पत्र या बिल वगैरा लिखकर जाजूजी को दिया।

२७-८-१४

सुना कि बम्बावाले साहब की बदली हो गई। उनसे मिले। बातचीत हुई। रविवार को अपने यहां भोजन का आमन्त्रण दिया।

२९-८-१४

मित्र (मुकुन्द) किस से ठीक से लिखकर निशोगी में रखा। तीन घण्टे लिखने में लगे।

व्यवहार-कार्य। रतनजी पारसी हिंगनघाट से मिलने आया। गाठों का भाव वगैरा पूछा।

मेल से हैरॉट साहब डिप्टी इन्स्पेक्टर जनरल आनेवाले थे इसलिए स्टेशन गया। वह आये। उनसे बातें हुईं। उन्होंने लड़ाई के एक महीने में खतम होने की बात कही। बगीचे में पत्ते आदि खेले, घर पर भोजन, व्यवहार-वार्ता, बोडिंग में गये।

३०-८-१४

व्यवहार कार्य, बम्बावाले साहब को शाम को भोजन को बुलाया था। मन्जूर किया। टाऊन हॉल में श्रीयुत खापर्डे (अमरावतीवालों) का व्याख्यान सुना। ठीक मालूम हुआ। जल्दी ही घर आये। बम्बावाले, सिविल सर्जन, रा० ब० नरें आदि आमन्त्रित सज्जन आये। ८ से १०॥ तक भोजन, पान, सुपारी आदि कार्य आनन्द से हुआ। ११॥ बजे शयन।

३१-८-१४

सोंथेसाहब का आदमी बुलाने आया। उनसे मिले। बहुत-सी लड़ाई-सम्बन्धी वार्ता। पूज्य जीवराजजी से मिले।

आज जलझूलनी ग्यारस थी। ठाकुरजी के विमान के साथ ४॥ से ७ तक जुलूस में रहे, जुलूस अच्छा रहा। रात को भोजन नहीं किया। आज हयरमी ब्रिजवासी का राम मन्दिर में था। भीड़ अधिक होने के कारण हरिश्चन्द्र-लीला दुकान के सामने आगन में हुई। पूज्य जीवराजजी भी देखने आये थे। रात में २-३ घण्टा निद्रा हुई।

१-६-१४

वंशीधरजी हरलालका से वार्ता। भोजन करके १२ बजे तक शयन। बम्बई जाने की तैयारी। गामडिया के मैनेजर से जाइंट-सम्बन्धी वार्ता। जाजूजी से विक्रीपत्र की वार्ता। वल्लभदासजी जबलपुरवालों के गुमास्ते मिलने आये। उनसे वार्ता। बगीचे गये। रात में पुलगाववाले बंशीलाल से वार्ता। दुकान का कार्य-प्रबन्ध बतलाया। १० बजे शयन।

रेल में २-६-१४

बम्बई की तैयारी, कागज-पत्र जचाये। पीछे से करने का कामकाज समझाया। हीरालालजी केशव की माजी आदि से मिले। ३॥ बजे आनदपूर्वक भोजन किया। प्रेम-पूजन-सहित ऊपर से विदा होकर नीचे आये। पूज्य रामगोपालजी से मिलकर स्टेशन। उन्होंने आनद से बातचीत की। गाड़ी थोड़ी लेट आई। बम्बावाले कप्तानसाहब से स्टेशन पर भली प्रकार मिले। आनन्द से रवाना हुए। पुलगाव पर दुकानवाले मिलने आये। उनसे बातचीत हुई। धामणगाव पर मोटे नारायणराव साहब गाडगिल मिले। उनसे वार्ता। अकोला दौलतरामजी भरतिया मिलने आये। साथ में जलपान भी लाये थे। भुसावल में अकेले डिब्बे में रह गये, जिससे कुछ चिंता रही। मनमाड में दूसरे डिब्बे में जाकर सोये। कसारा पर उठे।

बंबई ३-६-१४

६॥ बजे बोरीबन्दर पहुचे। वल्लभनारायणजी दानी लेने आये थे। उनके साथ बगले गये। निवृत्त होकर भोजन किया और ११॥ बजे दूकान गये। सूरजमलजी के यहा गये। उनके मुनीम नागरमलजी से वार्ता की। उन्होंने रामनारायणजी से मिलकर जवाब देने को कहा। वहा से फिर भुसान आफिस, कुलाबे आदि गये। चित्त में विचार रहा। शाम को कुलाबा आकर चौपाटी पर गणपति-विसर्जन-उत्सव भली प्रकार देखा। बगले आये, भोजन करके १० बजे शयन।

४-६-१४

निवृत्त होकर घूमने गये। रामेश्वरजी बिड़ला आते हुए मिले। उन्हें लेकर

५-६-१४

अखबार पढ़े व तार वगैरह। १०॥ बजे मुरलीधरजी के साथ भोजन किया। बाद में दुकान गए। वहां से रामनारायणजी से मिलने गए। व्यवहार-पद्धति व गद्दी के सम्बन्ध में उनसे भली प्रकार एकान्त में बातचीत की। उनकी बात ठीक लगी। सबको मिलने को कहा। मकान-आफिस व मर्केंट बैंक आदि होते हुए मुकाम गए। आज बहुत लेवाली ठीक थी। ८१ गांठे अपनी ६७५ में बिकीं। वहां से मगनबहन से मिलने गये। बहुत देर तक बातचीत करके वापस आए। आज करीब दो हजार नेपाली पल्टन यूरोप जाने के लिए आई, उसे देखा। रात में भोजन करके रामनारायणजी के यहां गये। थोड़ी देर बाद उनसे वार्ता हुई। उनको आज कुछ सख्त बातें भली प्रकार सुनाई। उन्होंने बहुत ही सहानुभूति बतलाई। रुपये ५० हजार ले जाओ, तुम्हारी मर्जी आए तब देना यों कहा। मैंने कहा, अभी जरूरत नहीं। १२॥ बजे तक बहुत-सी बातें हुईं। उनसे बातचीत होने पर चित्त को शांति मिली

६-६-१४

निवृत्त होकर मुरलीधरजी सिंघानिया को साथ लेकर जापान काटन के बंगले होते हुए जापान जीमखाने गये। वहां उन्होंने सबसे मिलाया। खेल कूद देखी। वहां से श्राफड़े मार्केट होकर दुकान होते हुए डेरे पहुंचे। गुलाबचंदजी ढढ्ढा व मारवाड़ी विद्यालय के हैडमास्टर आये। विद्यालय-संबंधी बहुत-सी बातचीत। सबने साथ मिलकर भोजन किया। फिर वार्ता, बाद

मे विश्राम। २॥ बजे उठे। फल वगैरा खाकर 'बुद्धदेव' नाटक देखने गये। नाटक अच्छा उपदेशप्रद था। वहा से दुकान होते हुए बंगले जाकर भोजन किया। थोड़ी देर दानीजी से वार्ता, बाद मे 'आग की किरकिरी' पढ़ते रहे। १०॥-११ बजे शयन।

८-६-१४

भोजन, विश्राम करके १२॥ बजे दुकान पर गये। पत्र आये हुए थे, उनके जवाब दिये। रामनारायणजी की माजी का ब्रह्मकाज था। वहा एक घटा करीब ठहरकर किले व कुलाबा होते हुए वालकेश्वर गये। वहा भोजन, वार्ता व पुस्तक पढ़ी। १०॥ बजे रात मे शयन।

६-६-१४

भोजन के बाद विश्राम करके कालबादेवी दुकान पर आये। पत्र पढ़े, जवाब दिया। माधोबाग होकर किले भगवानदास से मिले। भुसान आफिस मे कानुसाहब को हार पहनाया। उसकी आफिस के लोगो ने तारीफ की, वह सुनी। बड़ा साहब मि० मोरआका, इग्लिश ठीक बोलता मालूम हुआ। वहा से कुलाबा गये व मर्चेट बैंक से दानीजी को साथ लेकर माधोबाग, रामनारायणजी नदलालजी, जमनजी से वार्ता। बाद मे रामनारायणजी से वार्ता। हेडकोर्ट-सबधी कई बातें खूब सुनाई। ६॥ बजे रामनारायणजी के साथ मे भोजन। १०॥ बजे वहा से वल्लभनारायणजी के साथ गिरगाव तक पैदल आया। बगले गाड़ी मे आया। १०॥ बजे शयन।

१०-६-१४

मोटर मे बैठकर कानुसाहब को पहुचाने स्टीमर गया। वार्ता। अखबार पढ़कर भोजन, विश्राम। बाद मे अदाज ११। बजे कालबादेवी होते मर्चेंट बैंक गये। वहा से भगवानदास को लेकर मेहरबानजी के यहा जाना। कल लखा-पढ़ी कराने का निश्चय हुआ। वहा से भुसान आफिस आकर स्कोडा बहुत-सी वार्ता। शरीर ठीक नही मालूम हुआ। वहा से दुकान पर आये। पत्रों का जवाब दिया। वालकेश्वर जाना चाहते थे, इतने में कुलाबा से टेलीफोन आया। जापानवालो ने वर्धा की गाठें खरीदने की इच्छा बताई।

तबीयत जरा ठीक नहीं थी तो भी कुलाबा गये। कुसुमाटो से बातचीत की। २६८ गाठें १७५ रुपये में दी। ज्यादा बिकती, परतु मिचलवालों ने वरोरा की गाठें १७० रुपये में बेच दी। ठीक नहीं किया। बाद में माधोबाग राम-नारायणजी से मिले। थोडी देर तक बातचीत। उन्हें कहा कि शरीर ठीक नहीं है, इसलिए आज भोजन नहीं करूगा। केशवदेवजी नेवटिया मिलने आये। १२। बजे शयन।

कानुसाहब को पहुचाने बोट पर ओरिएटल में गये। वहा बहुत से जापानी लोग आये थे। उनमें परिचय व वार्ता। सिक्खों की पलटन भी इसी बोट में गई।

११-६-१४

चौपाटी घूमकर स्नान किया। चिट्ठी लिखी व पुस्तक पढी। भोजन व थोडा विश्राम। दुकान पर चिट्ठिया पढी, जवाब दिये। ब्रजमोहनजी की दुकान पर गये। इडिया इजीनियरिंग कपनी का हिसाब उतरवाया। वहा से भगवान-दास के आफिस करीब एक घटा ठहरे। वह नहीं आया। मेहरबानजी के आफिस में पौन घटा ठहरे। फिर भी वह नहीं आया। बालुभाई साथ था। वल्लभ-नारायणजी वहा आये। उनके साथ मर्चेंट बैंक होते बालकेश्वर। डालूराम को कमल का पत्र दिया। कपडे पहनकर घूमने गये। वल्लभनारायणजी साथ थे। चौपाटी पर हुकुमचदजी, रायचदजी बोहरा व रामेश्वरजी आदि से मिले। वापस बगले आते समय एक मुसलमान गृहस्थ का गुप्त रहस्य वल्लभनारायणजी ने बतलाया। चौपाटी पर दो मारवाडियों की गुप्त बातें वल्लभनारायणजी ने सुनी। बगले के पास एक वृद्धा पारसी लकवे के कारण व शराब पीने के कारण गिरा था। पारसियो में भी ऐसा होता है, यह देखने का पहला मौका था।

कल पूज्य बच्छराजजी का श्राद्ध है।

१२-६-१४

सीताराम पोद्दार से व दौलतरामजी से मिलने गये। बहुत देर तक बैंक के मामले में बातचीत व सलाह की। उनकी इच्छा कम मालूम हुई। दा

लोगों ने कुछ भी प्रयत्न नही किया।

पूज्य दादाजी का वार्षिक श्राद्ध था, स्नान-ध्यान कर उनकी अच्छी आदतो का भली प्रकार स्मरण किया। पंडित माधोप्रसादजी व औरों को बुलाया और तर्पण किया। १॥ बजे भोजन किया। कुछ पढ़कर थोड़ा विश्राम। श्रीनिवासजी को बुलवाया। बैंक-संबधी बहुत-सी बातचीत। ४॥ बजे के करीब बस्ती मे रामनारायणजी से मिले। उनसे रुई-बाजार-सबंधी वार्ता। सीताराम जयनारायण सिंघानिया माल गिरवी रखकर रुपया देने की कोशिश कर रहा है, ऐसा सुना। थोड़ा फिक्र हुआ।

एक्सलसियर सिनेमा देखा, ठीक लगा। लक्ष्मी नाटक के दो अंक देखे। गायन व सभ्यता ठीक नही थी। सीताराम पोद्दार, रामेश्वरजी व माधो-प्रसादजी आदि आये। १२॥ बजे शयन।

१३-६-१४

नित्य कार्य, हिंगनघाट व नरसिंगदासजी को जाइन्ट-सबधी व वर्धा पत्र लिखे। भोजन के बाद थोड़ा विश्राम लेकर २ बजे वल्लभनारायणजी को साथ लेकर, द्वारकादासजी का बहुत आग्रह था, इसलिए जापान के दलाल के यहा गये। उसकी मोटर लेने आई थी। बहुत-सी बातचीत हुई और फलाहार किया। उसका बहुत आग्रह रहा, इसलिए बिना शकर का थोड़ा खाया। ५०० गाठो का सौदा वर्धा हाजर का किया। सौदा पक्का नहीं हुआ। वहा से मारवाडी विद्यालय मे आये, ७॥ बजे तक कार्य किया। बहुत-सी बातों का निर्णय हो गया।

१४-६-१४

सुबह घूमने गये। मगनबाई से मिलकर रामनारायणजी से मिले। वर्षा बहुत जोर से हो रही थी।

के आफिस मे गये। वहा नमूने आ गये थे। वर्षा के कारण रहे थे। सब आफिस में बिजली की रोशनी हो रही थी। पास हुई। बाकी कुलाबा मे देखने की बात हुई। वहा से मर्चेंट बैंक होते हुए कुलाबा गये। वहा कुछ गाठें पास हुई।

१९-९-१४

कई पत्र लिखे। कुलावा में आज बाजार का रंग हाजर व वायदे का ठीक था। थोड़ा काम हुआ। बाजार की रंगत देखकर किले भुगान के मैनेजर आदि से मिले। कल नाटक देखने का निश्चय किया। नाटकगृह में जाकर व्यवस्था की। बुद्धदेव नाटक के मालिक लायक मालूम हुए।

२०-९-१४

तार बनवाये। नहा-धोकर जापान काटन के बंगले कुमुमोटा साहब, उनके मैनेजर व उनकी मेम से मिले। बाद में धरमसी मेघजी का मकान देखा। पानी आने लगा। उनसे वार्ता। उन्होंने मालिमिटर का थोड़ा हाल बतलाया। भोजन व विश्राम। बाद में बुद्धदेव नाटक में जाकर सब व्यवस्था की। भुगान के बंगले, सबको लेकर नाटक में। मोरीयका साहब व दूसरा का नाटक बहुत ही पसंद आया। उनका स्वागत भली प्रकार, नाटक के मालिक के तरफ से हार-फूल द्वारा करवा दिया। वहा रंगून के एक बौद्ध साधु आये थे। वह सिर्फ अंग्रेजी व बर्मी भाषा ही जानते थे, उनसे परिचय किया। उनको डेरे पहुचा दिया। रघुनाथ त्रिभुवनदास कवि नडियादवाले, जिन्होंने बुद्धदेव नाटक लिखा था, परिचय व वार्ता। ९॥ बजे घर।

२१-९-१४

पत्र लिखे, भोजन के बाद जल्दी दुकान गया। शिवभगवान को बहुत जोर का बुखार था। थोड़ी देर बैठकर रामनारायणजी के यहा गया। वहा १॥ घण्टा से अधिक कई तरह की बाजार-सम्बन्धी व उनके घर-सम्बन्धी बात की। बाद में बैंक होते हुए किले व मर्चेंट बैंक गये। सामड़िया से मिले। दानीजी को वहा से कुलावा जाने को कहा। आज लेवाली ठीक थी। वर्धा रेलवे स्टेशन १८३ के भाव से १०० गाठे जापान को बेची। भुगान का हाजर का सौदा नहीं हुआ। ३ गाठों का बाद में कालबादेवी से वर्धा तार करवाया। शिवभगवान की तबीयत की निगाह करते हुए, चौपाटी होकर दानीजी के साथ पैदल बंगले आये। सामड़िया से उन्होंने बात की। उनका विचार कम मालूम हुआ।

१७-९-१४

अखबार व पुस्तक पढ़ी। मामडिया का मैनेजर वरोरा जाने के लिए आया उनसे बहुत देर तक वार्ता। फरामरोज इंजिनियर आया। भोजन के बाद थोड़ी देर पुस्तक व पत्र वगैरा पढ़े। २ बजे के करीब दुकान गये। वहां मे रामनारायणजी के पास बहुत-सी गपशप की। इण्डिया बैंक के मैनेजर के डूबकर मर जाने की जानकारी उन्होंने दी। बाद मे उनके आफिस गया। सर सासून बेरोनेट मे मुलाकात। करीब १॥ घण्टा तक कई तरह की बातचीत हुई। वह बहुत खुश हुआ। रामनारायणजी से सब खुलासा कर लिया। उन्होंने कहा सासून के यहा तुम्हारा काम नही होगा, तो मैं तुम्हारा सब काम भुगता दूंगा। दूसरे से बात न करो। एक लाख तक की हुंडी आधी रात को बिना समाचार मंगाये कर लेना, कोई संकोच न करना वगैरा बहुत-सी बातें स्पष्ट हुई। उन्होंने कहा कि निश्चित ही प्रेम मे फरक नही पड़ेगा।

कुलाबा में आज १६७ गाठें १७६ मे बेची।

१८-९-१४

बाल बनवाये, बहुत-से पत्र लिखे। अखबार पढ़े। कलकत्ता जर्मनी का क्रूझर आया। ब्रिटिश के माल ढोनेवाले छह जहाज डुबाये। पढ़कर थोटी फिकर व आश्चर्य हुआ। भोजन, वार्ता। फरामरोज इंजिनियर के बहुत आग्रह के कारण उसके घर होते हुए दुकान और भुसान के आफिस आया। जापान के आफिस मे गये। कुसुमोटा ने १००० गाठों की बात की। ३॥ बजे कुलाबा गये, नमूना वगैरा निकलवाया। गोदाम देखी। जापानवालों ने ३८६ गाठें ली। लच्छीरामजी, ब्रजमोहनजी से वार्ता। बाद मे ५॥। बजे टाम्यानागी साहब को लेकर पी० कामिसी के एजन्ट जापान काटन एसोसियेशन से मिले। बहुत देर तक वार्ता हुई। वह तथा उनकी मेम बहुत अच्छी तरह पेश आये। हिन्दुस्तान से जापान १४ लाख गाठें जाती हैं, वम्बई से १२ लाख, कलकत्ता से १ लाख और फुटकर १ लाख।

५६३ भगिकाश्रम पैदल गये । मगनबहन व कुकुबहन से १॥ घण्टा बातें। वहां से नूरबाग के पास डाक्टरनी को समझाकर जुलाब की दवा दिलवाई। घर आये। न० १६३ का विक्टोरियावाला बदमाश था। भाड़े के लिए वह झूठ बोलने और बदमाशी करने लगा। १॥ बजे वल्लभनारायणजी आ गये थे। उनके साथ केम्प कम्पनी से जुलाब की दवा ली व भुगान कम्पनी गये। बाजार का रुख देखा। जापान काटन के आफिस होते हुए मेहरबानजी रोमर सॉलिसिटर के यहा गया। थोडी देर में लच्छीरामजी भी आये। इन्कमटैक्स, धर्मशाला, विद्यालय आदि विषयों पर रोमर मेहरबानजी के साथ वार्ता। वहा से कुलाबा आया। वहां आज रग ठडा था, खरीददारो की पालिसी के कारण। वहा से वर्धा तार किया। चिमनीराम को बुलाया। भैरूप्रसादजी सूरजी से मिले। बहुत-सा समझाया। सुरजी आज भिवानी जाने की तैयारी में थे।

२३-९-१४

४॥। बजे उठकर निपटे। ५ बजे से पत्र लिखना शुरू किया। बाल बनवाये। पेट गडगडाता था, इसलिए फ्रूट साल्ट लेकर सो गये। ११ बजे दस्त लगा। पढते रहे। १२॥ बजे खिचडी खाई। १॥ बजे दुकान गये। शिवभगवान को जोर का बुखार था। उसके पास बैठे। दुकानवालों से वार्ता, मिलने गये। आफिस होकर कुलाबा गये। आज २०० गाठें अन्दाज बेचीं, बाजार नरम था, वहा से मर्चेंट बैंक गये। वल्लभनारायणजी साथ थे। मारवाड़ी हिन्दी पुस्तकालय मे आये। ८॥ बजे रात तक वहा पुस्तकालय-सम्बन्धी वार्ता व पत्र पढे। बाद में वालकेश्वर ६। बजे आये। अल्प भोजन किया। पत्र वगैरा लिखे। ११ बजे शयन।

२४-९-१४

सुबह घूमने गये। पूरणमलजी सिंघानिया के बगले गये। वह सोते थे। उनके यहा कि ८॥ बजे उठेंगे। वहा से गोविन्दलालजी पित्ती के बगले करीब १॥-२ घण्टा कई विषयो पर, सामकर जाति-सुधार-

बनारस पर वार्तालाप किया। उन्होंने कबूल किया कि वर्धा आकर मारवाड़ी विद्यार्थीगृह देखेंगे। सीताराम पोद्दार मिला। पुस्तकालय की तथा सर कस्तूरचन्दजी को मानपत्र देने आदि विषय की वार्ता की॥ १। बजे जापान काटन। वहां से भुमान के आफिस। वापस जापान काटन के यहां आया। वहां १०० गाठों की बिल्टी आई हुई थी। आठ हजार का चेक लिया। ३०० गाठों का फिर नया सौदा किया। १-१॥ घण्टा यहां लगा। गोविन्दलालजी के आफिस से नमूने लेकर गया। वह नहीं मिले। मर्चेंट बैंक होकर कुलाबा गये। आज वहां काम नहीं हुआ। चौपाटी पर ८॥ बजे तक बैठे रहे। काणे इंजिनियर मिले। शान्ति आदि घूमने आई थी। ६॥ बजे भोजन-शयन।

२५-६-१४

पत्र लिखे, स्नान वगैरा किया व अखबार पढ़े। सीतारामजी पोद्दार के पास गये। विद्यालय, पुस्तकालय व व्यवहार-सम्बन्धी बातचीत। वहीं भोजन करके वर्धा से चिमनीराम आये थे, सो उनसे वार्ता की। दुकान होकर गामडिया के आफिस में गये। उनको बहुत प्रकार १॥-२ घण्टे समझाकर जाइन्ट का नक्की किया। उसमें लिखा लिया व लिख दिया।

कुलाबा बाजार का भाव ठण्डा था। २०० गाठें भुमान को दी। ७ बजे तक वहां रहकर मुलतानचन्दजी डागा के यहां लक्ष्मणदासजी से मिले। रामप्रतापजी मोहता ने जाइन्ट पर सही की। नैनसुखदासजी व शिवनारायण के यहां गये। पान वगैरे लाये। वहां से गोरखराम सादूराम के यहां गये। श्रीनिवासजी से जाइन्ट पर सही करवाई। बाद में ६ बजे बंगले पहुंचे।

२६-६-१४

दुकान पर गये। जाइन्ट पर सही करवाई और बातचीत की। वहींपर भोजन किया। वहां से सूरजमलजी के यहां व थोड़ी देर बाद रामनारायणजी के यहां गये। चिमनीरामजी के साथ रामनारायणजी से बहुत-सी बातचीत। चिमनीराम के समक्ष सब खुलासा हुआ। एक तार इसके तक,

कोई भी समय, बिना समाचार दिये, उनसे उठा सकते हैं कहा। उन्होंने अपने लेने-देने का हिसाब बतलाया। कई तरह की बातें हुईं। वहां से जापान भुगान के आफिस में बुलाया गये। ५०० गांठे भुगान को हाजर की बेची। सिनेमा होते हुए घर आ गये। दानीजी से वार्ता, रामेश्वरजी, केशवदेवजी, माधोप्रसादजी आदि मिलने आये। ११॥ बजे तक बातचीत। बाद में शयन।

२७-६-१४

सुबह शीघ्र निवृत्त होकर गुलाबचन्दजी ढड्ढा से मिलने विद्यालय में गये। वहां से सूरजमलजी की दुकान गये। बाद में रामनारायणजी रुइया से मिले मोटर में। श्राविकाश्रम मगनबाई व कुकुबाई से मिले। बगले भोजन किया। चिमनीराम साथ में था। दानीजी के आदमियों को बिदायगी की। बाद में थोडी देर बातचीत। मोटर में लालजीभाई त्रिकमजी मूलजी जेठा-वालों से मिलने गये। कलकत्ते की आढ़त की वार्ता।

स्टेशन पर गया। वहां गोपालदासजी, अकोला मिलवालों से वार्ता। दोनों दानीजी, रामेश्वरजी, माधोप्रसादजी, फतेचंदजी, किसनलाल, केशवदेवजी, बजरंगलाल आदि पहुंचाने आये, उनसे वार्ता। १ बजे रवाना हुए। वालकट-वालों का नागपुर का एजेंट, धनजीभाई साथ में था, उनसे वार्तालाप। रखमानदजी बजाज भी साथ आये। इगतपुरी तक बहुत जोर की वर्षा होती थी।

वर्धा २८-६-१४

धामणगांव पर श्रीनारायण ने आकर उठाया। उनसे बातें सुनकर फिकर हुई। पुलगांव में बंशीलाल मिलने आया।

वर्धा पहुंचे। निवृत्त होकर काम-काज देखा व भोजन किया। दशहरा देखकर पोद्दार के बगीचे में सबको सोना दिया। समारोह बहुत ही अच्छी तरह से हुआ। थोडगे का हास्यप्रद विनोद-व्याख्यान हुआ। वहां से दामोदर पंत के साथ घर आया। रामगोपालजी को सोना देने गये। उनसे वार्ता। बालुजी पोद्दार के यहां जाकर घर आये। ११ बजे शयन।

२९-९-१४

नित्य कार्य। पोद्दारों के यहां नानी व भाभी को बम्बई के समाचार कहे। घर पर भोजन व विश्राम। व्यवहार-कार्य। बगीचे घूमने गये।

३०-९-१४

निवृत्त होकर बोर्डिंग में घूमते रहे, देख-भाल करते रहे। सनावद से गोपीकिसनजी, मुंदरमलजी आदि आये। उन्हें बगीचे भेज दिया। उनकी व्यवस्था कर भोजन व विश्राम किया। सनावदवालों से वार्ता व फराल करवाया। शाम को बगीचे में सब मिलकर ताश वगैरा खेले। घर पर भोजन व वार्ता।

१-१०-१४

नित्य कार्य। बाबा कोमटी वरोरावाला आया। उससे जमीन के संबंध में वार्ता व भोजन। विश्राम। सनावदवाले गोपीकिसनजी को उलटी हो गई। शिवप्रसादजी को दिखलाकर दवा आदि ली। शाम को बगीचे गया।

२-१०-१४

भागचंदजी मिलने आये। उनसे गणेश प्रेस-संबंधी वार्ता व साथ में भोजन किया। सनावदवालों से वार्ता व विश्राम। रुई के नमूने आदि देखे। चिट्ठियां डलवाईं। पंडित बालचंदजी शास्त्री रामदुर्ग से आये। उनके साथ कलेवा किया। शाम को बगीचे ताश खेले व विनोद चलता रहा। जोखीरामजी खेतान मिलने आये, उनसे बातचीत। बाद में श्रीनारायण व लक्ष्मीनारायणजी जाजरानगीवाले आये। भोजन, देर तक वार्ता।

३-१०-१४

बगीचे में जोखीरामजी, श्रीनारायण, लक्ष्मीनारायणजी आदि से वार्ता। स्नान आदि कर जाजूजी को पुलगांव प्रेस का मुकदमा दिखाया। सनावदवालों ने भोजन किया। बाद में जोखीरामजी खेतान व बालचंदजी पंडित से मिलने गये। उनसे वार्ता। शरद पूर्णिमा का कार्यक्रम निश्चित किया। दोनों ने प्रसाद लेने को आने का निश्चय किया। गोपीकिसनजी (सनावदवाले) को बुखार आ गया। घबराने लगे। डाक्टर को दिखाया, दवा आदि की व्यवस्था की। पूज्य जीवराजजी आये। पंडित बालचंदजी से वार्ता।

बगीलाल पुलगांव से आये। कलकत्ते का कार्य समझाया। शरद पूर्णिमा का उत्सव हुआ। विद्यार्थियों के भजन ठीक हुए। आरती, प्रसाद। बाद में श्रीनारायण ने अपनी टकीवन कही। ११ बजे शयन।

८-१०-१४

बगीचे जोतीरामजी मिनान से वार्ता। स्नान, सध्या करके देवदर्शन कर घर आये। वालकट का एजेंट आया। उनसे वार्ता। गोपीकिसनजी मनावदवालो से बातचीत। डाक्टर को बुलाकर उनकी तबीयत दिखलाई। भोजन, विश्राम व पत्र लिखे।

मनावदवालों से हीरजी का फैसला। आपस में बंबई-पंचायत द्वारा होना निश्चय हुआ। श्रीनारायण, लक्ष्मीनारायणजी से वार्ता व लिखा-पढ़ी की गई। डाबूराम को बुखार १०८ डिग्री था, गोविंदरामजी को बतलाया। दवा शुरू की। केजडीवालों के यहां बैठने गये। उनके बहनोई गुजर गये थे। बापट शास्त्री का व्याख्यान शंकराचार्य व गीता के संबंध में, पंडित बालचंद्रजी शास्त्री की अध्यक्षता में हुआ। वहां से आकर गोपीकिसनजी, मुंदरलाल को पहुंचाने स्टेशन गया। बद्रीनारायणजी मिले, उनसे वार्ता। घूमकर घर आया। घर पर जाजूजी से बहुत-सी बातचीत की।

नागपुर-वर्धा ७-१०-१४

स्नान व पूजन कर दूध लेकर मेल ट्रेन पर स्टेशन गये। स्कोडा के साथ फर्स्ट क्लास में नागपुर रवाना। गाडी में लड़ाई व व्यापार-संबंधी बहुत-सी वार्ता। नागपुर में दारासाहब के साथ जीन, एम्प्रेस मिल, दौलतरामजी, वालकट आदि के स्थानों में उसे मिला दिया। हाल-हकीकत से वाकिफ कराया। महाराज बाग होते हुए उसे वहीं छोड़कर बंगले पर १२ बजे भोजन किया। नागरमलजी व बिरदीचंदजी आदि से वार्ता। बाद में इतवारी गये। घर-वालों से मिलकर बंगले में कचौरें खाये, जल पिया। मेल से वर्धा वापस आये। जलपान कर स्कोडा के साथ कपास जवारी के झाड देखने पौनार बगीचे गये। सब देखा। रात में भोजन के बाद पत्र पढे। ९॥ बजे शयन।

वर्धा ८-१०-१९

[illegible] । [illegible] । बाद में [illegible] । बाद में [illegible] । बाद में [illegible] ।

९-१०-१९

नित्य कार्य, रात में [illegible] नहीं। [illegible] सिर में दर्द था। थोड़ा भोजन कर विश्राम किया। तबीयत भारी मालूम हुई। ज्वर का अंश था। शाम को भोजन नहीं किया। [illegible] ।

१०-१०-१९

सर्दी थी, नित्य कार्य। केस मुकदमे घर पर ही किये। बगीचे में [illegible] । रात में भोजन के बाद विद्यार्थियों के भजन। कई विद्यार्थियों से अभिमन्यु नाटक के विषय में वार्ता। ११ बजे शयन।

११-१०-१९

सर्दी कम गई थी। नित्य कार्य। कुर्ते-टोपी नवाब दुल्हा जाट को भेजी। पत्र देखकर, भोजन व विश्राम। व्यवहार कार्य व बगीचे में तास खेलना। सर्दी की दवा ली। भोजन के बाद बार्डिंग हाउस गये। आज लेक्चर थे। प्रौढ़ विवाह पर श्री पुरुषोत्तम पाण्डे व जाजूजी बोले। मैंने भी थोड़ा-सा कहा। बाद में बाल प्रबोधिनी सभा का कार्य देखा। श्री नारायण धामणगाव-वाले व महादेवजी आये, उनसे उनके घर की वार्ता। कर्तव्य पर डटे रहने को कहा। १२। बजे रात में शयन। इनके साथ रामनारायणजी वैद्य सीकर-वाले भी आये थे।

१२-१०-१९

नित्य कार्य कर जाजूजी के यहां गया। पत्र वगैरा देखकर, भोजन व विश्राम। बाद में व्यवहार-कार्य। केस मुकदमे घर पर ही किये। सर्दी का जोर कम था।

बार्डिंग के मकान के संबंध में जाजूजी से वार्ता भागचंदजी, बंशीधरजी,

फौजमलजी राठी आदि बगीचे में मिले। उनके साथ ताश खेले। पोद्दार के यहा वार्ता। वहीं पर भोजन किया। १०॥ बजे शयन।

१३-१०-१४

बोर्डिंग का मकान देखा व नित्य कार्य किया।

बशीधरजी झुनझुनवाला से धामणगाव आदि विषय की वार्ता। भोजन व विश्राम, सपेरा रीछ लेकर आया, खेल किया। बाद में टाऊन हॉल जाकर म्युनिसिपल के माली-सबधी कागजात देखे। बेंच मुकदमे किये। ६। बजे तक बगीचे। ताश खेले। घर पर पत्र पढे। आज रुई का भाव घटकर आया। चित्त में थोड़ा विचार रहा। ईश्वर इच्छा।

१५-१०-१४

साफ-सफाई आदि करवाई। महादेवजी धामणगाववाले बगीचे आये। हकीकत कही। रात में भोजन के बाद पूज्य रामगोपालजी से मिले। उनसे धामणगाव-सबधी बहुत-सी वार्ता। कहा-सुनी भी योग्य तरीके से की, पर उनका जिद्दी स्वभाव होने से, सतोष लायक बाते नही हुई। ११ बजे शयन।

धामणगांव १६-१०-१४

जिमनीराम राठी बंबई से आया। उससे बातचीत। मेल २॥ घंटा लेट आई। १०-५१ पेसेंजर से धामणगांव गया। पूज्य रामगोपालजी, मोतीलालजी मुनीम आदि से वार्ता। धामणगाव श्रीनारायण तथा उनकी भाजी, श्रीकृष्णदासजी डागा, महादेवजी आदि से वार्ता। सब हकीकत मालूम हुई। पूज्य रामगोपालजी की इच्छा मुजब सीर का वाजिब प्रबध हुआ। जमा-खर्च किये। डागा मुनीमजी का मत था कि काम कोई रीत से निभ नही सकता। इस कार्य मे परिश्रम हुआ व फिकर भी हुआ। बहुत रात तक बातें होती रही।

वर्धा १७-१०-१४

धामणगाव मे रात निद्रा नही आई। स्टेशन आया। मेल लेट थी। भागचदजी के साथ वार्ता। मेल मे वर्धा आना। दीपावली का कार्य-व्यवहार

किया। शाम को दीपपूजन, अखबार व पत्र पढ़े। बसीलाल ने कलकत्ते के समाचार कहे।

१८-१०-१४

दीपावली का कार्य। बाल बनवाये व सजाई वगैरा की। ६ बजे दीपपूजन हुआ, बाद में भोजन। ७। बजे में लक्ष्मी-पूजन का कार्य प्रारंभ हुआ, जो १० बजे आनंदपूर्वक निर्विघ्न समाप्त हुआ। रोशनी-सजावट ठीक हुई। नरसिंगदासजी मोहता के रामप्रतापजी से १०१ गाठों का सौदा हुआ। गाव में रामगोपालजी पोद्दार, छोटी दुकान आदि स्थानों में गये। आज शाम को कमला को चोट लग गई थी। उससे थोडी फिकर रही। थोडी देर बाद ही वह खुश होकर, खेलने लग गई।

१९-१०-१४

डिप्टी कमिश्नर मि० बैचलर, सिविल सर्जन व हरिदास सेक्रेटरी आदि बोर्डिंग पर आये। सब घूम-फिरकर देखा। डिप्टी कमिश्नर बहुत खुश हुए। बहुत बातचीत हुई। भोजन व विश्राम। पूजन की चिट्ठिया लिखी, पोद्दार के यहा कलेवा किया। बगीचे में ताश खेला। शाम को घर पर भोजन। रात में जाजूजी आदि के साथ गाव में सब लोग पान खाने गये। १० बजे वापस आये।

२०-१०-१४

अन्नकूट के कार्य की व्यवस्था। डिप्टी कमिश्नर के यहा गये। उन्होंने पान-सुपारी को सहर्ष आने का कबूल किया। भोजन व विश्राम के बाद जाइट की लिखा-पढ़ी की। व्यवहार-कार्य व पूजन किया व चिट्ठिया लिखी।

पूज्य रामगोपालजी ने धामणगाववालों के बारे में बुलाया। उनमें साफ-साफ बात हुई थी। इनका कुछ भी ठिकाना नहीं। घर से बालाजी के मंदिर में अन्नकूट जीमने गये। जयनारायणसाहब मिले। पोद्दार के बगीचे तक पैदल घूमते वार्ता करते हुए गये। वापस में नायडू वकील व बालचन्द्रजी पण्डित मिले। युद्ध-सम्बन्धी बहुत-सी बातें हुई। कामरोज इंजिनियर बीमार था, उसके घर गये।

२१-१०-१४

अन्नकूट-कार्य की व्यवस्था। भोजन व थोड़ा विश्राम। १२ बजे मन्दिर में गये। १।। बजे तक आरती वगैरा कार्य हुए। बाद में कप्तान कोलमीनसाहब के यहा गये। उनसे वार्ता। पान बीड़े के लिए आने को कहा। वहा से हरिदास साहब के यहा बैठने गये, वह नही थे। छोटे कप्तान के यहा गये। उनसे बहुत-सी वार्ता। आत्मज्ञानी व बहुत ही लायक सज्जन मालूम हुए। वहा से तहसीलदार दुबे के यहा, उनकी लड़की का बच्चा चला गया था सो बैठने गये। वार्ता की। उन्हे अन्नकूट का प्रसाद लेने के लिए आने को कहा। कन्हैयालाल पोद्दार के बहनोई केशवदेवजी घंलिया की चाची मर गई थी। वहा बैठने गये। मन्दिर में ८ बजे तक व्यवस्था। सबको जिमाया। बाद में दुबेसाहब, घर के लोग, जाजूजी, पण्डितजी आदि ने मिलकर आनन्द से प्रसाद लिया।

२२-१०-१४

आज अफसरो को पान-सुपारी थी। उसका प्रबन्ध किया। रात में ७।। बजे से आफिसर व वकील लोग आने शुरू हुए। ८।। बजे डिप्टी कमिश्नर आये। सिविल सर्जन, छोटा कप्तान ढोवले, लोभेसाहब आदि आये। सीताराम विद्यार्थी का गायन हुआ। उसके बाद डिप्टी कमिश्नर ११-१।। घण्टे तक बातचीत करता रहा। बहुत-से लोग बिना भोजन किये आये थे। इन्हे देर हो गई। पान-सुपारी का सम्मेलन बहुत ही आनन्दपूर्वक सम्पन्न हो गया।

वर्धा, हिंगनघाट २३-१०-१४

जयनारायणसाहब आये। उनसे वार्ता। जाजूजी के यहा भोजन किया। असेसर के रूप में हाजिर होने का नोटिस था, सो वहा गये। कचहरी में ढोवले साहब ने शीघ्र ही छुटकारा कर दिया। बार-रूम मे थोड़ी देर ताश खेले। घर आकर विश्राम किया।

हिंगनघाट गये। पण्डित बालचन्द्रजी से वार्ता। वह थर्ड में बैठे। पोद्दार के बगीचे जाना, रात में भोजन कर व्यवहार की बातचीत की। चुन्नीलाल को

हुआ था। उनके झगड़े की बातचीत की।

हिंगनघाट २४-१०-१४

सुबह उठते ही पाखाना-वगैरह गए। निवृत्त होकर ६ बजे उनकी दुकान पर आए। दलालों से वार्ता। भोजन। वर्धा से रामनाथजी को व दुकान की चिट्ठी-तार आदि आए। बाद में रूपचन्दजी मोहता की दुकान पर नरसिंगदासजी से मिलकर पोद्दार की दुकान पर जाइन्ट-सम्बन्धी व चुन्नीलाल के बंगले-सम्बन्धी वार्ता।

जीनिंग मिल में गये। कनकमलसाहब व मोतीलालजी से वार्ता। २०४ गाठें बेचीं, दाम तो कम ही आये। वहां कलेवा किया। पोद्दार की दुकान से पैदल जीन गये। देखभाल करके मिल में दामाजी से मिलकर पोद्दार की दुकान पर भोजन किया। दलालों से व्यापार-सम्बन्धी वार्ता। १० बजे रात में स्टेशन पर वेटिंग रूम में गये। १॥ बजे उठे, ३॥ बजे वर्धा पहुंचे।

वर्धा २५-१०-१४

सुबह रामनिरंजनदासजी मुरारका पटनेवाले रामनाथजी के साथ आये। जल्दी निवृत्त होकर उनसे मिले। उन्हें मेल से विदा किया। उन्हें एक रोज रहने के लिए कहा गया, पर वह चले गये। घूमकर स्नान व भोजन, थोड़ा विश्राम। डागाजी हिंगनघाट से आये। ६४ गाठों का सौदा किया। नायडू-साहब जाजूजी व पाण्डे आदि आये। लड़ाई के कारण व्यापार-सबंधी सूचना सरकार को भेजने के विषय में वार्तालाप हुआ। खरेसाहब से मिलकर व सलाह करके डेप्युटेशन लेकर डिप्टी कमिश्नर के पास जाने का निश्चय किया।

मिठाबाई व डाक्टरनी आई। पोद्दार के बगीचे गये। रात मिठमल पोद्दार से व्यक्तिगत चरित्र-सम्बन्धी बहुत-सी बातें हुईं।

२७-१०-१४

सिविल सर्जन के साथ मालगुजारी पुरा वगैरा पैदल घूमे। थोड़ी देर बाद घर आकर ११ बजे बगीचे गये। १२ बजे आवले के नीचे आनन्द के साथ भोजन किया।

जाजूजी के साथ २ बजे दुकान आये। डागाजी हिंगनघाट से आये। भवानी-दास, चुन्नीलाल का फैसला हुआ। करारनामा वगैरा किया।

२९-१०-१४

पूज्य रामगोपालजी को साथ लेकर रजिस्ट्रार के कोर्ट में गये। मदनी के खेत की रजिस्ट्री कर दी। बैंक में मुकदमे किये। बगीचे में भगवानचन्दजी से वार्ता।

हिंगनघाट-वरोरा ३०-१०-१४

६ बजे भोजन करके शिवनारायणजी लध्धड़ के साथ हिंगनघाट गये। रेख-चन्दजी के यहां बैठने गये। पोद्दार के यहां थोड़ी देर वार्ता। १॥ बजे रेख-चन्दजी की मिल से टांगा आया। वहां गये। चार आने की पाती की जमीन का फैसला किया। डागाजी की मरजी के मुआफिक हुआ। शर्तनामे की शर्तें नक्की की। वहींपर फलाहार किया। मथुरादास मोहता से वार्ता। शाम को गाड़ी से वरोरा स्टेशन पर जिनरू मिल के सम्बन्ध में वार्ता। उसमें नुकसान बतलाया और काम बन्द करने का विचार बताया। वरोरा स्टेशन पर गोविंदराम पोद्दार आये। पैदल ही पोद्दार के यहां गये। वहीं भोजन किया। वार्ता और शयन।

वरोरा ३१-१०-१४

जगम की जमीन में से जीन के लिए देखी। गोविन्दराम से वार्ता, भोजन किया। शिवनारायणजी करारनामा लिखवाकर लाये। २० वर्ष आगे की शर्तें डालना आवश्यक मालूम हुआ। रावतमलजी की दुकान पर बहुत समझाने पर ६ बजे करारनामे का कार्य समाप्त हुआ। फिर जगह देखी। जीन की जगह का निश्चय हुआ। पोद्दार के यहां भोजन। जगम को एक-दो कड़ी बातें कहनी पड़ी। ११॥ बजे स्टेशन। ३ बजे रात को वर्धा पहुंचे।

वर्धा ११-१-१४

व्यवहार-कार्य, दोपहर को जाजूजी से मिले। वरोरा का करारनामा आदि दिखाया। वर्धा जाइन्ट-सम्बन्धी गामडिया का पत्र-व्यवहार दिखलाया। पोद्दार के बगीचे दही-हुरडा खाया। लोन, खात देने व बुवाई करने आदि के

बहुत सी बातें हुई।

२-११-१४

हिंगनघाट में दादाजी आये। उनसे वार्ता। बगीचे में बापी का हुक्का मारा। जर्मनी के विरुद्ध ब्रिटिश सरकार द्वारा लड़ाई आरम्भ करने के समाचार पढ़, चिन्ता हुई।

३-११-१४

विद्यार्थी-गृह का कार्य १॥ घंटा किया। फिर भीकमचन्द, नेमचन्द व जानकी बगान जीन तक की निगरानी की। दादाजी से वार्ता। उनसे भविष्य पुराण सुना। थोड़ा विश्राम। हिंगनघाट जीन की जगह नेमचन्दजीवाले को दी। रजिस्ट्री कर दी। दो दफे कचहरी जाना पड़ा। फिर बगीचे आये। रामप्रताप भालोटिया, दादाजी आदि से वार्ता। नुकागम पटेल से वार्ता। ११ बजे शयन।

रेल में ५-११-१४

घोड़े को छुट्टी दी, मन चिन्तित रहा। जोखम वगैरा का बंदोबस्त कर व्यवहार-कार्य। पूज्य रामगोपालजी पोद्दार मिले।
बंबई के लिए रवाना हुए। पुलगाव व धामणगाव में लोग मिले। अकोला में लक्ष्मीनारायण गिधानिया मिलने आये। रामभाऊ भी मिला।

बंबई ६-११-१४

रास्ते में कल्याण तक दृश्य सुन्दर थे। माधोभाई बोरीबन्दर आये। जापान काटन के साहब मिले। भोजन करके रामनारायणजी से मिले। बातचीत हुई। नानोली में आने को कहा। बाद में सूरजमलजी से हिसाब की बातचीत की। रामनारायणजी को बोरीबदर छोड़कर भुसान-आफिस गये। सबसे मिलकर मर्चेंट बैंक होते हुए कुलाबा आये। ११० में १८। गांठें बेची।

लोणावला ७-११-१४

सूरजमलजी के हिसाब का निकाल किया। दानीजी के यहां गये, बातचीत वहांपर भोजन में ११॥। बजे सूरजमलजी से बात हो गई। बाद में भुसान

आफिस व बोरीबदर गये। २।।। बजे की गाड़ी से दानीजी के साथ लोणावला गये। रामनारायणजी स्टेशन पर आये। बंगले पहुचे। बातचीत भोजन, १० बजे शयन।

८-११-१४

निवृत्त होकर मोटर मे दानीजी के साथ बगला वगैरा बहुत देर तक देखते रहे। भोजन व वार्ता। बाद मोटर मे टाटा का बिजली का कारखाना अच्छी तरह से देखा। काफी देर तक घूमने से सरदी का जोर हुआ। डाक्टर रजबअली ने परीक्षा की, बहुत अच्छी तरह से देखा। चावल, दूध, आलू वगैरा लेने की मनाही की। जीमकर १०।। बजे धर्म-संबधी बातें व बाद मे शयन।

माथेरान ९-११-१४

निवृत्त होकर रामनारायणजी से वार्ता। कॉफी लेकर लोणावला स्टेशन आये। पूर्णमलजी की स्थिति के विषय मे दानीजी से वार्ता। २ बजे माथेरान। लक्ष्मी होटल मे ठहरे। स्नान-भोजन। घोड़े पर बैठकर गार्बट पाईन्ट देखा। १२ बजे जादू के खेल देखे।

१०-११-१४

निवृत्त होकर लुल पाईन्ट घोडे पर गये। पार्टी का फोटो लिया गया। फल खाये और बातचीत की। ११। बजे डेरे पर स्नान व १२ बजे भोजन। विश्राम करके गायन सुना। नगर-सेठ की आश्चर्यजनक वार्ता सुनी। दानीजी के साथ फोटो लिया। धर्मदास, नानाभाई तुलसीदास, छोटेलाल के साथ घोडे पर पेनोरमा पाईंट देखने गये। बहुत अच्छी तरह देखकर डेरे पर लौटे। २।। घंटा आराम। भोजन।

बबई ११-११-१४

जल्दी निवृत्त होकर दूध लेकर ७।। बजे माथेरान से रवाना हुए। दानीजी से वार्ता। १० बजे नेरल से बबई रवाना।

रामनारायणजी से मिले।

भुमान आफिस से कुलाबा गये, बाजार का रग ठीक था। २२९ वार्ड

११० के भाव मे नरम माल की बिकी।

१२-११-१४

तबीयत कुछ अस्वस्थ मालूम हुई। सूरजमलजी की देश जाने की तैयारी की। १२ बजे भोजन किया। प्रेमराजजी कलकत्ता से वर्धा होकर आये। उनसे वार्तालाप। गामडिया आफिस मे जाकर जाइट-सबधी लिखा-पढी। भुसान-आफिस से कुलाबा गये। बाजार ठीक था। दुकान पर भोजन करके रामनारायणजी के साथ मोटर मे कुलाबा हवा खाने गये। सूरजमलजी देश के लिए विदा हुए। लादूरामजी बजाज के घर के लोग देश गये। उनके पुत्र को विदा मे ४ रुपये दिलाये। रामनारायणजी के साथ पवनचक्की गये। रामेश्वरजी बिडला, लक्ष्मणदासजी डागा आदि आये। उनसे सभा के विषय मे बातचीत। ११ बजे दुकान गये। ऊपर के बगले मे शयन किया, निद्रा ठीक आई।

१३-११-१४

८॥ बजे निवृत्त होकर रामनारायणजी रुइया से मिले। बहुत-सी व्यापार-सबधी खुलासे से बातचीत हुई। एक लाख का चैक १२ मास करार का उनका जमा कर ७५ हजार भुमान के यहा व २५ हजार सूरजमलजी के यहा जमा करवाया। वल्लभनारायणजी दानी की तबीयत देखने गये। तबीयत अस्वस्थ थी। १॥ घटा उनके पास बैठे। फिर दुकान जाकर भोजन किया व पत्र लिखे। केदारमलजी मेमराजजी आये, उनसे वार्ता की। बाद मे मारवाडी विद्यालय मे परीक्षा का प्रबध देखने गये। प्रबध ठीक तौर से करवा दिया गया। वहा से स्टोर सामान की निगाह करके कुलाबा गये। रात मे भोजन के बाद रामनारायणजी की मोटर मे पालवा पवनचक्की व भुमानसाहब के घर होते हुए कुलाबा स्टेशन पर केशवदेवजी नेवटिया को पहुचाया। बाद मे केदारमलजी के साथ सिनेमा देखा। लडाई के दृश्य देखने लायक थे।

१४-११-१४

९॥ बजे दानीजी के [illegible] गये। [illegible] सभा के प्रबध-सबधी

वार्ता। दुकान जाकर भोजन किया। किले में स्टोर सामान देखा। विरला कंपनी के यहा केकसरू से वार्ता। धामणगाव-संबंधी उनका समाधान कर दिया। धीरज रखने को कहा। भुसान आफिस मे मि० टक्याउची मैनेजर से जिद होने के कारण ५०० गाठें वर्धा जनवरी १८२ मे खरीद की। बाद कुलाबा। बाजार मदा रहा। कोशिश करके ५०० गाठे गोसा गोसी कम्पनी को दर १८३ मे बेची। १०० नागपुर विरला को १८० मे। दुकान पर भोजन करके रात मारवाडी वाचनालय मे गये। सभा का प्रवन्ध किया।

१५-११-१४

६ बजे दानीजी आदि से मिले। आज की सभा में उन्हे आने का आग्रह-पूर्वक कहा। दुकान पर भोजन व विश्राम। २ बजे से सभा के कार्य का प्रवन्ध करना शुरू किया। ३॥। बजे मि० एडवर्ड पुलिस कमिश्नर बम्बई आये। उनका स्वागत किया गया। सभा का कार्य भली प्रकार निर्विघ्न पार पड़ गया।
मारवाड़ी हिन्दी वाचनालय में अखबार पढे। वर्धा मारवाडी विद्यार्थी-गृह की खबर भी पढी। केदारमलजी के साथ अमेरिका-इडिया सिनेमा देखा। ठीक था। घर पर भोजन।

१६-११-१४

६ बजे हीरजी खेतसी के यहा गये। सनावद के बारे में सनावदवालो के सामने खेतसीभाई को पचो की हकीकत कही। मेमराजजी से मिलकर दुकान पर भोजन। हीरालालजी रामगोपालजी की दुकान गये। उन्होंने हिसाब दिया। बशीधरजी के साथ इन्कमटैक्स के काम के लिए सॉलि-सिटर के यहा गये। इन्कमटैक्स कलेक्टर को रिमाइन्डर भिजवाया। भुसान-आफिस के मि० मोरिया का मैनेजर से बहुत-सी वार्ता। कुलावा मे कुछ सौदा किया। दुकान होकर दानीजी के यहां गये। वार्ता। वही भोजन किया। १०॥ बजे दुकान पर आकर शयन।

रेल में १७-११-१४

श्री मोहन करवे रामविलास मेलान से मिले। हीरालाल रामगोपाल, दुबान सुमान आदिस, मेनेजर से वार्ता। १४० जूनी गाठें बेची। १ बजे की गाड़ी से वर्धा के लिए रवाना। मि० मात्रा भी साथ स्टेशन पर आया। सुमान मेनेजर आदि सब आये। मि० फावलर सर्वेअर भी मिला, हीरालाल व टिकिट इन्स्पेक्टर से वार्तालाप।

वर्धा १८-११-१४

ग्रामणगाव से श्रीनारायण व महादेवजी मिलने आये। वार्ता। श्रीनारायण वर्धा तक आया। भोजन, विश्राम। जीन, प्रेस, मार्केट अन्य कार्य।

हिंगनघाट २२-११-१४

श्री गोपालन कम्पनी की साधारण सभा के लिए शाम की गाडी से हिंगनघाट गये। पोद्दार के यहा भोजन कर गोपालन की मीटिंग के लिए गए। सभा का कार्य आरम्भ हुआ। ११ बजे रात तक काम चला। आगे कार्य बन्द करने का निश्चय हुआ। २१ को जाहिर नीलाम करने का नक्की हो गया व कोटे आदि के सम्बन्ध में प्रस्ताव पास करने का निश्चय हुआ। कम्पनी का कार्य देखकर चित्त में नाराजी हुई।

वर्धा २३-११-१४

पोद्दार के बगीचे निवृत्त हुए व व्यवहार-कार्य किया। सामान वगैरा गया, सो देखा। नई व जूनी मिलवालो से मिले। नरसिंगदासजी मिले। २०० गाठे सुपर फाइन की खुलासे करार से खरीद की। नरसिंगदासजी के प्रेस में गये। माल देखा। १२॥ बजे की गाडी से वर्धा।

२६-११-१४

विद्यार्थी-गृह के उत्सव के निमित्त साफ-सफाई, सजावट वगैरा। शाम को मेहमान आदि आने लगे। उसकी व्यवस्था की। रामचन्दजी भूतडा आये। रात में इनसे थोडी वार्ता। नागपुर के विद्यार्थियो के इनाम वगैरा तय किये। रात को ११॥ बजे शयन।

२७-११-१४

जल्दी निवृत्त हो गये। विद्यार्थीगृह के मेहमानों की व्यवस्था। पौन बजे उत्सव-कार्य आरम्भ हुआ। विद्यार्थियों का गायन हुआ। रिपोर्ट का कार्य श्री जाजूजी ने किया। रामचन्द्रजी भूतड़ा सभापति बनाये गए। बाद में विद्यार्थी-गृह में भोजन हुआ।

दोपहर को वर्धा के विद्यार्थी-गृह के विद्यार्थियों के व्याख्यान हुए। शालिग्राम-जी सभापति बनाये गए। राधाकिसन, विसवा, ठाकर, बालकिशन, नेमीचन्द, दुर्गा आदि ठीक बोले। शाम को विद्यार्थियों की कुश्ती हुई। रात में विद्यार्थी-गृह में भोजन। सम्मेलन बड़े ही आनन्द के साथ हुआ। बाद में विद्यार्थियों के भजन हुए। ११ बजे सब व्यवस्था करके शयन।

२८-११-१४

वर्धा विद्यार्थीगृह के विद्यार्थियों में व नागपुर विद्यार्थी-गृह के कालेज विद्यार्थियों में फुटबाल मैच हुआ। मैच काटन मार्केट के मैदान में हो रहा था। वह देखा। वर्धावाले अच्छा खेले। बाद में मलखम, डबल-बार आदि के व्यायाम विद्यार्थियों ने ठीक किये।

शिक्षामण्डल की सभा का कार्य पूर्ण हुआ। आज नागपुर के विद्यार्थियों को घर घर प्रेमपूर्वक भोजन कराया।

शिक्षामण्डल का कार्य पूर्ण हुआ। नागपुर के विद्यार्थियों के व्याख्यान हुए। साधारण थे। भगवानदासजी औरों से ठीक बोले। नागपुर के हरप्रसादजी व अकोला के एक विद्यार्थी ने मलखम के व्यायाम किये। अकोलावाला होशियार मालूम हुआ।

७। बजे दुकान पर आये। शालिग्रामजी आर्वी गये। भोजन के बाद मिठमल पोद्दार से वार्ता। थक गये। जल्दी शयन। रात में पण्डित बालचन्द्रजी का व्याख्यान हुआ।

पुलगांव-वर्धा २९-११-१४

सुबह विद्यार्थी-गृह होकर १०-१५ की गाड़ी से पुलगाव गये। वहां पानमलजी दलाल को प्रामाणिकता के लिए भली प्रकार समझाया। श्रीधरजी, व्य-

वगरजी व पुनगाव मिल के मैनेजर भी थे। एक्सप्रेस से वापस वर्धा। नागपुर के बाहिर के विद्यार्थी स्टेशन पर मिले। वरोरावाले बाबा दलाल आये। उनसे बातचीत। भुमानसाहब के बगले गये। ३०७ गाठें वरोरा व वर्धा की बेची। बगीचे गये। वहा वार्ता। पोद्दार के यहा जीमने को बुलावा आया। वहा पर भोजन किया। श्रीनिवासजी से जीन प्रेस-सम्बन्धी वार्ता। दुकान जाकर नागरमलजी आदि को पत्र दिया।

वर्धा-हिगनघाट-वरोरा ३०-११-१४

स्नान करके सुबह ६ की गाडी से हिंगनघाट गये। वहा गोपालन कम्पनी का कार्य किया। पोद्दारो की दुकान पर नागपुरवाले शिवनारायणजी राठी से वार्ता। रुस्तमजी पारसी से मिले। गाठो के लिए साधुराम तुलाराम का माल देखा। माल नरम था। पैदल ही दुकान गये। लक्ष्मीनारायणजी राठी से मिलकर मारवाडी शिक्षा-मण्डल के उद्देश्यो का मत-पत्र सविस्तर समझाकर सही ली। पोद्दार के यहा कलेवा किया। पूज्य जीवराजजी से गोपालन कम्पनी-सम्बन्धी वार्ता। उनका हार्दिक अभिप्राय दूसरा मालूम हुआ। ३॥ बजे कम्पनी में गये। प्रबन्ध बराबर नही था। ४॥। बजे तक बिडकर नही

[illegible]

दी, उसमे शीघ्रता करने के कारण ४० रुपये की कसर लगी। अनुचित कार्य हुआ। बाद में स्टेशन जाकर वरोरा के लिए रवाना हुआ।

वारा १-१२-१४

जीन का कार्य देखते रहे। रावतमलजी, मगनीरामजी आदि मिलने आये। उनसे व्यवहार-सम्बन्धी वार्ता। स्टेशन पर भुमानसाहब नही आया। बाग देखने का विचार [illegible] [illegible]री-सम्बन्धी वार्ता।
वापस गए। [illegible] मालूम हुआ।
[illegible] दुकान व [illegible]
[illegible] सभी [illegible]

का कारखाना, जीन, छोटा स्टेशन, तालाब, बाजार आदि घूमकर देखे। मुरलीधरजी बागला, भीमराजजी गागरमल कम्पनीवाले आये, उनसे वार्ता। पोद्दारों की दुकान गये। वरोरा पोद्दारों के यहां गोविन्दरामजी से मिले। यात्रा-सम्बन्धी वार्ता। १२ बजे शयन। सारा शहर में पुराने अवशेष बहुत मालूम हुए।

वर्धा २-१२-१४

डाकबंगले जाकर मि० मावा से मिले। जीन का कार्य होते हुए देखा। पोद्दार के यहा भोजन कर १०। बजे की गाडी से वर्धा रवाना। नागरी से पहले एंजिन बिगड गया। गाडी वापस वरोरा गई। मि० विनायक वासुदेव रानडे कान्ट्रैक्टर से बहुत प्रकार की बातें हुई। गाडी वर्धा ४। बजे पहुची। फल खाये। पत्र पढ़े। विनायकराव रानडे से वार्ता। मन्दिर बोर्डिंग आदि का व्यवस्था-कार्य किया।

३-१२-१४

नित्य कार्य किया। जीन प्रेस व बाजार गये। नागपुर के जौहरी केशरीचन्द-जी, पूनमचन्द, कर्णाधन, आदि भादक जाते हुए मिलने आये। उनसे वार्ता। रात मे जाजजी से गोपालन कम्पनी आदि सम्बन्धी वार्ता।

५-१२-१४

दत्तूजी केस के सिलसिले मे मिलने आये, उनसे वार्ता। अमरचन्दजी व नागोरीजी से वार्ता। आज कपास की गाठे बहुत ली गई। जीन मे गये। वहा से लखमीचन्द व नागोरीजी से मिलकर पोद्दार के बगीचे गये। कल सुबह अपने बगीचे मे श्रीधर खरे की तरफ से भोज का निश्चय हुआ। उसकी व्यवस्था की।

६-१२-१४

११ बजे बगीचे श्रीधर पत की तरफ से अपने बगीचे मे मित्र-मण्डली का भोजन था। १२॥। बजे जीमने बैठे। आवले के नीचे दाल, बाटी चूरमा आदि का भोजन हुआ। बम्बेवाले कप्तानसाहब आनेवाले थे। दुकान होकर ह स्टेशन गये। उन्हें फलाहार कराया। मेल लेट थी।

सीतारामजी आर्वीवाले से वार्ता। घर दत्तूजी के माजी के आग्रह के कारण श्रीराम के आगी-मेवा देखने गये। अकोला के सब लोग घर आये। उनसे वार्ता। आज भोजन नहीं किया। रात में कुछ बुखार हो गया। खामी व अस्वस्थता थी।

७-१२-१४

रात में ज्वर हो आया था। शरीर अस्वस्थ हो गया। डाक्टर बापट आया। दवा वगैरा दी। नागोरीजी व लखमीचन्द से वार्ता। पुस्तक पढ़ी। २ बजे दुकान में पत्र-व्यवहार। भुमान का नया साहब मिसानू आया। उससे वार्ता। अकोलेवाले बहुत-से सज्जन हिंगनघाट बरात में जाकर आये। उनसे वार्ता। उन्हें घर पर ही भोजन कराया। बोर्डिंग आदि बताया। रात में लखमीचन्द व भगवानदासजी झुनझुनवाला से वार्ता।

८-१२-१४

तबीयत कुछ अस्वस्थ थी। अल्प भोजन किया। नागोरीजी से वार्ता। दुकान पर भुमान कम्पनी का साहब आया। आज बगीचे में इन ४ साहबों को हिन्दू खाना खिलाया। उन्होंने बड़े ही आनन्द से खाया। दाल, पकौड़ी, पापड़, चावल वगैरा बहुत पसन्द किये।

९-१२-१४

बम्बेयार्न साहब यवतमाल से वर्धा जाने को आये। उनके लिए चाय व फलाहार की व्यवस्था की। उनसे वार्ता।

दत्तूजी के यहां, बिलकुल मन न रहने पर भी, उनको गलतफहमी न हो इससे, कच्ची रसोई जीमने गये। तिलक वगैरा का नेग नहीं लिया। पूज्य रामगोपालजी से वार्ता। पोद्दार के यहां होते हुए घर आये। भुमानसाहब से वार्ता। नागपुर में नमूने के तौर पर खरीदी थी। जीन-चाय देखा, डा० बापट की तरफ से दामोदर पंत खरे के बगीचे में पार्टी थी। उनका ज्यादा आग्रह होने के कारण वहां गये। बिलकुल थोड़ी दूधीपाक लेकर परमाट्ट के साथ घर आना।

१०-१२-१४

जाजूजी से जीन प्रेस, जाइन्ट आदि की बातें। मोतीलालजी मोहता मिलने आये।

११-१२-१४

दत्तूजी के आग्रह से नावें बाटने गये। ५ बजे तक वहा रहे। बाद में जीन होते हुए पोद्दार के बगीचे गये। भगवानदास से विरदीचदजी की वार्ता। रात मे पत्र लिखे।

नागपुर-वर्धा १२-१२-१४

मेल ट्रेन से मि० साबा के साथ नागपुर आये। रेल में दादाभाई के मैनेजर से जीन प्रेस-सबधी बहुत-सी बातें हुई। नागपुर मे दादाभाई के जीन प्रेस देखे। ओटाई, बधाई की निगाह की। आर्वी सभापति प्रेस मे भुसान की गाठें बध रही थी। माल ठीक था। पोद्दार के बगले पर जल्दी से भोजन किया। दादाभाई की मोटर मे मि० साबा को लेकर सावनेर गये। कारखाना देखा। ७२ बोरे खरीदे। ४। बजे वापस नागपुर आये। नारायणजी से वार्ता। कलेवा करके ५ की गाडी से वर्धा रवाना।

वर्धा १३-१२-१४

जाजूजी व काले मास्टर के साथ प्ले ग्राऊड। विद्यार्थियो के लिए खेल-कूद की जगह देखी। नये प्रेस के सामने की पसद आई। नागपुर व सावनेर के काम की व्यवस्था। पोद्दारो के बगीचे मे भुसानसाहब से वार्ता। स्कूल-कमेटी का कार्य किया।

१४-१२-१४

रात मे वर्षा हुई। सुबह मेल ट्रेन से मि० साबा के साथ नागपुर गया। मि० गोपालराव देशमुख मिले, उनसे वार्ता। नागपुर मे दादाभाई जीन प्रेस मे आये। काटन मार्केट में ५-६ गाड़िया ली। बाजार की रगत देखी। पोद्दारो के यहा भोजन किया। इतवारी मे गोपीजी से वार्ता। उन्होंने काम करने की इच्छा बहुत बतलाई। इन्हे ६ आना सैंकडा आढ़त भर देने को कहा। काम बराबर करने के लिए समझाया। दादाभाई जीन प्रेस जाकर

एम्प्रेस मिल में नागरमलजी से वार्ता। मि० सोराबजी मैनेजर से मिले। लड़ाई व व्यवहार-संबंधी वार्ता हुई। अमरचंदजी पुगलिया के साथ मारवाड़ी कॉलेज बोर्डिंग देखने गये। सबसे वार्ता। भगवानदासजी से बातचीत।

वर्धा १५-१२-१४

पोद्दारों के बंगले पर निवृत्त होकर कॉफी ली। मिल में नागरमलजी के साथ मि० एंडरसन के यहां गये। सब बातें कहीं। बुधवार को वर्धा आने को कहा। कॉटन मार्केट में रायली के बड़े साहब से दो-दो बातें हुईं। थोड़ी कपास की गाड़ियों के बोझ लिये। इतवारी में गोपीजी के घर जीमे। बाद में गोपीजी के साथ दादाभाई वगैरे मिले। शिवनारायणजी राठी से व दलाल से वार्ता। मैनेजर माणकजी से लिखा-पढ़ी आदि सब व्यवस्था की। पोद्दारों के बंगले होते हुए नागरमलजी से मिलकर स्टेशन आये। ६-५५ की गाड़ी से वर्धा घर पहुंचकर भोजन-आराम।

१६-१२-१४

मि० साबा से नागपुर एजेंसी-संबंधी वार्ता। मि० अर्ने के यहां होते हुए पोद्दारों के यहां गये। ५० गांठों का सौदा किया। २०० खंडी बिनौला का भी। पूज्य जीवराजजी से वार्ता।

मिसेस फ्रांसिस डाक्टरनी से जचकी-संबंधी वार्ता। मिस एंडरसन व छोटी बाई नर्स मेल से आईं। उन्होंने कमला की माजी को भली प्रकार देखा-भाला। ७॥ की गाड़ी से वे नागपुर गये।

१६-१२-१४

स्टेशन गये। बंबई से श्रीयुत वल्लभनारायणजी दानी आये। उनकी व्यवस्था की। बेंच में मुकदमे किये। वल्लभनारायणजी के साथ बगीचे गया।

२०-१२-१४

वल्लभनारायणजी से वार्ता। शाम को वल्लभनारायणजी, नागोरीजी के साथ टेकड़ी तक घूमने गये। आज विद्यार्थियों को फन-पार्टी दी। अमरूद व चिवड़ा खाया। जाजूजी से मिलकर वार्ता।

नागपुर २१-१२-१४

मेल से मि० गावा के साथ नागपुर। मिसारिलेका व वराव कलकत्ते से बबई गये। नागपुर से वर्धा तक वार्ता। नागपुर बाजार में कपास खरीद की। जीन प्रेस की व्यवस्था देखी। शिवनारायणजी राठी के यहां भोजन। मेल से वर्धा।

वर्धा २३-१२-१४

वल्लभनारायणजी के साथ घूमने गये। श्रीनिवास, मि० दुबे तहसीलदार के घर के सब लोग भोजन करने आये। बैंक के मुकदमे का कार्य ६ बजे तक किया। वल्लभनारायणजी से परस्पर बातचीत।

नागपुर-वर्धा २४-१२-१४

बबई से मि० टसयाउची नागपुर मेल से आये। उनसे व्यापार-सबधी बातचीत। मि० वेलमिन रुस्तम के साथ वार्ता। नागपुर जीन प्रेस-व्यवस्था। मागरमलजी से वार्ता। रायली कपनी से जीन प्रेस में जाकर रुई का सौदा किया। रायली के साहब से बहुत-सी वार्ता। मेल से वर्धा।

२५-१२-१४

मि० टसयाउची असिस्टेंट मैनेजर भुमान से व्यवहार-सबधी बातचीत। जापान की नई कपनी आई। उसकी मुकदमीदलाली की वल्लभनारायणजी के साथ बात की। जवा-सबधी बातचीत की। डाक गाड़ी से भिसानु बबई गये। टसयाउची अमरावती व जाजूजी आर्वी तथा अमृतलालजी उपदेश अमरद गये। [illegible]

[illegible]

१७५० रुपये वार्षिक, पांच साल तक, देने को कहा। बाद मे इस रकम का अदाजन ब्याज देखकर आधे [illegible] रकम स्थायी फड मे देना कबूल किया। मोतीलालजी व वेलचमसाहब आये। गाड़ी व बोझा का लाग कबूल किया। प्रेमसुखदासजी का मन कम था। पोद्दार के यहा होकर दोपहर वर्धा आया।

६-१-१५

वल्लभनारायणजी के साथ जैन बोर्डिंग का निरीक्षण किया। मकान वगैरा देखा। बस्ती में घूमकर, कान में दवा डलवाकर घर आये। हरदास सा० घर आये थे, उनसे मिले। सपलाय बिल-सम्बन्धी वार्ता। बाल बनवाये। मामूली व्यवहार-कार्य किया। घूमते हुए जीन प्रेस, एम्प्रेस जीन, वर्धा जीन प्रेस आदि देखने गये। रात में रामा दलाल आया, गहनों पर १५०० रुपयों के विषय में बातचीत की। शिवनारायण को सावनेर आदि के विषय में समझाया। चिमनीराम नागपुर से आया।

पुलगांव-वर्धा ७-१-१५

वल्लभनारायणजी के साथ सुबह ही पैदल घूमने गये। कान में दवा डलवाई।

१०॥ गाड़ी से पुलगाव गये। वल्लभनारायणजी, श्रीनिवासजी सराबगी (छापरेवाला) व कमला साथ थी। पुलगाव मिल देखी। दुकान जाकर व्यवहार-कार्य देखा।

श्रीधर पोद्दार आदि के साथ गाड़ी से वर्धा रवाना हुए। दौलतरामजी भरतिया से नागपुर जॉइन्ट-सम्बन्धी वार्ता। वर्धा में व्यवहार-कार्य देखा। जीन में नरम माल की व्यवस्था ठीक नहीं मालूम दी।

८-१-१५

वल्लभनारायणजी दानी की बम्बई जाने की तैयारी। उनसे बातचीत करके बगीचे आदि गये। आज वल्लभनारायणजी के साथ जाजूजी, श्रीनिवासजी सराबगी आदि को जीमने बुलाया। भोजन के समय बातचीत। स्टेशन पर मेल में रामेश्वरजी बिड़ला कलकत्ता से बम्बई जा रहे थे। ओंकारमल (मूलजी जेठावाला) भी जा रहा था। धामणगाव तक दानीजी व बिड़लाजी से वार्ता। वापस आकर श्रीनिवासजी से मिले। फलाहार व आराम किया।

९-१-१५

बगीचे में लक्ष्मणराव राजा की मांजी आई, उनसे बातचीत। अस्पताल जाकर कान में दवा डलवाई। दादाजी आदि हिंगनघाट से आये। व्यवहार कार्य।